Aug-Sept 2023

द साइलेंट स्ट्रोक

HINDI ENGLISH

The Silent STROKE

- अंतरिक्ष में भारत का बढ़ता वर्चस्व
- बिंदेश्वर पाठक
- 69वाँ राष्ट्रीय पुरस्कार 2023

Head of the Editorial
NANDINI SHARMA
(Supreme Court & High Court)

Chief Editor :
RAKESH SHARMA "NISHEETH"
Editor : **NARENDRA TYAGI**

NEW BOOK RELEASE

Publisher
NARENDRA TYAGI

THE BOOK

NEWS ABOUT BOOKS

धारा 370 संसद में हंगामा

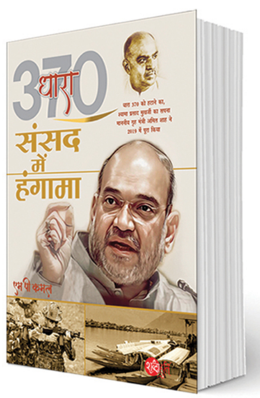

Under
POLITICAL ANALYSIS SERIES

Published by
शब्दाहुति | PRAKASHAN
DAYAL BAGH I FARIDABAD

E-mail : shabdahutiprakashan@gmail.com
Contact us : 9990753336

पुस्तक का नाम : **धारा 370: संसद में हंगामा**
लेखक : **एम पी कमल**
प्रकाशन : **शब्दाहुति प्रकाशन**
मूल्य : **950/- रुपए**

एम पी कमल

पुस्तक के बारे में

धारा 370: संसद में हंगामा निबंध शैली में लिखी एक ऐसी किताब है जो विषय-सामग्री, भाषा और शिल्प तीनों कसौटियों पर खरी उतरती है। लेखक ने इस पुस्तक में धारा 370 की पृष्ठभूमि और उसको हटाए जाने की अनिवार्यता को रेखांकित किया है।

कश्मीर और कश्मीरियों की खुशहाली और विकास-प्रक्रिया पर तब के सत्ताधीशों ने धारा 370 लागू करने का फैसला लेकर किस तरह ढक्कन लगाने का अपराध किया और समूचे देश को आतंकवाद और युद्धों की विभीषिका में धकेला, इस सबका लेखा-जोखा इस पुस्तक में उपलब्ध है।

इस प्रसंग को पढ़ते समय उस दौर का इतिहास जीवंत हो उठता है और झकझोरते हुए हमें यह चेतावनी देता है कि देश के जन-नायकों द्वारा देश की संप्रभुता व स्वाभिमान के साथ किया गया समझौता तत्कालीन और आगामी पीढ़ियों पर कितना भारी पड़ सकता है।

धारा 370 को हटाने के लिए मोदी सरकार ने अनेक खतरे उठाते हुए कब-कब, कहाँ-कहाँ, किस तरह तैयारियाँ की और क्या-क्या कदम उठाए, इन सबका विशद-वर्णन इस पुस्तक में समाहित है।

5 अगस्त 2019 को गृहमंत्री अमित शाह ने जिस दम-खम और जोश के साथ धारा 370 को हटाने के राष्ट्रपति के आदेश को राज्य सभा के पटल पर रखा और फिर दोनों सदनों में राजनैतिक विरोधियों को जिस तरह मुँह तोड़ जवाब दिया उस पूरी नोंक-झोंक का समग्र व साकार चित्रण करने में लेखक ने जिस प्रतिभा और कौशल का परिचय दिया है, वह अद्‌भुत है।

ऐतिहासिक संदर्भ और राजनैतिक उठा-पटक पर भरपूर रोचकता और प्रभावी ढ़ंग से लिखी गई यह पुस्तक हिन्दी साहित्य की अनमोल कृति है।

सम्पादकीय

राकेश शर्मा 'निशीथ'
प्रधान संपादक

मेरी बात...

मदर टेरेसा की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में और लोगों को दान के महत्व को समझाने के लिए हर साल 5 सितंबर को अंतरराष्ट्रीय चैरिटी दिवस मनाया जाता है। भारतीय संस्कृति में दान का महत्व युगों से चला आ रहा है। सनातन धर्म में दान का खास महत्व है। शास्त्रों में दान को मानव जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। मान्यता है कि जो व्यक्ति दान कर्म करता है, उसे वर्तमान के साथ अगले जन्म में पुण्य फल की प्राप्ति होती है। मनुष्य अपने सामर्थ्य के अनुसार दान करता है।

दान की महिमा हर धर्म में मानी गई है। लेकिन दान किसे दिया जाए और किस विधि से दिया जाए इस पर बहुत कम शास्त्रों में वर्णित है। शास्त्रों में दान के भी कुछ नियम बताए गए हैं। अगर इनका पालन किया जाए तो लाभ का फल दो गुना हो जाता है। शास्त्रों के अनुसार दान उन्हीं को दें जो उसके योग्य हो। जरूरतमंद या गरीब की मदद करना और उनको दान देना कल्याणकारी होता है। दान कभी द्वेष की भावना से न करें। दुखी मन से किए दान का लाभ नहीं मिलता। खुशी से दान करने पर समृद्धि में वृद्धि होती है।

शास्त्रों के अनुसार व्यक्ति जो धन अर्जित करता है उसका दसवां हिस्सा दान के लिए निकालना चाहिए। इससे घर में बरकत बनी रहती है। ध्यान रखें मेहनत से कमाए धन को ही दान कर्म में लगाएं। गलत तरीके से कमाई के पैसों को दान में लगाने से उसका फल नहीं मिलता। सोना, चांदी, गाय, जमीन, तिल, घी, वस्त्र, नमक आदि महादान की श्रेणी में आते हैं। स्वार्थ की भावना से दान कभी न करें। ऐसा करने से पुण्य प्राप्त नहीं होगा। साथ ही किसी की दी हुई अमानत का दान न करें। गुप्त दान हमेशा अच्छा माना जाता है।

स्वयं जाकर दिया हुआ दान उत्तम एवं घर बुलाकर दिया हुआ दान मध्यम फलदायी होता है। गौ, ब्राह्मणों तथा रोगी को जब कुछ दिया जाता है, उस समय जो न देने की सलाह देता है, वह दुख भोगता है। दीन, निर्धन, अनाथ, गूंगे, विकलांग तथा रोगी मनुष्य की सेवा के लिए जो धन दिया जाता है, उसका महान पुण्य प्राप्त होता है। अपनी इच्छा के अनुसार दान करने से बेहतर है कि आप दूसरों की जरूरत के अनुसार दान दें। छोटे-से-छोटे दान का भी बहुत महत्व होता है। आपका दान भले ही एक छोटी-सी बूंद के समान हो, लेकिन आपको यह भी समझना होगा कि बूंद-बूंद से ही सागर बनता है।

दान का मतलब दूसरों की मदद करना, गरीबों को दान देना है और हाँ... इसकी शुरुआत घर से ही होती है। दान की अवधारणा अब धुंधली हो गई है। बहुत कम लोग आगे आकर दूसरों की मदद करते हैं। आजकल हम देखते हैं कि दान की अवधारणा ही बदल गई है। अक्सर चौराहों पर, मंदिरों आदि में दान के नाम पर रंगदारी या उगाही की जा रही है। चौराहों पर माता की चौकी के नाम पर अथवा अन्य धार्मिक उत्सवों के नाम पर ज्योत जलाकर दानपात्र रख दिया जाता है या फिर मंदिरों में मुख्य द्वार अथवा पंडे-पुजारी दान प्राप्त करने की पुरजोर कोशिश में लिप्त रहते हैं।

कई बार कुछ व्यक्ति घरों में आकर गुरुद्वारे के नाम पर दान देने की गुहार लगाते हुए नजर आ जाते हैं। मंदिर बनवाने के नाम पर, मूर्ति स्थापित करने के नाम पर दान पुस्तिका लेकर कम-से-कम एक-एक हजार रुपये की पर्ची कटवाने के लिए दरवाजे पर दस्तक देते हुए व्यक्तियों से अक्सर पाला पड़ता रहता है। कई बार तो नेता, गुण्डे या समाज के सशक्त व्यक्ति आम आदमी को दान करने के लिए दबाव बनाकर उनसे दान के नाम पर धनराशि हड़पते नजर आ जाते हैं। यह दान के नाम पर रंगदारी नहीं है तो क्या है? इस पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है।

■■

Presented by
THE CREATIVEART

द साइलेंट स्ट्रोक
The Silent STROKE
CURRENT AFFAIRS | AUGUST-SEPTEMBER 2023

Head of the Editorial
NANDINI SHARMA
Advocate, Supreme Court & High Court

Chief editor
RAKESH SHARMA 'NISHEETH'

Editor (Hindi)
NARENDRA TYAGI

Edited by (English)
TILAK RAJ MANIK

Designing Team
SHIVANGI TYAGI

Edition
August - September 2023

© The Creativeart

PRICE
₹ 250-00 (Colour), ₹ 125-00 (Black & White)

Published by:
THE CREATIVEART

Cover and Inner photo courtesy:
https://en.wikipedia.org/wiki/ (G20)

Press :
Aryan Digital Press, Sonia Vihar, Delhi-110090

The CREATIVEART
Big ideas, Great results

A-3, Ground Floor, Dayal Bagh, Surajkund, Sector 39,
Faridabad, Haryana, Contact: 9990753336,
Mail: creativeart012@gmail.com

CONTENT – विषय सूची

सम्पादकीय ।
लेख: । जी 20 का बढ़ता दायरा–3 । अंतरिक्ष में भारत का बढ़ता वर्चस्व–9 । सूर्य की ओर बढ़ते कदम–13
स्मृति शेषः । **बिंदेश्वर पाठक:** सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक–16
। भारतीय संस्कृति के विरासत का प्रतीक: राष्ट्रीय संस्कृत दिवस–17
। मनोरंजन/फिल्म जगत 69वाँ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2023–21
कविता : मन की बातें–25
Advocate Nandini's: Mind Matter: Constitutional Injustice–26
लघुकथा : । अंत से प्रारंभ–29 । यौन हिंसा–31 । अधिकार–32
Health : । Managing Stress–34 । मदर टेरेसा–36
लघु कथा : । कर्तव्य–39 । विश्व विरासत स्थल/धरोहर–40
। Voices towards the Threats to Democracy–44
। खुदकुशी का कारण - क्षणिक आवेश–50

नीलमणि शर्मा

राकेश शर्मा "निशीथ"

Nandini Sharma

डॉ. सीमा भट्टाचार्य

सलिल सरोज

वंदना पुणतांबेकर

Aakanksha Sharma

विजयलक्ष्मी शुक्ला

करुणा प्रजापति

Dr. Jyotsna Sharma

LIST OF THIS EDITION AUTHOR'S

द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार, संबंधित लेखक के अपने हैं। द साइलेंट स्ट्रोक में प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। रचनाओं की मौलिकता एवं कॉपीराइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।

जी-20 का बढ़ता दायरा

Image courtesy : en.wikipedia.org

नीलमणि शर्मा

भारत में जी-20 देशों का भव्य शिखर सम्मेलन (09 से 10 सितम्बर, 2023) एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक परिघटना है। जी-20 अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रमुख अंतरसरकारी मंच है। यह मंच सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक वास्तुकला और शासन को आकार देने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसे 20 वित्त मंत्रियों और सेंट्रल बैंक के गवर्नेंस के एक ग्रुप के रूप में भी जाना जाता है। जी-20 की स्थापना 1999 में अमेरिका की राजधानी वॉशिंगटन डीसी में की गयी थी। जी-20, ग्रुप ऑफ ट्वेंटी के लिए संक्षिप्त रूप, 1997 में एशियाई वित्तीय संकट की प्रतिक्रिया के रूप में 1997 में स्थापित किया गया था। भारत के पास 1 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक जी-20 की अध्यक्षता है। भारत की जी-20 अध्यक्षता का विषय है 'वसुधैव कुटुंबकम' या 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'। नई दिल्ली में जी-20 की बैठक को एक ही स्थल पर बंद कमरे में करने की प्रथा के विपरीत देश के छोटे-बड़े 60 शहरों के 1,00,000 से अधिक आधिकारिक आगंतुक शामिल रहें।

जी-20 सदस्य

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (जी-20) में 19 देश अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं। इसमें स्पेन को स्थायी अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। जी-20 सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85 प्रतिशत, वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत से अधिक और विश्व जनसंख्या का लगभग दो-तिहाई प्रतिनिधित्व करते हैं। जी-20 सम्मेलनों में अन्य देशों को भी गेस्ट कंट्री के रूप में सम्मिलित किया जाता है। हर साल स्पेन को छोड़कर,

ग्रुप ऑफ़ ट्वेंटी के अतिथि में आसियान देश के अध्यक्ष, दो अफरीकी देश और एक देश या इससे अधिक देशों को जी-20 के अध्यक्ष द्वारा आमंत्रित किया जाता है। भारत ने इसके अध्यक्ष होने के प्रदत्त अधिकारों का इस्तेमाल करते हुए बांग्लादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और यूएई को न्योता दिया था।

जी-20 के कार्य

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (जी-20) के पास कोई स्थायी सचिवालय नहीं है। प्रेसीडेंसी को ट्रोइका का समर्थन प्राप्त है- पिछली, वर्तमान और आने वाली प्रेसीडेंसी। भारत की अध्यक्षता के दौरान, तिकड़ी में क्रमशः इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील शामिल हैं। जी-20 प्रेसीडेंसी एक वर्ष के लिए जी-20 एजेंडा का संचालन करती है और शिखर सम्मेलन की मेजबानी करती है। जी-20 में दो समानांतर ट्रैक शामिल हैं फाइनेंशियल ट्रैक और शेरपा ट्रैक।

वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नर वित्त ट्रैक का नेतृत्व करते हैं। वित्त ट्रैक का नेतृत्व मुख्य रूप से वित्त मंत्रालय द्वारा किया जाता है। ये कार्य समूह प्रत्येक राष्ट्रपति पद के पूरे कार्यकाल के दौरान नियमित रूप से मिलते हैं। शेरपा, शेरपा ट्रैक का नेतृत्व करते हैं। शेरपा की ओर से जी-20 प्रक्रिया का समन्वय सदस्य देशों के शेरपाओं द्वारा किया जाता है, जो नेताओं के निजी दूत होते हैं। शेरपा वर्ष के दौरान वार्ता की देख-रेख करते हैं, शिखर सम्मेलन के लिए एजेंडा पर चर्चा करते हैं और जी-20 के महत्वपूर्ण कार्यों का समन्वय करते हैं। दो ट्रैकों के भीतर, विषयगत रूप से उन्मुख कार्य समूह हैं, जिनमें सदस्यों के संबंधित मंत्रालयों के साथ-साथ आमंत्रित/अतिथि देशों और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। इसके अलावा, ऐसे इंगेजमेंट समूह भी हैं जो जी-20 देशों के नागरिक समाजों, सांसदों, थिंक टैंकों, महिलाओं, युवाओं, श्रमिकों, व्यवसायों और शोधकर्ताओं को एक साथ लाते हैं।

जी-20 का बढ़ता महत्व

समय के साथ, जी-20 ने विभिन्न वैश्विक चिंताओं को शामिल करने के लिए अपना फोकस बढ़ाया, जबकि इसका

प्रारंभिक ध्यान व्यापक आर्थिक मुद्दों पर था, बाद में इसमें व्यापार, सतत् विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और भ्रष्टाचार विरोधी जैसे क्षेत्र शामिल हो गए। वर्ष 2007 की वैश्विक आर्थिक मंदी के दौरान जी-20 को अधिक महत्व प्राप्त हुआ। इसकी प्रतिक्रिया के रूप में, यह अपनी चर्चाओं में सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्षों को शामिल करने के लिए विकसित हुआ। वर्तमान में जी-20 में 8 वर्कस्ट्रीम को शामिल किया गया है। इस स्ट्रीम में इंफ्रास्ट्रक्चर फाइनेंसिंग, ग्लोबल मैक्रोइकोनॉमिक पॉलिसी, इंटरनेशनल फाइनेंशियल आर्किटेक्चर, फाइनेंशियल इंक्लूजन, सस्टेनेबल फाइनेंस, हेल्थ फाइनेंस, इंटरनेशनल टैक्सेशन, फाइनेंशियल सेक्टर रिफॉर्म्स, फाइनेंस ट्रैक, शेरपा ट्रैक को शामिल किया गया है।

भारत की जी-20 में भूमिका

भारत जी-20 के भीतर वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसका उद्देश्य स्थायी प्रभाव डालना और विकासशील देशों की चिंताओं को दूर करना है। दक्षिण एशिया में अग्रणी देश के रूप में, भारत अन्य दक्षिण एशियाई देशों के हितों को आगे बढ़ाने की भी जिम्मेदारी निभाता है, जो जी-20 का हिस्सा नहीं हैं। दुनिया भर में भारत की बढ़ती प्रमुखता देश पर अपने घरेलू वातावरण के भीतर अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी स्थिति को मजबूत करने की एक बड़ी जिम्मेदारी डालती है।

भारत ने 1 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक जी-20 की अध्यक्षता संभाली। प्रधानमंत्री मोदी ने नवंबर 2022 में जी-20 शिखर सम्मेलन में अध्यक्षता प्राप्त की थी। भारत की जी-20 प्रेसीडेंसी थीम 'वसुधैव कुटुंबकम' या 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' है। यह विषय वैश्विक चुनौतियों के बीच देश के पृथ्वी समर्थक दृष्टिकोण और विकास के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। भारत ने श्रीनगर से तिरुवनंतपुरम और कच्छ के रण से कोहिमा तक पूरे देश में कार्यक्रम आयोजित किए। सभी राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों ने भाग लिया, 56 स्थानों पर 200 से अधिक बैठकें हुई। जी-20 के लोगों में भारतीय ध्वज के रंग शामिल हैं, जो चुनौतियों के बीच भारत के पृथ्वी-अनुकूल दृष्टिकोण और प्रगति का प्रतीक है।

जी-20 समिट का आयोजन साल में एक बार होता है, हालांकि 2008 से शुरुआत के बाद 2009 और 2010 साल में जी-20 समिट का आयोजन दो-दो बार किया गया था। जी-20 की समिट में सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्ष के साथ केंद्रीय बैंक के प्रमुख शामिल होते हैं। समिट में शामिल होने के लिए कुछ अन्य देशों को भी बुलाया जाता है। सभी देशों के राष्ट्राध्यक्ष बैठकर मुख्य तौर पर आर्थिक मामलों पर चर्चा करते हैं। पहला शिखर सम्मलेन को 14-15 नवंबर 2008 में आयोजित किया गया था। इस सम्मलेन को एशिया में आये वित्तीय संकट के कारण अमेरिका के राष्ट्रपति द्वारा शुरू किया गया था। जी-20 की 17 बैठकें हो चुकी हैं, भारत ने 18वीं बैठक की मेजबानी की। अब तक हुई जी-20 की बैठकों का ब्यौरा इस प्रकार है—

देश	शहर	तिथि
संयुक्त राज्य अमेरिका	वॉशिंगटन डी सी	4-15 नवंबर 2008
यूनाइटेड किंगडम	लंदन	2 अप्रैल 2009
संयुक्त राज्य अमेरिका	पिट्सबर्ग	24-25 सितंबर 2009
कनाडा	टोरंटो	26-27 जून 2010
दक्षिण कोरिया	सियोल	11-12 नवंबर 2010
फ्रांस	कान	3-4 नवंबर 2011
मैक्सिको	सैन जोस डेल काबो, लॉस काबोस	18-19 जून 2012
रूस	सट पीट्र्सबर्ग	5-6 सितंबर 2013
ऑस्ट्रेलिया	ब्रिस्बेन	15-16 नवंबर 2014
तुर्की	सेरिक, अंताल्या	15-16 नवंबर 2015
चीन	हांगझोऊ	4-5 सितंबर 2016
जर्मनी	हैम्बर्ग	7-8 जुलाई 2017
अर्जेंटीना	ब्यूनस आयर्स	30 नवंबर - 1 दिसंबर 2018
जापान	ओसाका	28-29 जून 2019
सऊदी अरब	रियाद	21-22 नवंबर 2020
इटली	बारी	2021
भारत	नई दिल्ली	9-10 सितम्बर 2023

नई दिल्ली, जी-20 सम्मेलन में बनी आम सहमति

जी-20 के घोषणापत्र को तैयार करने के लिए विभिन्न देशों के बीच 200 घंटे तक चर्चा हुई। यह 37 पेज का दस्तावेज है, इसमें 83 पैरा हैं। इसमें 9 बार आतंकवाद का जिक्र किया गया है। इसमें 8 पैरा जियो-पॉलिटिक्स और 7 यूक्रेन युद्ध से जुड़े हैं। यह बहुत बड़ी उपलब्धि है कि भारत इतने तनाव और ध्रुवीकरण के बाद भी सबको साथ ला पाया। सहमति पत्र के जरिये भारत ने ऐसे कई कदमों की घोषणा की है जो भारत ही नहीं दुनिया के हित से जुड़ी है। इसमें धार्मिक प्रतीकों, पवित्र ग्रंथों और लोगों के खिलाफ धार्मिक घृणा के मामलों की निंदा और इसे समाप्त करने की बात कही गई है। जी-20 देशों के नेताओं की बैठक में कई महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मामलों पर सहमति बनी। इनमें दुनिया के सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने, जलवायु परिवर्तन से निपटने और शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमता के इस्तेमाल से लेकर आतंकवाद का कड़ाई से मुकाबला करने के मुद्दे शामिल रहें। जी-20 शिखर सम्मेलन के घोषणापत्र में शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमता (एआई) के इस्तेमाल पर सहमति बनी। मुक्त, न्यायसंगत और सुरक्षित वैज्ञानिक सहयोग को बढ़ावा देने पर भी सहमति बनी। उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों, विद्वानों, शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने पर भी सहमति बनी है।

इसमें किसी भी महामारी से निपटने की तैयारियों के लिए हेल्थ सर्विस को मजबूत करने की दिशा में हर संभव कदम उठाने की बात कही गई है। यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज हासिल करने और हेल्थ इमरजेंसी का मुकाबला करने में भारतीय विजन को स्वीकारा गया। जलवायु कोष का आकार तय करने पर भी सहमति बनी। इसकी राशि सालाना 5.8 खरब डॉलर निर्धारित की गई। विकासशील देशों को जलवायु खतरों से निपटने के लिए सालाना 5.8 खरब डॉलर राशि की जरूरत होगी। इसमें से अकेले चार खरब डॉलर उन्हें नई ऊर्जा तकनीकों पर खर्च करने होंगे तभी वे 2050 तक नेट जीरो के लक्ष्यों को हासिल कर सकते हैं। शिखर सम्मेलन के बाद भारत की दुनिया में मोल-भाव की क्षमता बढ़ेगी। भारत ऐसे चंद देशों में से एक है, जो जी-20 का सदस्य होने के साथ ब्रिक्स (BRICS) का भी सदस्य है। क्वॉड का हिस्सा भी है। इसके अलावा, भारत कई अन्य ग्लोबल पहल का हिस्सा भी है। इन सभी में भारत की सक्रिय हिस्सेदारी होने से अब भारत की तोल-मोल (बारगेन) क्षमता बढ़ सकती है।

किसी देश का नाम लिए बिना कहा गया है कि आतंकवाद अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरों में से है। आतंकियों को पनाह देने वालों पर भी चोट करने पर सहमति बनाते हुए कहा गया है कि आतंकवादी समूहों को वित्तीय मदद, आतंकियों की भर्ती और भौतिक या राजनीतिक समर्थन से वंचित करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग के प्रयासों को मजबूत किया जाएगा। जी-20 ने अपने घोषणापत्र में महिला सशक्तीकरण और लैंगिक समानता पर भी ध्यान दिया गया है। महिलाओं की सुरक्षा और कल्याण पर पूरी तरह ध्यान देने के लिए महिलाओं के सशक्तीकरण पर एक नया कार्यसमूह बनाया गया है। इस कार्य को ब्राजील आगे बढ़ाएगा।

भ्रष्टाचार को बिलकुल बर्दाश्त नहीं करने की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा गया कि भ्रष्टाचार के मामलों में संपत्ति वसूली तंत्र को मजबूत किया जाना चाहिए। साथ ही भ्रष्टाचार को रोकने में अहम भूमिका निभाने वाले सार्वजनिक निकायों और अधिकारियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। क्रिप्टो एसेट्स के मुद्दे पर वित्तीय स्थिरता बोर्ड यानि एफएसबी की तरफ से इसके विनिमय के लिए सौंपी गई सिफारिशों को समर्थन करते हुए जी-20 देशों ने इस दिशा में आगे बढ़ने की बात कही है। जी-20 देशों के बीच इस बात को लेकर भी एक राय रही कि आर्थिक और सामाजिक विकास को मजबूती देने के लिए डिजिटल पब्लिक इंफ्रॉस्ट्रक्चर के इस्तेमाल को बढ़ाने की आवश्यकता है। खासतौर पर उन देशों में जहाँ इनकी कमी है, वो बाकी देशों से ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर सहित दूसरी मदद लेकर इसे मजबूती दे सकते हैं।

अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने में निजी क्षेत्र की भागीदारी की सराहना की गई है। साथ ही बहुपक्षीय विकास बैंक का दायरा बढ़ाते हुए इनके माध्यम से कम विकसित देशों को आर्थिक मदद करने पर फोकस किया गया है। कारोबारी सुगमता को बढ़ावा देने के लिए इसमें आने वाली लागत को साझा प्रयासों से कम करने पर भी सहमति बनी है। विश्व बैंक की तरफ से निम्न और मध्यम आय वर्ग के देशों को आसान सहायता मुहैया कराने की बात कही गई है।

भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप गलियारे की घोषणा की गई। बेशक, इस परियोजना को साकार होने में दशकों लगेंगे, लेकिन शायद ही कभी उत्तरी अमेरिका, यूरोप, पश्चिम एशिया और दक्षिण एशिया, चारों क्षेत्रों ने आम भलाई के लिए इस पैमाने पर आपस में सहयोग किया हो। यह गलियारा न केवल चीन के बुनियादी ढांचे का विकल्प पेश कर सकता है, बल्कि भारत के लिए भी जबरदस्त कारोबारी अवसर खोल सकता है। जी-20 पर हावी होने की चीन की कोशिशों को नाकाम करने और उसे अलग-थलग करने में भारत ने कामयाबी पाई। इसमें सभी देशों से किसी भी देश की संप्रभुमता और क्षेत्रीय अखंडता का हनन नहीं करने और अपनी जमीनी व समुद्री सीमाओं के विस्तार की कोशिशों से बाज आने को कहा गया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को संयुक्त राष्ट्र सहित तमाम वैश्विक निकायों में सुधार पर नये सिरे से जोर दिया। जी-20 शिखर सम्मेलन के 'वन फ्यूचर' सत्र में मोदी ने कहा—''दुनिया के अच्छे भविष्य के लिए वैश्विक निकायों को आज की वास्तविकताओं को ध्यान में रखना जरूरी होगा।'' उन्होंने कहा कि जब संयुक्त राष्ट्र की स्थापना 51 संस्थापक सदस्यों के साथ हुई थी तब दुनिया बिलकुल अलग थी क्योंकि ये संख्या लगभग 200 हो गई है। इसके बावजूद, यूएनएससी में स्थायी सदस्यों की संख्या वही बनी हुई है। तब से दुनिया काफी बदल गई है चाहे परिवहन हो, संचार हो, स्वास्थ्य हो, शिक्षा हो, हर क्षेत्र में परिवर्तन हुआ है। सम्मेलन में हिस्सा लेने आए अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब इरदुगान ने द्विपक्षीय वार्ता के दौरान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन किया।

अंत में

समापन सत्र में प्रधानमंत्री ने संस्कृत के एक श्लोक का जिक्र करते हुए कहा कि—"वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर का रोडमैप सुखद हो। स्वस्ति अस्तु विश्वस्य यानि संपूर्ण विश्व में

आशा और शांति का संचार हो।" भारत ने सूझ-बूझ से जी-20 शिखर बैठक के जरिए विकासशील और गरीब देशों के नेता के तौर पर भारत की छवि मजबूत हुई। बाली में हुई पिछली शिखर बैठक में साझा बयान जारी होने के बाद रूस ने उसके कुछ हिस्सों पर असहमति दर्ज कराई थी लेकिन दिल्ली की बैठक में ऐसा कुछ देखने को नहीं मिला।

भारत अपनी अध्यक्षता के दौरान अफ्रीका यूनियन को जी-20 में लाने में सफल रहा है। अफ्रीकन यूनियन के शामिल होने से जी-20 का प्रतिनिधित्व व्यापक होगा और इसकी विश्वसनीयता बढ़ेगी। जी-20 देशों में अभी दुनिया की 65 प्रतिशत आबादी रहती है। 55 देशों के इस संघ से जुड़ने से अब जी-20 की शक्ति बढ़ेगी। अफ्रीका के शामिल होने के बाद यह मंच 80 प्रतिशत नागरिकों की आवाज बन जाएगा। अफ्रीकी संघ में शामिल होने के बाद जी-20 अब जी-21 हो गया है। दिल्ली बैठक में जी-20 अंतरराष्ट्रीय मंच पहले से अधिक प्रासंगिक और ज्यादा मजबूत होकर उभरा, वहीं विश्व रंगमंच में भारत की भूमिका भी पहले से अधिक महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुई। भारत की जी-20 अध्यक्षता को अधिक न्यायसंगत और टिकाऊ वैश्विक भविष्य की कल्पना करने और उसे आकार देने के लिए याद किया जाएगा।

ई-मेल : neelnisheeth@gmail-com
मोबाईल : 9311125737

■■

कविता

भीड़

—कुलविंदर कुमार, बहादुरगढ़

शहर के चौराहे पर भीड़ जमा हुई थी
पता नहीं चला, कैसे और क्यों हुई थी।

पता करने से पता चला
एक दरिंदे ने मासूम बच्ची की जान ली थी।

नोच-नोचकर खाया दरिंदे ने मासूम को
पर दरिंदे को सजा नहीं मिली थी।

पैसे के दम पर खरीद लिया था, उसने सभी को
इसलिए उसकी गिरफ्तारी भी नहीं हुई थी।

गुस्सा आया लोगों को सरकार पर
क्योंकि उस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई थी।

इंसाफ मांग रहे थे लोग बच्ची के लिए
इसलिए शहर के चौराहे पर भीड़ जमा हुई थी।

■■

"सब कुछ खोने से ज्यादा बुरा उस उम्मीद को खो देना है, जिसके भरोसे हम सब कुछ वापस पा सकते हैं।"

***

"उसी प्रकार एक ही मनुष्य विश्व में बदलाव लाने के लिए पर्याप्त है। ये मनुष्य आप हो सकते हैं।"

***

"पहले हर अच्छी बात का मजाक बनता है। फिर विरोध होता है। अंत में उसे स्वीकार कर लिया जाता है।"

—स्वामी विवेकानंद

अंतरिक्ष में भारत का बढ़ता वर्चस्व-1

राकेश शर्मा "निशीथ"

"समूचा अंतरिक्ष हमारे लिए बांहें खोले हुए है लेकिन केवल उन्हीं के लिए, जो सपना देखकर उसे पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।"

—एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति

सभ्यता की शुरुआत से ही मानव अंतरिक्ष की रोमांचक कल्पनाएँ करता रहा है। इन रोमांचक कल्पनाओं में अंतरिक्ष कभी आध्यात्म का विषय बना तो, कभी कविताओं और दंत-कथाओं का। धीरे-धीरे जब सभ्यता और समझ विकसित हुई तो मानव ने अंतरिक्ष के रहस्यों को समझने के लिए प्रेक्षण यंत्र बनाएँ, जिनमें दूरबीन प्रमुख थी। इसके बाद प्रारम्भ हुआ विज्ञान के माध्यम से अंतरिक्ष को समझने का प्रयास। इस क्रम में आर्यभट्ट से लेकर गैलीलियो, कॉपरनिकस, भास्कर एवं न्यूटन तक के प्रयास होते रहे हैं। न्यूटन के बाद

आधुनिक अंतरिक्ष विज्ञान का विकास हुआ, जो आज इतना परिपक्व हो गया है कि हम मानव को अंतरिक्ष में भेजने के साथ अंतरिक्ष पर्यटन एवं अंतरिक्ष कालोनियाँ बसाने की भी कल्पना करने लगे हैं।

पृथ्वी से सौ किलोमीटर ऊपर अंतरिक्ष की सीमा आरंभ होती है। विभिन्न ग्रह कैसे हैं? उनका धरातल कैसा है? क्या वहाँ कोई जीव है या नहीं? इन रहस्यों की खोज के प्रयास पिछली शताब्दी के मध्य से प्रारंभ हो गए थे। 4 अक्तूबर, 1957 को सोवियत संघ ने स्पूतनिक नामक कृत्रिम उपग्रह अंतरिक्ष में भेजा था। यह उपग्रह 57 मिनट में पृथ्वी का एक चक्कर लगाता था। इसके बाद से तो अमरीका और रूस के बीच अंतरिक्ष यात्रा के संबंध में होड़-सी लग गई थी। नवम्बर 1957 में लाइका नामक एक कुतिया को अंतरिक्ष में भेजा गया। मनुष्य का अंतरिक्ष में प्रवेश 12 अप्रैल, 1961 को हुआ, जब पहली बार यूरी गागरिन अंतरिक्ष में गए। पहली बार अप्रैल 1969 में मानव ने अपने कदम चांद की धरती पर रखे।

जापान का चंद्रमिशन स्मार्ट लैंडर फॉर इन्वेस्टिगेटिंग मून (स्लिम) का प्रक्षेपण कई बार टलने के बाद आखिरकार 7 सितम्बर, 2023 को इसे अंतरिक्ष के लिए रवाना किया गया है। जापानी अंतरिक्ष एजेंसी के अनुसार मिशन में एक्स-रे, दूरबीन और एक लैंडर भेजा गया है। लैंडर चांद की सतह पर उतरकर परीक्षण करेगा। वहीं एक्स-रे और दूरबीन के जरिए ब्रह्मांड की उत्पत्ति का पता लगाया जाएगा। इसके माध्यम से नासा के सहयोग से जेएएक्सए विभिन्न तरंग दैर्ध्य पर प्रकाश की शक्ति, अंतरिक्ष में चीजों के तापमान और उनके आकार व चमक का पता लगाएगा। इसे चंद्र सतह तक पहुंचने में लगभग चार से छह महीने लगेंगे। स्लिम बहुत छोटा अंतरिक्ष यान है। इसका वजन लगभग 200 किलोग्राम है।

भारत में शुरुआत

भारत में आधुनिक अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई थे। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय हित में अंतरिक्ष तकनीक एवं उसके अनुप्रयोगों का विकास करना है। अंतरिक्ष के क्षेत्र में महाशक्ति बनने से पहले भारत के कार्यक्रम की शुरुआत एक छोटे-से मछुआरों के गांव में हुई थी। जहाँ साउडिंग रॉकेट को प्रक्षेपण स्थल पर ले जाने के लिए साइकिल और उपग्रह के लिए बैलगाड़ी का इस्तेमाल करना पड़ा था।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष 1962 में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (इन्कोस्फार) से हुई। इसी वर्ष, तिरुवनन्तपुरम के निकट थुम्बा भू-मध्यरेखीय रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र (अर्ल्स) में काम शुरू हुआ। नवम्बर, 1969 में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम बनाया गया तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का गठन हुआ। यह भारत सरकार की अंतरिक्ष एजेंसी है और इसका मुख्यालय बेंगलुरु में है। अंतरिक्ष अनुसंधान के लिये देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और उनके करीबी सहयोगी और वैज्ञानिक विक्रम साराभाई के प्रयासों से इसे स्थापित किया गया। इसरो ने कई कार्यक्रमों एवं अनुसंधानों को सफल बनाया है। इसने न सिर्फ भारत के कल्याण के लिये बल्कि भारत को विश्व के समक्ष सॉफ्ट पॉवर के रूप में स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अंतरिक्ष कार्यक्रमों की यात्रा ने वर्ष 1963 में एक छोटे-से रॉकेट प्रक्षेपण से शुरुआत करके आज हमें ऐसे मुकाम पर पहुंचा दिया है कि अब हमारे पास भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (इन्सैट) एवं भारतीय दूरसंवेदी (आईआरएस) उपग्रह जैसी अत्याधुनिक बहुउद्देश्यीय उपग्रह प्रणाली मौजूद हैं।

अंतरिक्ष कार्यक्रमों के लिए भारतीय संस्थानों तथा उद्योगों ने सहयोग किया है। आधुनिकतम उपकरणों तथा मशीनों का निर्माण देश में ही किया गया, जिसमें रॉकेट खंडों के लिए हल्की धातु, मोटर के खोल, द्रव प्रस्टर, प्रणोदक टैंक, गैस उत्पादन तथा इलैक्ट्रॉनिक उपकरण शामिल हैं। देश की अंतरिक्ष में उपलब्धियाँ केवल वैज्ञानिक पैमाने पर ही नहीं है बल्कि इससे हमारी सुरक्षा को भी तीसरी आंख मिलती है। पाकिस्तान में भारतीय सेना की सर्जिकल स्ट्राइक में भी लगभग 6 उपग्रहों से सीधा फीड मिला था। भारत के कुछ उपग्रहों में उन्नत सिंथेटिक रडार भी हैं। ये उपग्रह बादलों के पार और रात में भी सटीक तस्वीर ले सकते हैं। इन उपग्रहों द्वारा एकत्रित आंकड़ों का इस्तेमाल विभिन्न क्षेत्रों तथा कृषि, फसल अनुमान, भूमिगत जल स्रोतों का पता लगाने, वन सर्वेक्षण, अनुत्पादक भूमि के मानचित्रण, बर्फ पिघलने के अनुमान, सिंचाई, कमान क्षेत्र प्रबंधन, खनिजों का पता लगाने, संभावित मत्स्य क्षेत्र का पता लगाने, शहरी योजना बनाने एवं पर्यावरण पर निगाह रखने जैसे अनेक कार्यों में किया जा रहा है। दूरसंवेदी उपग्रहों के निर्माण व संचालन ने हमें वाणिज्यिक रूप से भी फायदा पहुंचाया है।

भारतीय प्रक्षेपण रॉकेटों की विकास की लागत ऐसे ही विदेशी प्रक्षेपण रॉकेटों की विकास लागत का एक-तिहाई है। भारतीय अंतरिक्ष प्रणाली आज राष्ट्रीय अवसंरचना का महत्वपूर्ण अंग बन गई है। दूरसंचार, दूरदर्शन प्रसारण, मौसम विज्ञान, आपदा चेतावनी, दूर चिकित्सा, प्राकृतिक संसाधन सर्वेक्षण और प्रबंधन, दूरवर्ती शिक्षा और खोजबीन तथा बचाव अभियान जैसी महत्वपूर्ण सेवाओं की कल्पना भी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के हस्तक्षेप के बिना नहीं की जा सकती है। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी ने भारत को विश्व में विशेष स्थान दिलाया है।

चांद की खूबियाँ आकृर्षित करने की वजह

चांद पृथ्वी से मात्र 3,84,000 किलोमीटर की दूरी पर है। इस कारण 1 या 2 सेकंड में भी चांद पर रेडियो संपर्क स्थापित हो जाता है, जबकि पृथ्वी और मंगल के बीच संपर्क स्थापित करने में 1 घंटे से भी अधिक समय लग जाता है। चांद पर कम गुरुत्वाकर्षण होने के कारण ऑर्बिटर्स और लैंडर्स के लिए काम करना आसान हो जाता है। चंद्रयान-1 और जापान के सेलेन यान ने चांद पर पानी सहित अनेक खनिजों का पता लगाया है। चांद पर हिलियम-3 अधिक मात्रा में है, जबकि धरती पर इसकी उपलब्धता न के बराबर है। परमाणु कार्यक्रम के लिए हिलियम-3 अहम माना जाता है। यह ऊर्जा का स्वच्छ स्रोत भी है। चांद की चट्टानों पर सल्फर मिलने के भी संकेत मिले हैं। वहाँ मूल्यवान धातु प्लेटिनम और प्लॉडियम का भी भंडार है तथा मैग्निशियम और सिलिकॉन प्रचुर मात्रा में है। इससे चांद पर इंसानी बस्ती बसाने की योजना को मजबूती मिलेगी। 50 वर्षों में कोई इंसान चांद पर नहीं गया सिर्फ अमेरिका ही वहाँ इंसान उतारने में सफल रहा। 14 दिसम्बर 1972 को आखिरी बार वहाँ इंसान उतरा था। 24 इंसान वहाँ तक गए, जिनमें से 12 ने वहाँ कदम रखे हैं।

चंद्रयान कार्यक्रम

30 जुलाई, 1964 में अमेरिका का रेंजर-7 मिशन यान को चांद पर उतरने में सफल रहा। रजर-3 ने उड़ान के 10 मिनट की अवधि के दौरान चंद्रमा की सतह की तस्वीर प्रसारित की। नासा के मिशन ने कार्यक्रम की पहली सफल उड़ान भरी। वर्ष 1969 में अमेरिका अपोलो 11 अंतरिक्ष यान को भेजने में सफल रहा। पहली बार चांद पर इंसान के कदम पड़े। चीन ने चांग ई-4 नाम के अपने चंद्रमा मिशन पर बड़ी कामयाबी प्राप्त की। 3 जनवरी, 2019 को चंद्रमा के दूर के इलाके में चीनी अंतरिक्ष यान से एक लैंडर और एक रोवर ने सॉफ्ट लैंडिंग की।

वर्ष 1959 में सोवियत संघ का लूना-2 मिशन ने 14 सितम्बर, 1959 को चांद पर पहुंचने में पहली बार सफलता मिली। यह पहला अंतरिक्ष यान था, जो चांद की सतह तक पहुंचा। लूना-2 ने चंद्रमा पर उतरने के बाद उसकी सतह, विकिरण और चुंबकीय क्षेत्र के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की। इस सफलता ने चंद्रमा पर अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने का रास्ता बनाया। 1960 के दशक में अमेरिका और सोवियत संघ में अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत हुई। पिछले 65 सालों के दौरान भारत सहित 11 देशों ने कुल 144 चंद्र अभियान शुरू किए, जिनमें से 49 विफल रहे हैं। चंद्रमा पर अब तक जितने भी यान गए हैं, चंद्रमा के मध्य एवं उत्तरी हिस्सों में गए हैं। चांद के दक्षिणी ध्रुव में पहुंचने वाला भारत दुनिया का पहला देश है। चंद्रयान-1 पर 386 करोड़ रुपये व्यय हुए थे, चंद्रयान-2 पर 978 करोड़ रुपये और चंद्रयान-3 पर 615 करोड़ रुपये व्यय हुए हैं।

भारत के चांद पर भेजे जाने वाले मिशन को वैज्ञानिकों ने सोमयान नाम दिया था। बाद में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने इसका नाम बदलकर चंद्रयान कर दिया था। 23 अगस्त को हर साल भारत नेशनल स्पेस डे (राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस) मनाएगा। चंद्रयान-3 का लैंडर चंद्रमा की सतह पर जहाँ उतरा, उसका नाम शिव-शक्ति पॉइंट रखा गया है। वर्ष 2019 में चंद्रमा पर जहाँ चंद्रयान-2 ने अपने पदचिह्न छोड़े थे, उसे तिरंगा पॉइंट कहा जाएगा। 23 अगस्त, 2023 को चंद्रयान-3 की सफल लैंडिंग से भारत चौथा देश बन गया है। इससे पूर्व केवल अमेरिका, रूस और चीन ही ऐसा कर पाएं हैं।

चंद्रयान-1

15 अगस्त, 2003 को चंद्रयान कार्यक्रम की औपचारिक रूप से घोषणा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने की थी। 22 अक्तूबर, 2008 को इसरो के पीएसएलवी-सी 11 रॉकेट पर चंद्रयान-1 (वजन 1,380 किलोग्राम) मिशन लॉच हुआ। चांद की सतह की विशेषताओं का मानचित्रण तैयार करना, चंद्रमा की उत्पत्ति और विकास को समझने के लिए नई दृष्टि प्रदान करना, पानी के अंश और हिलियम की तलाश करने से जुड़ी जानकारियाँ जुटाना इस मिशन का लक्ष्य था। चंद्रमा पर बर्फ की पुष्टि अगस्त 2018 में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने भी की थी। आज चांद पर पानी की संभावना खोजने का श्रेय भारत को देते हुए चंद्रयान-1 को गौरव के साथ याद किया जाता है।

100 किलोमीटर की ऊंचाई पर चंद्रमा के चारों ओर चंद्रयान-1 ने परिक्रमा करके कई अहम जानकारियाँ जुटाई थी। इस मिशन ने अधिकांश वैज्ञानिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। इसने ही सबसे पहले बताया कि चांद की सतह पर पानी की संभावना है। चंद्रयान-1 के उपकरणों से भेजे गए डाटा ने 2019 में चंद्रयान-2 की नींव रखीं। इसने चंद्रमा के चारों ओर 3,400 से अधिक चक्कर लगाए वर्ष 2009 में अंतरिक्ष यान की कक्षा को 200 किलोमीटर तक बढ़ा दिया गया। इस मिशन ने 312 दिन बाद काम करना बंद कर दिया। 29 अगस्त, 2009 को अंतरिक्ष यान से संपर्क टूटने पर पहला मिशन समाप्त हुआ। चंद्रयान-1 पृथ्वी की कक्षा से परे भारत का पहला अंतरिक्ष यान मिशन था और यह पूरी तरह से कामयाब रहा।

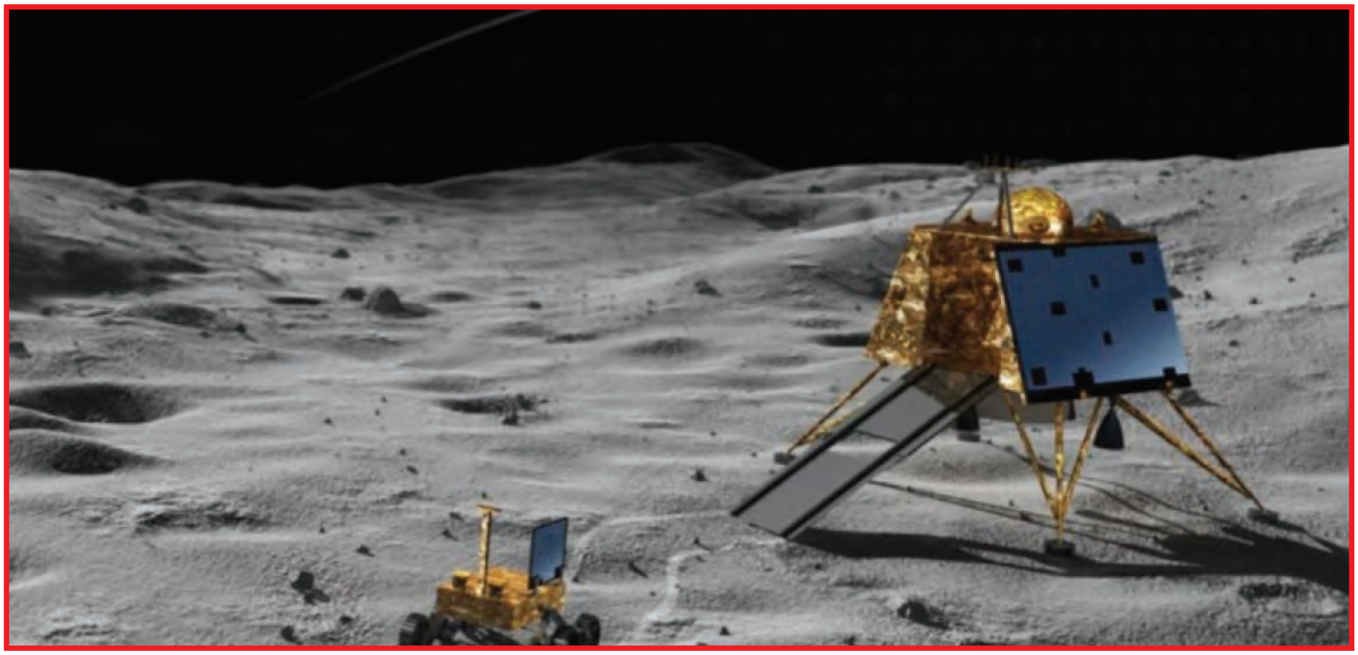

चंद्रयान-2

22 जुलाई, 2019 को चंद्रयान-2 (वजन 3,850 किलोग्राम) को प्रक्षेपित किया गया। इसमें तीन मुख्य भाग ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर को रखा गया। इसे जीएसएलवी एमके-3 के माध्यम से लॉच किया गया। इस मिशन में चंद्रमा के अज्ञात दक्षिणी ध्रुव के बारे में जानकारी जुटाना था। इसके साथ ही वैज्ञानिक पहलुओं के बारे में समझ का विस्तार करना, सतह की आकृति, भूकंप विज्ञान, खनिज और वितरण जैसी जानकारियों का पता लगाना था। 20 अगस्त, 2019 को चंद्रयान-2 चंद्रमा की कक्षा में पहुंचा। 2.1 किलोमीटर चंद्रमा की सतह की ऊंचाई पर अचानक वैज्ञानिकों का विक्रम लैंडर से संपर्क टूट गया था। लेकिन नाकामी हमारे मनोबल को कमजोर नहीं कर सकती। इस तरह आखिरी समय में चंद्रयान-2 का 47 दिनों का सफर अधूरा रह गया।

विक्रम लैंडर से संपर्क टूटने के बाद यह आम धारणा बनी कि भारत का मिशन चंद्रयान-2 विफल हो गया था। लेकिन यह पूर्णतः सच नहीं है। विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर मिशन का पांच प्रतिशत हिस्सा थे। 95 प्रतिशत हिस्सा ऑर्बिटर का है, जो सुरक्षित है, चक्कर लगा रहा है। इससे जो जानकारियाँ मिली हैं, वे चंद्रयान-3 के काम आ रही है। ऑर्बिटर चांद की 100 मिलोमीटर की कक्षा में घूमता रहा। उसने चंद्रमा पर पानी के अणुओं की मौजूदगी का पता लगाया। दक्षिणी ध्रुव की अनेक तस्वीर भेजी, जिनमें क्रेटर का पता चला। ऑर्बिटन ने चंद्रमा पर पहली बार बड़ी मात्रा में सोडियम का पता लगाया। वहीं सौर प्रोटॉन घटनाओं (एसपीई) का पता लगाया, जो अंतरिक्ष में मनुष्यों के लिए विकिरण जोखिम को बढ़ा देती है।

चंद्रयान-3

प्रज्ञान रोवर चंद्रमा पर खोज करेगा। चंद्रयान-3 के रोवर का वजन केवल 26 किलोग्राम है। इसमें बिजली उत्पादन के लिए सोलर पैनल के साथ बैटरी भी है। 91.7 सेंटीमीटर लम्बा, 75 सेंटीमीटर चौड़ा और 39.7 सेंटीमीटर ऊंचा रोवर अपने छह पहियों की मदद से चांद की सतह पर चलेगा। यह इक्ट्ठा की गई जानकारी लैंडर को भेजेगा। लैंडर इसे भारतीय डीप स्पेस नेटवर्क को भेजेगा। रोवर पर लगा LIBS उपकरण चांद पर मैग्नीशियम, एल्यूमीनियम, सिलिकॉन, कैल्शियम, टाइटेनियम तत्वों का पता लगाएगा। रोवर में कई यंत्र है। रम्भा नामक यंत्र चंद्रमा के वातावरण का अध्ययन करेगा। रोवर धरती पर करीब 14 दिनों तक काम करेगा। दक्षिणी ध्रुव पर प्रज्ञान रोवर सल्फर सहित सात तरह के रसायनों का पता लगा चुका है। इसरो के अनुसार आगे हाइड्रोजन की तलाश की जाएगी। भारत के चंद्रयान-3 ने चंद्रमा पर अनेक खनिजों की मौजूदगी की पुष्टि की है। इनमें सल्फर, एल्युमिनियम, सिलिकॉन, कैल्शियन एवं आयरन शामिल है। लैंडर विक्रम ने चंद्रमा पर भूकंप (मूनक्विक) को भी रिकॉर्ड किया है। भारत का अगला कदम चांद पर पहुंचकर वापस लौटने का होगा और यह अगला मिशन चंद्रयान-4 कर सकता है।

■■

सूर्य का पर्यावरण परिवर्तनशील है। इसमें सौर तूफान, सूर्य की बाहरी परत से आवेशित कणों का उत्सर्जन और सौर हवाएं शामिल हैं। सूर्य के रहस्य सुलझाने के लिए अमेरिका से लेकर जापान तक मिशन लॉन्च कर चुके हैं। यूलिसिस नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) का संयुक्त मिशन था। इसने वर्ष 1990 से 2009 तक सूर्य की परिक्रमा की। इससे प्राप्त तथ्यों से नासा को गैलेक्टिक ब्रहमांडीय विकिरण, सौर तूफानों और सौर हवाओं में उत्पन्न ऊर्जावान कणों के त्रिआयामी चरित्र का पता चला। सोलर एंड हेलिओस्फेरिक वेधशाला को यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) और अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने 2 दिसम्बर 1995 को लॉन्च किया था।

ट्रांजिशन रिजन और कोरोनल एक्सप्लोरर (ट्रेस) के माध्यम से नासा ने वर्ष 1998 से 2010 तक सूर्य के वातावरण में चुंबकीय क्षेत्र और प्लाज्मा (अति गरम गैस) का अध्ययन किया। जेनेसिस के माध्यम से नासा ने वर्ष 2001 में सौर हवा या सूर्य से लगातार निकलने वाले कणों के नमूने लेने के लिए अंतरिक्ष यान को रवाना किया था। जापान के योहकोह (सोलर-ए) अंतरिक्ष यान ने वर्ष 1991 से लेकर वर्ष 2001 तक एक्स-रे और स्पेक्ट्रोमेट्री की मदद से सूर्य की छवि बनाई। जापानी एयरोस्पेस एक्सप्लोरेशन एजेंसी के अनुसार सूर्य की बाहरी परत अपने पैमाने को गतिशील रूप में बदल सकती है।

भारत का सूर्य अभियान

सूर्य ऐसा तारा है, जो हमारी धरती के सबसे करीब है। दूसरे तारों की तुलना में इसका अध्ययन आसान है। सूर्य का अध्ययन करने से हम मिल्की-वे में मौजूद बाकी तारों के बारे में जान सकते हैं। 2 सितम्बर, 2023 को प्रक्षेपित आदित्य-एल 1 पहला सूर्य अभियान है। सूर्य का एक नाम आदित्य भी है अतः इस नाम का अभियान या यान भारत के अंतरिक्ष अभियान के स्वदेशी होने की पुष्टि करता है। अभी तक अमेरिका, यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी और जर्मनी ने ही सूर्य के अध्ययन के लिए अभियान चलाया है। ऐसे लगभग 20 अभियान चले हैं और जिनमें से दो-तीन अभियान ही विफल रहे हैं।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र ने एक और ऐतिहासिक मुकाम हासिल कर लिया। आदित्य-एल 1 का संचालन सफलतापूर्वक चल रहा है। भारत ने इसरो के ही पीएसएलवी रॉकेट के साथ अपना पहला सौर अभियान शुरू किया है। ऐसा करने वाला भारत दुनिया का तीसरा देश है। आदित्य-एल 1 यान 125 दिन की यात्रा करके सूर्य के करीब एक ऐसी परिक्रमा कक्ष में पहुंच जाएगा, जहाँ से सूर्य का अध्ययन सुरक्षित ढंग से किया जा सके। जिस सोलर सिस्टम में हमारी पृथ्वी है, उसका केंद्र सूर्य ही है। सभी आठ ग्रह सूर्य के ही चक्कर लगाते हैं। सूर्य के कारण ही पृथ्वी पर जीवन है। सूर्य से लगातार ऊर्जा बहती है, जिन्हें हम चार्ज्ड पार्टिकल्स कहते हैं। अमेरिका और यूरोप की तुलना में भारत से सैटलाइट भेजना सस्ता है।

आदित्य अभियान के लिए 400 करोड़ रुपये से अधिक खर्च होने का अनुमान है। आदित्य मिशन पृथ्वी एवं सूर्य के बीच स्थित लैंग्रेज प्वाइंट-1 (एल-1) पर उपग्रह भेजने वाला भारत विश्व का पहला देश है। पृथ्वी और सूर्य के बीच ऐसे पांच लैंग्रेज प्वाइंट

हैं। यह बिंदु सूर्य के सबसे निकट है, जबकि चार अन्य बिन्दु दूरी पर हैं। लैंग्रेज बिन्दु एक ऐसा बिन्दु होता है, जहाँ धरती या सूर्य पर गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव नहीं होता तथा इस बिन्दु पर उपग्रह स्थिर रह सकता है। आदित्य एल-1 उपग्रह चंद्रयान-3 की तुलना में चार गुना अधिक दूरी भी तय करेगा।

भारत का यह मिशन सूर्य से संबंधित रहस्यों से पर्दा हटाने में मदद करेगा। आदित्य एल-1 मिशन को पीएसएलवी रॉकेट से सफलतापूर्वक अलग हो गया। आदित्य एल 1 मिशन को पीएसएलवी रॉकेट के जरिये श्री हरिकोटा अंतरिक्ष केंद्र से प्रक्षेपित किया गया है। दुनियाभर में बीते छह दशक में सूर्य से जुड़े 22 मिशन भेजे जा चुके हैं। नासा के पार्कर सोलर प्रोब को एक हजार डिग्री सेल्सियस से अधिक गर्मी झेलनी पड़ी। आदित्य एल-1 को इतनी गर्मी नहीं झेलनी होगी, क्योंकि वह नासा के मिशन की तुलना में सूर्य से काफी दूर होगा।

आदित्य एल-1 सूर्य का अध्ययन करने वाला भारत का पहला अंतरिक्ष मिशन है। 400 किलो के उपग्रह को सूर्य-पृथ्वी लंग्रागियन प्वाइंट एल वन के चारों ओर एक कक्षा में स्थापित किया जाएगा। आदित्य एल-1 सूर्य के अध्ययन के लिए पहली भारतीय अंतरिक्ष आधारित ऑब्जर्वेटरी (वेधशाला) होगी। यह सूरज पर 24 घंटे नजर रखेगी। धरती और सूरज के सिस्टम के बीच पांच Lagrangian Point हैं। सूर्ययान Lagrangian Point 1(L1) के चारों ओर आर्बिट में रहेगा। एल-1 की धरती से दूरी 1.5 मिलियन किलोमीटर है, जबकि सूर्य की पृथ्वी से दूरी 150 मिलियन किलोमीटर है। एल-1 इसलिए चुना गया क्योंकि यहाँ से सूर्य पर सातों दिन 24 घंटे नजर रखी जा सकती है, यहाँ तक कि ग्रहण के दौरान भी। पृथ्वी के वातावरण और उसकी सतह के अध्ययन के लिए अमेरिका के साथ एक जॉइंट मिशन 2024 में किया जाएगा। इसका उद्देश्य करीब से सूर्य का निरीक्षण, इसके वातावरण और चुंबकीय क्षेत्र का अध्ययन करना है।

इससे सूर्य से जुड़े कई अहम तथ्य सामने आ सकेंगे। जैसे सूर्य के कोरोना (वायुमंडल) का तापमान दस लाख डिग्री तक कैसे पहुंच जाता है। सूर्य की सतह का तापमान छह हजार डिग्री सेंटीग्रेड कैसे रहता है। सौर वायुमंडल में गर्मी के रहस्य से जुड़ी जानकारी मिलेगी। सूर्य की बाहरी परतों जैसे फोटो स्फेयर, क्रोमोस्फेयर, कोरोना से जुड़ी जानकारी जुटाई जाएगी। सूर्य के वायुमंडल और आने वाले भूकंप का अध्ययन करेगा। पृथ्वी पर सूर्य की किरणों से मौसम पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करेगा।

07 पेलोड मिशन में इसमें से चार सूर्य की निगरानी करेंगे। 03 पेलोड सूर्य से जुड़े दूसरे तथ्यों और कणों के बारे में जानकारी जुटाएंगे। आदित्य एल-1 के लक्ष्य तक पहुंचने के बाद पेलोड विजिबल एमिशन लाइन कोरोनाग्राफ (वीईएलसी) हर मिनट एक तस्वीर भेजेगा। 190 किलोग्राम वजनी वीईएलसी पेलोड पांच साल तक तस्वीरे भेज सकता है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि अगले साल फरवरी के आखिर तक तस्वीर मिलनी शुरू हो जाएगी। उपग्रह जनवरी के मध्य तक कक्षा में स्थापित हो जाएगा। 125 दिन का सफर पूरा करने के बाद तय स्थान तक पहुंचेगा सूर्य मिशन।

विजिबल एमिशन लाइन करोनोग्राफ (वीईएलसी) सूर्य के परिमंडल और सीएमई की गतिशीलता का अध्ययन करेगा। वीईएलसी यान का प्राथमिक उपकरण है, जो इच्छित कक्षा तक पहुंचने पर विश्लेषण के लिए प्रतिदिन 1440 तस्वीर धरती पर स्थित केन्द्र को भेजेगा। यह आदित्य एल-1 पर मौजूद सबसे बड़ा और तकनीकी रूप से सबसे चुनौतीपूर्ण उपकरण है। विजिबल लाइन एमिसन कोरोनाग्राफ को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स ने तैयार किया है। सूरज की एचडी फोटो लेने के लिए तैयार किया गया है। पेलोड में लगा हाई रेजोल्यूशन तस्वीरे लेने में सक्षम है।

द सोलर अल्ट्रावॉयलेट इमेंजिग टेलीस्कोप सूर्य के प्रकाशमंडल और वर्णमंडल की तस्वीर लेगा, साथ ही सौर विकिरण विविधताओं को मापेगा। सोलर अल्ट्रावॉयलेट एमेंजिग टेलीस्कोप (एसयूआईटी) एक अल्ट्रावायलेट टेलीस्कोप है। ये पेलोड सूरज की अल्ट्रावायलेट तस्वीरों को कैद करेगा। पेलोड सूरज के फोटो स्फेयर और क्रोमोस्फेयर की तस्वीरे लेने का काम करेगा।

आदित्य सोलर विंड पार्टिकल एक्सपेरिमेंट और प्लाज्मा एनालाइजर पैकेज फॉर आदित्य नामक उपकरण सौर पवन और ऊर्जा आयन के साथ-साथ ऊर्जा वितरण का अध्ययन करेंगे। प्लाज्मा एनालाइजर पैकेज फॉर आदित्य (पापा) सूरज की गर्म हवाओं में मौजूद इलेक्ट्रांस और भारी आयन की दिशाओं का अध्ययन करेगा। सूरज की हवाओं में गर्मी है और कणों के वजन से जुड़ी जानकारी मिलेगी।

सोलर लो एनर्जी एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर और हाई एनर्जी एल-1 ऑर्बिटिंग एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर (एचईएल1ओएस) विस्तृत एक्स-रे ऊर्जा क्षेत्र में सूर्य से आने वाली एक्स-रे फ्लेयर का अध्ययन करेंगे। सोलर लो एनर्जी एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर सूर्य से निकलने वाले एक्स-रे और उसमें आने वाले बदलावों का अध्ययन करेगा। ये पेलोड सूरज से निकलने वाली सौर लहरों पर नजर रखेगा और उससे जुड़े जरूरी आंकड़े जुटाएगा।

मैग्नेटोमीटर नामक उपकरण एल-1 बिंदु पर अंतरगृहीय चुंबकीय क्षेत्र को मापने में सक्षम है। एडवांस्ड ट्रोई एक्सियल हाई रेजोल्यूशन डिजिटल मैग्नोमीटर्स (एमएजी) ये पेलोड सूर्य के चारों ओर मैग्नेटिक फील्ड का अध्ययन करेगा। इसके साथ ही पृथ्वी

और सूरज के बीच मौजूद कम तीव्रता वाली मैग्नेटिक फील्ड का अध्ययन करेगा। ये सूर्ययान के मुख्य शरीर से तीन मीटर आगे निकला रहेगा।

एचईएल10 एस एक हार्ड एक्सरे स्पेक्ट्रोमीटर है। वैज्ञानिकों ने इसे इस तरह से डिजाइन किया है कि वो हार्ड एक्स-रे किरणों यानी सौर लहरों से निकलने वाली हाई-एनर्जी एक्स-रे का अध्ययन करेगा।

एएसपीईएक्स में कुल दो पेलोड एक साथ काम करेंगे। पहला आदित्य सोलर विंड पार्टिकल्स पार्टिकल्स एक्सपेरिमेंट जो कम ऊर्जा वाला स्पेक्ट्रोमीटर है। ये सूरज की हवाओं में आने वाले प्रोटॉन्स और अल्फा पार्टिकल्स का अध्ययन करेगा।

उज्ज्वल भविष्य

चंद्रयान-3 की सफलता के बाद भारत की स्पेस एजेंसी इसरो गगनयान प्रोजेक्ट पर फोकस कर रही है। अक्तूबर के पहले या दूसरे हफ्ते में इस मिशन के अंतर्गत एक स्पेसक्राफ्ट अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। इसका उद्देश्य है कि मानव मिशन के समय यह स्पेसक्राफ्ट उसी रूट से लौटे, जिससे गया है। इसके बाद दूसरी उड़ान में महिला रोबॉट व्योममित्र को भेजा जाएगा। जो इंसानों जैसी सारी एक्टिविटीज कर सकेगी। यदि सब कुछ ठीक रहा तो इससे आगे बढ़ते हुए मानव मिशन भेजा जाएगा। अंतरिक्ष यात्रियों को वापस लाना उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना उन्हें भेजना। गगनयान-1 भारत का पहला मानव अंतरिक्ष उड़ान प्रोग्राम है। इस मिशन में दो मानव रहित और एक मानव के साथ होंगे। गगनयान-1 एक मानव रहित मिशन है, जिसे इस साल के अंत तक लॉन्च किए जाने की योजना है।

गगनयान-2 इसरो की तरफ से दूसरा मानव रहित मिशन हे, इसमें रोबोट व्योममित्र को अंतरिक्ष में ले जाया जाएगा। इस मिशन का उद्देश्य इंसान को अंतरिक्ष में भेजने से पहले वहाँ सुरक्षा प्रणाली को समझना है। इसे भी इस साल के अंत तक लॉन्च किया जाएगा। गगनयान-3 मिशन के अंतर्गत अंतरिक्ष में टेस्ट पायलट्स को भेजा जाएगा। इसमें भेजे जाने वाले पायलट्स को फिटनेस टेस्ट, एयरोमेडिकल संग मनोवैज्ञानिक टेस्ट से गुजरना होगा। इसे वर्ष 2023 में लॉन्च किए जाने की योजना है।

गगनयान को अगले मार्च 2024 से पहले लांच करने का लक्ष्य रखा गया है। उससे पहले दो मानव रहित उड़ान भी जाएंगी। यदि वह सफल रहती है तो गगनयान तीन अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर जाएगा। तीन दिन तक यह धरती से चार सौ किलोमीटर ऊंचाई पर चक्कर लगाएगा और इसके बाद क्रू माड्यूल को उससे अलग कर धरती पर उतारा जाएगा।

मंगलयान मिशन यह मार्स ऑर्बिटर मिशन किसी ग्रह पर स्पेसक्राफ्ट भेजने का पहला मिशन था। रोस्कोस्मोस, नासा, यूरोप अंतरिक्ष एजेंसी के बाद आईएसआरओ मंगल की कक्षा में पहुंचने वाला चौथी अंतरिक्ष एजेंसी बन गई है। इतना ही नहीं भारत मंगल की कक्षा में पहुंचने वाला पहली कोशिश में ही पहला देश बन गया।

शुक्रयान-1 को वर्ष 2024 के अंत तक लॉन्च करने की योजना है। यह ऑर्बिटर मिशन होगा। यह शुक्र ग्रह के चारों ओर बादलों के बावजूद उसकी सतह की जांच करेगा। मिशन में शुक्र ग्रह की भू-वैज्ञानिक और ज्वालामुखीय गतिविधि, हवा की गति की विशेषताओं का अध्ययन होगा।

एनआईएसएओर मिशन के लिए इसरो और नासा के बीच करार हुआ है। इसे जनवरी 2024 में लांन्च किए जाने की संभावना है। यह एक लो अर्थ ऑब्जर्वेटरी मिशन है। यह हर 12 दिनों में एक बार पृथ्वी की पैपिंग करेगा। इस मिशन के अंतर्गत तीन अंतरिक्ष अभियान कक्षा में भेजे जाएंगे। दो मानवरहित और एक मानवयुक्त होगा। अंतरिक्ष में भारत का पहला मानव मिशन गगनयान वर्ष 2025 में छोड़ा जाएगा। तीन अंतरिक्ष यात्रियों के साथ गगनयान को अगले साल अंतरिक्ष में भेजा जाना प्रस्तावित है।

अंत में

अंतरिक्ष में भी अभियान भेजने में अभी तीन देश सोवियत संघ, अमेरिका और चीन सफल हुए हैं। चंद्र अभियान की तरह भारत भी अंतरिक्ष में इंसान भेजने वाला चौथा देश बन गया है। अभी तक अंतरिक्ष में जाने वाले यात्रियों की संख्या विभिन्न अभियानों में 44 देशों के यात्री अंतरिक्ष में जा चुके हैं। अंतरिक्ष विज्ञान में भारत की उपलब्धि एक और सुनहरा पन्ना है। 75 साल का यह भारत आज अंतरिक्ष विज्ञान में योग्यता के कारण विदेशी मुद्रा कमा रहा है तथा सबसे कम दाम में अंतरिक्ष तकनीक की सुविधाएं पूरे विश्व को उपलब्ध करा रहा है। भारत ने जब अपने अंतरिक्ष कार्यक्रम की शुरुआत की थी तो कई विकसित देशों ने इसका मजाक बनाया था, परंतु भारत ने अपने कम बजट में भी उच्च अंतरिक्ष तकनीक को हासिल करने में सफलता प्राप्त की और आज वह श्रेष्ठ अंतरिक्ष तकनीक वाले देशों की कतार में शामिल है। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम इतना परिपक्व हो गया है कि इसका गुणगान राष्ट्र में ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय जगत में भी हो रहा है।

■■

स्मृति शेष

बिंदेश्वर पाठक

सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक

सुलभ इंटरनेशनल शिक्षा के माध्यम से मानव अधिकारों, पर्यावरण स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन पर काम करता है। 15 अगस्त, 2023 को सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक डॉ. बिंदेश्वर पाठक का कॉर्डिएक अटैक से निधन हो गया। उन्होंने जीवन के अंत तक देश और समाज की सेवा की। आराम और विश्राम जैसे शब्द उनके शब्दकोश में नहीं थे। बिंदेश्वर पाठक का जन्म 2 अप्रैल 1943 को बिहार के वैशाली जिले के एक गांव के ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बिंदेश्वर पाठक ने एक इंटरव्यू में बताया था कि तब उनके घर में रहने के लिए 9 कमरे थे, लेकिन शौचालय नहीं था। उन्होंने ऐसे समय को देखा जब सुबह-सबेरे सूर्योदय से पहले ही महिलाएं शौच के लिए घर से बाहर जाया करती थीं।

वे छोटी उम्र से ही बेहद संवेदनशील और सामाजिक कार्यों के प्रति सजग थे और जातिवाद मानसिकता में बदलाव के प्रखर पक्षधर थे। उन्होंने वर्ष 1964 में पटना यूनिवर्सिटी से समाज शास्त्र में स्नातक किया। उन्हें 1968-69 में बिहार सरकार के गांधी जयंती शताब्दी समारोह समिति के भंगी मुक्ति विभाग में नौकरी करने का मौका मिला। उनकी कार्यकुशलता और वैज्ञानिक सोच को परखते हुए समिति के अधिकारियों ने उन्हें एक अलग ही कार्य सौंपा। अधिकारी चाहते थे कि दलितों को समाज की मुख्य धारा में शामिल करने के लिए सुरक्षित और सस्ती शौचालय तकनीक विकसित की जा सके। पाठक ने तभी इस पर कार्य शुरू कर दिया, लेकिन बाद में उन्होंने देखा कि सरकारी व्यवस्था में कोई भी निर्णय लेने और उस पर अमल करने में बहुत समय लगता है तो उन्होंने खुद ही कुछ करने की ठानी।

Image courtesy : www.sulabhinternational.org

उन्होंने वर्ष 1970 में सुलभ शौचालय की स्थापना करके देश में सिर पर मैला ढोने की प्रथा को खत्म करने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए सुलभ इंटरनेशनल की स्थापना की। उनके जीवन पर गांधीजी के छुआछूत के खिलाफ चलाए गए आंदोलन का गहरा असर था। उन्होंने कहा भी था कि अगर गांधीजी को नहीं पढ़ा होता तो वे शायद ही सुलभ जैसी संस्था को खोलने के विषय में सोच पाते।

बिंदेश्वर पाठक ने वर्ष 1974 में 'पे एंड यूज' टॉयलेट की शुरुआत की। जल्दी ही उनका ये कॉन्सेप्ट पूरे देश और कई पड़ोसी देशों में लोकप्रिय हो गया। 1980 में जब उन्होंने सुलभ इंटरनेशनल का नाम सुलभ इंटरनेशनल सोशल सर्विस ऑर्गनाइजेशन किया तो इसका नाम पूरी दुनिया में पहुंच गया। सुलभ अब 24 राज्यों और 5 केंद्र शासित प्रदेशों के 1,586 शहरों में काम करता है और इसमें 30 लाख स्वयंसेवक शामिल हैं।

बिंदेश्वर पाठक देश को खुले में शौच मुक्त करने को लेकर लगातार काम करने लगे। लेकिन, इन्हें अपनो के भी विरोध का सामना करना पड़ा। उनके पिता इससे नाराज हो गए। आसपास के लोग भी तब काफी खफा थे। वहीं, ससुर इनसे काफी गुस्से में थे। एक समय इनके ससुर ने यह तक कह दिया कि मैं आपका चेहरा देखना नहीं चाहता। आपने मेरी बेटी का जीवन खराब कर दिया है।

उन्होंने 1980 में अपनी मास्टर डिग्री और 1985 में पटना विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने कई किताबें भी लिखी हैं, जिनमें से सबसे प्रसिद्ध है 'द रोड टू फ्रीडम' और दुनिया भर में स्वच्छता, स्वास्थ्य और सामाजिक प्रगति पर सम्मेलनों में लगातार भाग लेते रहे थे। उन्हें अनेक पुरस्कार से नवाजा गया। वर्ष 1991 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उनको एनर्जी ग्लोब, इंदिरा गांधी, स्टॉकहोम वॉटर जैसे तमाम पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। 2009 में इंटरनेशनल अक्षय ऊर्जा संगठन (आईआरईओ) का अक्षय उर्जा पुरस्कार भी मिला है। फेम इंडिया मैगजीन-एशिया पोस्ट सर्वे के 50 प्रभावशाली व्यक्ति ने 2020 की सूची में स्थान प्राप्त किया।

डॉक्टर पाठक द्वारा स्थापित शौचालय संग्रहालय को टाइम पत्रिका ने दुनिया के 10 सर्वाधिक अनूठे संग्रहालय में स्थान दिया था। 2001 से वर्ल्ड टॉयलेट डे भी मना रहे हैं। जैक सिम और बिंदेश्वर पाठक के ही प्रयासों की वजह से संयुक्त राष्ट्र ने 19 नवंबर 2013 में वर्ल्ड क्वालिटी को मान्यता दी।

उन्होंने सुलभ शौचालयों से बिना दुर्गंध वाली बायोगैस की खोज की। इस तकनीक का इस्तेमाल भारत समेत अनेक विकासशील राष्ट्रों में धड़ल्ले से हो रहा है। सुलभ शौचालयों से निकलने वाले अपशिष्ट का खाद के रूप में इस्तेमाल के लिए उन्होंने प्रोत्साहित किया। ■■

भारतीय संस्कृति की विरासत का प्रतीक राष्ट्रीय संस्कृत दिवस

प्रस्तुति : द साइलेंट स्ट्रोक

संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति के विरासत का प्रतीक है। भारत के इतिहास में सबसे अधिक मूल्यवान और शिक्षाप्रद सामग्री, शास्त्रीय भाषा संस्कृत में ही लिखी गई हैं। हाल के अध्ययनों में पाया गया है कि संस्कृत हमारे कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सबसे अच्छा विकल्प है। भारत ही नहीं, विदेश में भी इस भाषा की प्रतिष्ठा का मुख्य कारण इसका समृद्ध साहित्य है। पाश्चात्य के सर विलियम जोंस जैसे भाषाविदों ने माना है कि यह ग्रीक, लैटिन इत्यादि भाषाओं से भी प्राचीन है। ऐसा माना जाता है कि संस्कृत भाषा की उत्पत्ति भारत में करीब 3500 वर्ष पहले हुई थी।

संस्कृत हिन्दी-यूरोपीय भाषा परिवार की मुख्य शाखा हिन्दी-ईरानी भाषा की हिन्दी-आर्य उपशाखा की मुख्य भाषा है। आधुनिक भारतीय भाषाएँ हिन्दी, मराठी, सिन्धी, पंजाबी, बांग्ला, उड़िया, नेपाली, कश्मीरी, उर्दू आदि सभी भाषाएं इसी से उत्पन्न हुई हैं। इन सभी भाषाओं में यूरोपीय बंजारों की रोमानी भाषा भी शामिल है। संस्कृत का अर्थ है- संस्कार की हुई भाषा। इसकी गणना संसार की प्राचीनतम ज्ञात भाषाओं में होती है। संस्कृत को देववाणी भी कहते हैं।

भाषा वैज्ञानिक मानते हैं कि संस्कृत ही सभी आर्य भाषाओं की जननी है। संस्कृत से देश में दूसरी भाषाएं निकलती हैं। भारत में सबसे पहले संस्कृत ही बोली गई थी। आज भारत के 22 अनुसूचित भाषाओं में से इसे सूचीबद्ध किया गया है। उत्तराखंड राज्य की यह एक आधिकारिक भाषा है। इसके बहुत से शब्दों के द्वारा अंग्रेजी के शब्द भी बने हैं। संस्कृत हमारे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल है। हिंदी, बांग्ला, उड़िया, असमिया और दक्षिण भारत की मलयालम, कन्नड और तेलुगू जैसी भाषाओं में संस्कृत के अनेक शब्द शामिल हैं।

संस्कृत भाषा से जुड़े रोचक तथ्य

संस्कृत भाषा को देववाणी और सुर भारती के नाम से भी जानते हैं। संस्कृत को आर्यों की भाषा माना जाता है, जिन्होंने वैदिक सभ्यता की नींव रखी और मध्य एशिया से भारत में आए। संस्कृत को इंडो आर्यन परिवार की भाषा माना जाता है। संस्कृत भाषा विश्व की प्रथम पूर्ण भाषा है जिसका व्याकरण अत्यंत विस्तृत है। संस्कृत भाषा का उदय हड़प्पा सभ्यता के पतन के बाद और वैदिक सभ्यता की शुरुआत से माना जाता है। वैदिक सभ्यता के ऋग्वैदिक काल में संस्कृत भाषा का उदय

हुआ। संस्कृत भाषा के विकास को दो चरणों में बांटा गया है जिनमें से वैदिक संस्कृत में वेदों और उपनिषदों की रचना हुई, जबकि पाणिनि द्वारा रचित संस्कृत से अभिज्ञान शाकुंतलम् जैसे काव्यों की रचना हुई। वर्तमान समय में उपयोग होने वाला संस्कृत का प्रारूप पाणिनि के व्याकरण पर आधारित है।

संस्कृत विश्व की एकमात्र ऐसी भाषा है जिसके शब्दों को किसी भी क्रम में व्यवस्थित करने से वाक्य का अर्थ परिवर्तित नहीं होता, जबकि अन्य भाषाओं में कर्ता, क्रिया, कर्म के परिवर्तन से वाक्य के अर्थ भी बदल जाते हैं। संस्कृत के छोटे-छोटे वाक्यों में विस्तृत अर्थ का समावेश किया जा सकता है, जबकि अन्य भाषाओं में वाक्य बहुत बड़े होते हैं। भारत में उपयोग होने वाली यज्ञ अनुष्ठानों की भाषा संस्कृत है। दुनिया भर में बोली जाने वाली कई भाषाएँ संस्कृत लिपियों से उत्पन्न हुई हैं। विभिन्न क्षेत्रीय लिपियाँ जैसे बंगाली, सारदा, गुजराती और विभिन्न दक्षिणी लिपियाँ उक्त भाषा में हैं। संस्कृत भाषा में करीब 102 अरब 78 करोड़ 50 लाख शब्दों की विश्व में सबसे बड़ी शब्दावली है। कर्नाटक के शिमोगा नाम के गांव में संस्कृत भाषा बहुत ही मशहूर है। यहाँ हर कोई संस्कृत भाषा में ही बात करता है और इसके अलावा उत्तराखंड में संस्कृत भाषा उत्तराखंड की अधिकारिक भाषा है। हमारे यहाँ भारतीय शास्त्रीय संगीत में संस्कृत भाषा का ही प्रयोग किया जाता है।

बहु आयामी संस्कृत/संस्कृत का साहित्यकोश

देश के उपलब्ध समस्त साहित्य में संस्कृत का साहित्य सर्वश्रेष्ठ एवं सुसम्पन्न है। भारत ही नहीं, विदेश में भी इस भाषा की प्रतिष्ठा का मुख्य कारण इसका समृद्ध साहित्य व इसकी कर्णप्रिय ध्वनि है। 'संस्कृत ज्ञान सम्पन्न, सभ्यता-संस्कृति से अनुशासित, मधुर एवं सरल भाषा है। पाश्चात्य के सर विलियम जोंस जैसे भाषाविदों ने भी माना है कि 'यह ग्रीक, लैटिन इत्यादि भाषाओं से भी प्राचीन है।' देवनागरी लिपि में लिखे जाने वाले इसके वर्तनी-वर्ण-अक्षरों और उनसे बनने वाले शब्दों के उच्चारण में प्रायः कोई आभासी अन्तर न होने के कारण संस्कृत को आज जन-जीवन के सबसे महत्वपूर्ण साधन-संगणक (कम्प्यूटर) की महत्वपूर्ण भाषा के रूप में चुना गया है, जिस पर जर्मनी में काफ़ी अनुसंधान-कार्य हो रहा है। अत्याधुनिक और विराट मारक क्षमता वाले प्रेक्षपास्त्रों के लिए तो प्रारम्भिक सोच-विचार का आधार ही संस्कृत में रचित वेद व उनकी संहिताएं हैं।

संस्कृत भाषा का साहित्य अत्यन्त विशाल और व्यापक है। यह गद्य, पद्य और चम्पू तीनों रूपों में मिलता है, जिसमें तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब दर्शित है। विश्व का सर्वप्रथम ग्रन्थ- ऋग्वेद इसी भाषा में है। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद भी संस्कृत की महान् रचनाएं हैं। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द ज्योतिष, वेदांग-न्याय, वैशेषिक सांख्य योग, वेदांग मीमांसा, आस्तिक दर्शन, चार्वाक, जैन, बौद्ध, नास्तिक दर्शन सब इसी भाषा में सर्वप्रथम आये। उपनिषद, स्मृतियाँ, सूक्त, धर्मशास्त्र, पुराण, महाभारत, रामायण इत्यादि से इसके विस्तार का पता चलता है। वाल्मीकि, व्यास, भवभूति, दंडी, सुबन्धु, बाण, कालिदास, अघोष, हर्ष, भारवि, माघ और जयदेव आदि कवि, नाटक व गद्यकार इसके गौरव को सिद्ध करते हैं। पाणिनि जैसे व्याकरणविद विश्व की अन्य भाषाओं में देखने में नहीं आते हैं।

संस्कृत दिवस क्यों मनाया जाता है?

नई पीढ़ी के लोग संस्कृत भाषा बोलने और पढ़ने में शरमाते हैं और इसे बहुत ही पुरानी भाषा समझकर इस पर कोई ध्यान नहीं देते आज के लोगों को संस्कृत भाषा बोलना तक नहीं आता और न ही वह पढ़ना और बोलना चाहते हैं। इसी सोच को बदलने के लिए नई पीढ़ी के लोगों को जागरूक करने के लिए संस्कृत दिवस मनाया जाता है और इसे बढ़ावा दिया जा रहा है।

हिंदू कैलेंडर के मुताबिक हर साल श्रावण मास की पूर्णिमा पर मनाए जाने वाले 'विश्व संस्कृत दिवस' को संस्कृत भाषा में 'विश्व संस्कृत दिन' भी कहा जाता है। भारत में प्रतिवर्ष श्रावणी पूर्णिमा के पावन अवसर को संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्रावणी पूर्णिमा अर्थात् रक्षा बन्धन ऋषियों के स्मरण तथा पूजा और समर्पण का पर्व माना जाता है। वैदिक साहित्य में इसे श्रावणी कहा जाता था। इसी दिन गुरुकुलों में वेदाध्ययन कराने से पहले यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। इस संस्कार को उपनयन अथवा उपाकर्म संस्कार कहते हैं। इस दिन पुराना यज्ञोपवीत भी बदला जाता है। ब्राह्मण यजमानों पर रक्षासूत्र भी बांधते हैं। ऋषि ही संस्कृत साहित्य के आदि स्रोत हैं, इसलिए श्रावणी पूर्णिमा को ऋषि पर्व और संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है।

देश में राष्ट्रीय संस्कृत दिवस मनाये जाने की परिकल्पना भारत को साकार करने के लिए सावन की पूर्णिमा तिथि को मनाये जाने वाले राष्ट्रीय एकता के महापर्व रक्षाबंधन का दिन चुना गया है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य यह है कि भारतीय धार्मिक संस्कृति द्वारा संस्कृत को 'देव भाषा' का दर्जा दिया गया है, फिर भी यह भाषा अब अपना अस्तित्व खोती जा रही है। अब भारत में भी विदेशी भाषाओं और अंग्रेजी के बढ़ते महत्व के कारण संस्कृत पढ़ने, लिखने और समझने वालों की संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। इसलिए, संस्कृत दिवस और संस्कृत सप्ताह भारतीय समुदाय या समाज को संस्कृत के महत्व और आवश्यकता को याद दिलाने और जन मानस में इसके महत्व को बढ़ाने के लिए मनाया जाता है।

वर्ष 1956-57 में संस्कृत आयोग की सिफारिशों पर शिक्षा विभाग ने श्रावणी पूर्णिमा को संस्कृत दिवस मनाने का निर्णय किया गया। भारतीय कैलेंडर के अनुसार संस्कृत दिवस सावन माह की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। संस्कृत दिवस की शुरुआत वर्ष 1969 में हुई थी। रक्षाबंधन का त्यौहार भी सावन माह की पूर्णिमा को आता है अतः इसका अर्थ है रक्षाबंधन और संस्कृत दिवस एक ही दिन आता है। संस्कृत दिवस पूरी दुनिया में मनाया जाता है। संस्कृत के विद्वानों को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 1958 में सम्मानपत्र देने की एक योजना शुरू की गई थी। इसमें प्रख्यात संस्कृत विद्वानों को उपयुक्त अनुदान भी दिया जाता है। साल में एक बार स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर यह सम्मान दिया जाता है। सरकार ने वर्ष 1999-2000 को संस्कृत वर्ष के रूप में मनाया है। राज्य तथा ज़िला स्तरों पर संस्कृत दिवस आयोजित किए जाते हैं। इस अवसर पर संस्कृत कवि सम्मेलन, लेखक गोष्ठी, छात्रों की भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है, जिसके माध्यम से संस्कृत के विद्यार्थियों, कवियों तथा लेखकों को उचित मंच प्राप्त होता है।

संस्कृत दिवस का उद्देश्य

इस दिवस का उद्देश्य संस्कृत के पुनरुद्धार के बारे में जागरूकता फैलाना और उसे बढ़ावा देना है। इस दिवस पर भारतीय इतिहास और संस्कृति में संस्कृत के स्थान को स्वीकार किया जाता है। संस्कृत भाषा को बढ़ावा देने के लिए संस्कृत दिवस के अवसर पर स्कूल-कॉलेज में अनेक कार्यक्रम होते हैं। शहर के स्कूलों के बीच संस्कृत भाषा में निबंध, श्लोक, वाद-विवाद, गायन, आदि की प्रतियोगिता होती है। इसका उद्देश्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्य रखने वाली संस्कृत भाषा के संरक्षण और पुनरुद्धार के महत्व को उजागर करना है। यह भविष्य की पीढ़ियों के लिए भाषा को बचाने और बढ़ावा देने के प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहता है।

संस्कृत को कई भाषाओं की जननी माना जाता है और इसकी एक विशाल साहित्यिक विरासत है। इस दिन का उद्देश्य दर्शन, विज्ञान, गणित, साहित्य और आध्यात्मिकता सहित विभिन्न क्षेत्रों में संस्कृत के भाषाई और साहित्यिक योगदान को सम्मान देना और स्वीकार करना है। विश्व संस्कृत दिवस संस्कृत के अध्ययन को बढ़ावा देने और भाषा विज्ञान, साहित्य, इतिहास और इंडोलॉजी सहित संस्कृत से संबंधित विभिन्न विषयों में अनुसंधान को प्रोत्साहित करने का प्रयास करता है। यह शैक्षिक संस्थानों और विद्वानों को संस्कृत ज्ञान की गहराई और विस्तार का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है। विश्व संस्कृत दिवस का उद्देश्य योग, ध्यान, आयुर्वेद, ज्योतिष और प्रदर्शन कला सहित विभिन्न विषयों पर इसके प्रभाव को प्रदर्शित करके संस्कृत के समकालीन महत्व को उजागर करना है। 2020 में, उत्तराखंड सरकार ने इस भाषा के अभ्यास को प्रोत्साहित करने के लिए संस्कृत ग्राम विकसित किए हैं।

भारत में संस्कृत विश्वविद्यालय

भारत में मौजूद संस्कृत विश्वविद्यालय वर्ष 1791 में वाराणसी में खुला था। देश-विदेश के बहुत से कॉलेजों में संस्कृत पाठ्यक्रम के लिए अलग से विभाग होता है। संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थिति इस प्रकार है– संपूर्ण आनंद संस्कृत यूनिवर्सिटी, वाराणसी (1791), सद्विद्या पाठशाला, मैसूर (1876), कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत यूनिवर्सिटी, दरभंगा (1961), राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति (1962), श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली (1962), राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली (1970), श्री जगन्नाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी, पुरी, ओड़िसा (1981), नेपाल संस्कृत यूनिवर्सिटी, नेपाल (1986), श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ संस्कृत, कलादी, केरल (1993), कविकुलागुरु कालिदास संस्कृत यूनिवर्सिटी, रामटेक (1997), जगदगुरु रामानंदचार्य राजस्थान संस्कृत यूनिवर्सिटी, जयपुर(2001) श्री सोमनाथ संस्कृत यूनिवर्सिटी, सोमनाथ, गुजरात(2005), महर्षि पाणिनि

संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (2008), कर्नाटक संस्कृत यूनिवर्सिटी, बैंगलौर (2011), कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं पुरातन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबाड़ी (2011), महर्षि बाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा (2011)। इसके अलावा देश-विदेश के बहुत से कॉलेजों में संस्कृत पाठ्यक्रम के लिए अलग से विभाग होता है। बहुत से लोग यहाँ से ग्रेजुएशन के साथ-साथ पोस्ट ग्रेजुएशन भी करते है।

दुनिया भर में संस्कृत

विश्व में अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया और यूरोप के ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, फ्रांस जर्मनी और नार्वे के विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा के कोर्स की सुविधा उपलब्ध है। हालांकि इन देशों में जर्मनी में संस्कृत भाषा की मांग सर्वाधिक है। जर्मनी के 14 टॉप यूनिवर्सिटीज में संस्कृत और इंडोलॉजी की शिक्षा दी जाती है। इन विश्वविद्यालयों में हिडेल बर्ग समेत कई अन्य टेक्निकल यूनिवर्सिटीज भी शामिल हैं। जर्मनी में कई इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों में संस्कृत पढ़ाई जाती है। यूके, आयरलैंड, रूस, पोलैंड और जर्मनी, शीर्ष 5 देशों में से कुछ हैं, जहाँ संस्कृत आमतौर पर पढ़ाई जाती है। ब्रिटेन में स्कूलों और विश्वविद्यालयों में संस्कृत आम हो गई है। लंदन में सेंट जेम्स जूनियर स्कूल संस्कृत की लोकप्रियता बढ़ा रहा है और कुछ स्कूलों ने इसे अनिवार्य भी बना दिया गया है।

उत्तरी अमेरिका में प्रमुख रूप से संस्कृत की शिक्षा के लिए कई बड़े-बड़े संस्थान हैं, जिसमें ब्राउन यूनिवर्सिटी, कोलंबिया यूनिवर्सिटी, जॉन हापकिंस यूनिवर्सिटी और हावर्ड यूनिवर्सिटी समेत लगभग अट्ठारह विश्वविद्यालय शामिल हैं। इन विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अलावा अन्य भारतीय और यूरोपीय भाषाओं की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। स्वामी प्रभुपाद के सनातन अभियान के बाद से इजरायल समेत कई अन्य मुस्लिम देशों और यूरोपीय देशों में संस्कृत और सनातन संस्कृति की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है। जापान की कई यूनिवर्सिटी में संस्कृत में शिक्षा दी जाती है। कई दक्षिण एशियाई देश हैं जो संस्कृत भाषा से परिचित हैं। यूरोपीय और गैर-यूरोपीय देशों में संस्कृत का प्रचलन बढ़ रहा है। कई विश्वविद्यालयों ने संस्कृत संकाय शुरू किया है। विश्व स्तर पर संस्कृत पर उपलब्ध संसाधनों के आदान-प्रदान में छात्र और शिक्षक शामिल हैं।

आज भी हिंदू धार्मिक अनुष्ठानों और प्रथाओं में संस्कृत भाषा का प्रमुख स्थान है। घरों में पूजा-पाठ और मंत्रोच्चारण संस्कृत भाषा में ही किया जाता है। राज्य तथा जिला स्तरों पर संस्कृत दिवस आयोजित किए जाते हैं। इस अवसर पर संस्कृत कवि सम्मेलन, लेखक गोष्ठी, छात्रों की भाषण तथा श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया जाता है, जिसके माध्यम से संस्कृत के विद्यार्थियों, कवियों तथा लेखकों को उचित मंच प्राप्त होता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भविष्य में हिंदी की जननी संस्कृत विश्व में हिंदी के साथ-साथ अपना भी एक मुकाम हासिल कर लेगी।

■■

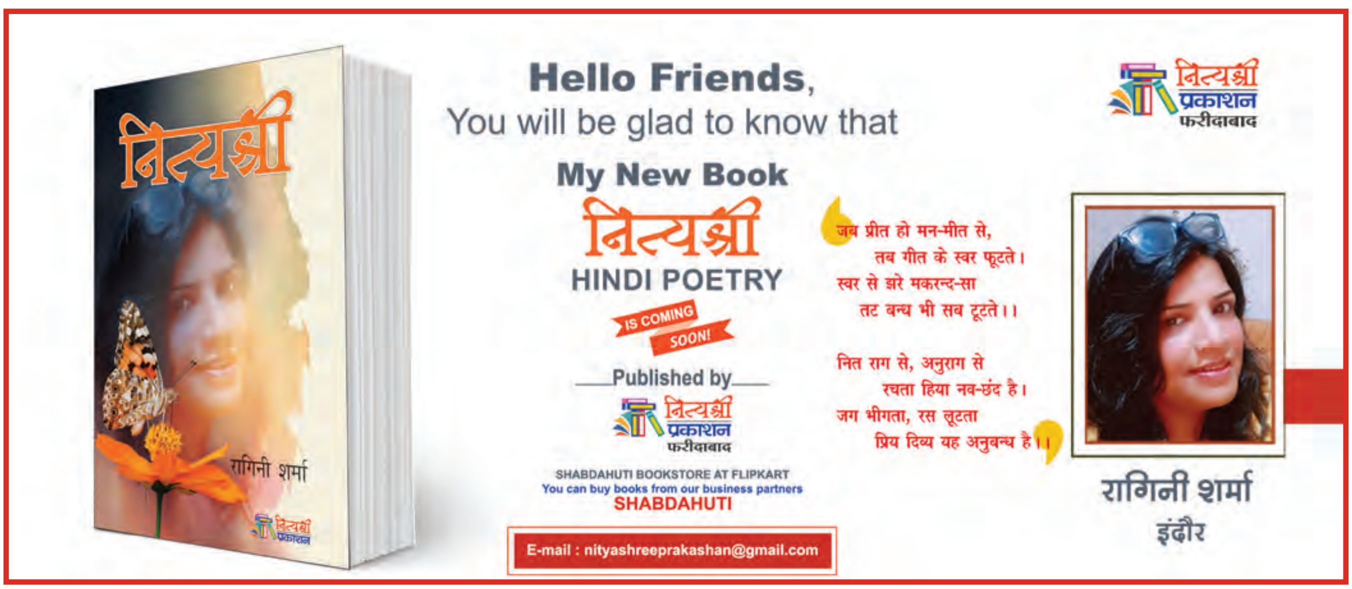

69वाँ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2023

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों का आयोजन केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्रालय के तहत फिल्म महोत्सव निदेशालय द्वारा किया जाता है। राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों की शुरुआत 1954 में "राज्य पुरस्कार" के नाम से की गई थी। उस समय, विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों को ही नामांकित और पुरस्कृत किया जाता था। प्रारंभ में इसे 'राज्य पुरस्कार' कहा जाता था, जिसमें दो राष्ट्रपति के स्वर्ण पदक, दो योग्यता प्रमाणपत्र और एक दर्जन क्षेत्रीय फिल्मों के लिए रजत पदक शामिल थे, पहले छह वर्षों तक राष्ट्रीय सर्वश्रेष्ठ फिल्म को ही क्षेत्रीय सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार देने की प्रथा थी। बाद में पुरस्कारों की संख्या में वृद्धि होती गई। 1967 की फिल्मों के लिए 1968 में कलाकारों और टैकनीशियनों के लिए अलग-अलग पुरस्कार शुरू किए गए थे, नरगिस दत्त और उत्तम कुमार क्रमशः सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री (तब उर्वशी कहलाती थी) और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (तब भारत कहा जाता था) पुरस्कार पाने वाले पहले अभिनेत्री और अभिनेता थे।

पुरस्कारों का उद्देश्य सिनेमाई रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों की समझ और सराहना में योगदान देने वाली सौंदर्य और तकनीकी उत्कृष्टता और सामाजिक प्रासंगिकता वाली फिल्मों के निर्माण को प्रोत्साहित करना है, जिससे राष्ट्र की एकता और अखंडता को भी बढ़ावा मिलता है। पुरस्कारों के विजेताओं का निर्णय जूरी द्वारा किया जाता है जिसमें सिनेमा, अन्य संबद्ध कलाओं और मानविकी के क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल होते हैं। पुरस्कार तीन वर्गों में दिए जाते हैं—फीचर, गैर-फीचर और सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन। जबकि फीचर और गैर-फीचर में विजेताओं का चयन विभिन्न श्रेणियों में सिनेमाई उपलब्धियों में उत्कृष्टता की मान्यता है, 'सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन' अनुभाग एक कला के रूप में सिनेमा के अध्ययन और सराहना और सूचना के प्रसार और आलोचनात्मक सराहना को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित है।

सिनेमा में भारत का सर्वोच्च पुरस्कार दादा साहेब फालके पुरस्कार है। राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड के विजेताओं को पुरस्कार के लिए अलग-अलग कैटेगिरी में विभाजित किया गया है, जिसमें दो तरह के पुरस्कार दिए जाते हैं- पहला स्वर्ण कमल और दूसरा रजत कमल। स्वर्ण कमल के साथ सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म, इंदिरा गांधी अवॉर्ड, सर्वश्रेष्ठ बाल फिल्म के विजेताओं को क्रमशः ढाई लाख, 1 लाख 25 हजार, डेढ़ लाख रुपये की राशि मिलती है। दादा साहेब फालके अवॉर्ड के विजेता को 10 लाख, शॉल और प्रशस्ति पत्र दिया जाता है। रजत कमल के साथ नर्गिस दत्त पुरस्कार, सामाजिक मुद्दों पर बनी सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म को डेढ़ लाख रुपये और सर्वश्रेष्ठ फिल्म को 1 लाख, सर्वश्रेष्ठ एक्टर को 50 हजार रुपये नकद राशि के रूप में दिए जाते हैं। रजत कमल के साथ गैर फीचर फिल्म को 50 हजार या 75 हजार रुपये प्रदान किए जाते हैं।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 2023 विजेता

69वाँ नेशनल फिल्म पुरस्कार (69th National Film Festival) के विनर्स की घोषणा नई दिल्ली के नेशनल मीडिया सेंटर में की गई थी। इस समारोह में कैलेंडर वर्ष 2021 में विभिन्न भाषाओं में निर्मित सर्वश्रेष्ठ भारतीय फिल्मों की विभिन्न कैटेगिरी में विजेताओं की घोषणा की गई थी। 69वाँ राष्ट्रीय फिल्म अवॉर्ड्स 2023 के लिए इस बार की जूरी में यतेंद्र मिश्रा, केतन मेहता, नीरज शेखर, बसंत साईं और नानू भसीन शामिल हैं। अल्लू अर्जुन को फिल्म पुष्पा के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार दिया गया, जबकि सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार क्रमशः आलिया भट्ट और कृति सेनन को उनकी फिल्मों गंगूबाई काठियावाड़ी और मिमी के लिए प्रदान किया गया। सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार द नांबी इफेक्ट को प्रदान किया गया। द कश्मीर फाइल्स ने राष्ट्रीय एकता पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार जीता।

शूजीत सरकार द्वारा निर्देशित फिल्म सरदार उधम ने हिंदी में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार जीता। यह फिल्म 2021 में प्राइम वीडियो पर रिलीज़ हुई थी और इसमें विक्की कौशल मुख्य भूमिका में थे। सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार आर माधवन की रॉकेट्री द नांबी इफेक्ट ने जीता, यह इस वर्ष का एकमात्र पुरस्कार है। सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार क्रमशः गंगूबाई काठियावाड़ी और मिमी के लिए आलिया भट्ट और कृति सेनन के बीच साझा किया गया। सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार पुष्पा के लिए अल्लू अर्जुन को दिया गया। यह सम्मान पाने वाले वह पहले तेलुगु अभिनेता बने।

सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता का पुरस्कार मिमी के लिए पंकज त्रिपाठी को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का पुरस्कार द कश्मीर फाइल्स के लिए पल्लवी जोशी को मिला। द कश्मीर फाइल्स ने राष्ट्रीय अखंडता पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी जीता। गंगूबाई काठियावाड़ी ने कई पुरस्कार (5) जीते, निर्देशक संजय लीला भंसाली ने कहा—"मैं उन सभी के लिए खुश हूं जो जीते हैं, मेरी फिल्म और अन्य फिल्में और हर कोई, जो जीता है। अच्छे सिनेमा को सरकार से, राष्ट्रीय स्तर पर और सम्मानित जूरी से सराहना मिलती है और उसकी पीठ थपथपाई जाती है, यह आपको हमेशा खुशी देता है।"

69वाँ राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार की सूची

- बेस्ट फीचर फिल्म— रॉकेट्री
- बेस्ट निर्देशक— निखिल महाजन, गोदावरी
- बेस्ट पॉपुलर फिल्म प्रोवाइडिंग होलसम एंटरटेनमेंट— आरआरआर
- राष्ट्रीय एकता पर बेस्ट फीचर फिल्म के लिए नरगिस दत्त पुरस्कार— द कश्मीर फाइल्स
- बेस्ट एक्टर— अल्लू अर्जुन (पुष्पा)
- बेस्ट एक्ट्रेस— आलिया भट्ट(गंगूबाई काठियावाड़ी) और कृति सेनन (मिमी)
- बेस्ट सपोर्टिंग एक्टर— पंकज त्रिपाठी (मिमी)
- बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस— पल्लवी जोशी (द कश्मीर फाइल्स)
- बेस्ट चाइल्ट आर्टिस्ट— भाविन रबारी (छैलो शो)
- बेस्ट स्क्रीनप्ले (ओरिजनल)— शाही कबीर (नयट्टू)
- बेस्ट स्क्रीनप्ले (एडेप्टेड)— संजय लीला भंसाली और उत्कर्षिनी वशिष्ठ (गंगूबाई काठियावाड़ी)
- बेस्ट डायलॉग राइटर— उत्कर्षिनी वशिष्ठ और प्रकाश कपाड़िया (गंगूबाई काठियावाड़ी)
- बेस्ट म्यूजिक डायरेक्टर (सॉन्गस)— देवी श्री प्रसाद (पुष्पा)
- बेस्ट म्यूजिक डायरेक्शन (बैकग्राउंड म्यूजिक)— एमएम कीरावनी (आरआरआर)
- बेस्ट मेल प्लेबैक सिंगर— काला भैरव (आरआरआर)
- बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर— श्रेया घोषाल, इरविन निज़ल
- बेस्ट लिरिक्स— चंद्रबोस, कोंडा पोलम का धम धम धम
- बेस्ट हिंदी फिल्म— सरदार उधम
- बेस्ट कन्नड़ फिल्म— 777 चार्ली
- बेस्ट मलयालम फिल्म— होम
- बेस्ट गुजराती फिल्म— छैलो शो
- बेस्ट तमिल फिल्म— कदैसी विवासयी
- बेस्ट तेलुगु फिल्म— उप्पेना
- बेस्ट मैथिली फिल्म— समानान्तर
- बेस्ट मिशिंग फिल्म— बूम्बा राइड
- बेस्ट मराठी फिल्म— एकदा काय जाला
- बेस्ट बंगाली फिल्म— कल्कोक्खो
- बेस्ट असमिया फिल्म— अनुर
- बेस्ट मेइतिलोन फिल्म— इखोइगी यम
- बेस्ट उड़िया फिल्म— प्रत्यक्षा
- इंदिरा गांधी अवॉर्ड फॉर बेस्ड डेब्यू फिल्म ऑफ डायरेक्टर— मेप्पडियन, विष्णु मोहन
- सामाजिक मुद्दों पर बेस्ट फिल्म— अनुनाद द रेज़ोनस
- बेस्ट फिल्म ऑन एनवायरमेंट कंजर्वेशन/प्रिजर्वेशन— आवासव्यूहम
- बेस्ट बाल फिल्म— गांधी एंड कंपनी
- बेस्ट ऑडियोग्राफी (लोकेशन साउंड रिकॉर्डिस्ट)— अरुण असोक और सोनू केपी, चविट्टू
- बेस्ट ऑडियोग्राफी (साउंड डिजाइनर)— अनीश बसु, झिल्ली
- बेस्ट ऑडियोग्राफी (री-रिकॉर्डिस्ट ऑफ द फाइनल मिक्स्ड ट्रैक)— सिनॉय जोसेफ, सरदार उधम
- बेस्ट कोरियोग्राफी— प्रेम रक्षित, आरआरआर
- बेस्ट सिनेमाटोग्राफी— अविक मुखोपाध्याय, सरदार

उधम

- बेस्ट कॉस्ट्यूम डिजाइनर– वीरा कपूर हां, सरदार उधम
- बेस्ट स्पेशल इफेक्ट्स– श्रीनिवास मोहन, आरआरआर
- बेस्ट प्रोडक्शन डिज़ाइन– दिमित्री मलिक और मानसी ध्रुव मेहता, सरदार उधम
- बेस्ट एडीटिंग– संजय लीला भंसाली, गंगूबाई काठियावाड़ी
- बेस्ट मेकअप– प्रीतिशील सिंह, गंगूबाई काठियावाड़ी
- बेस्ट स्टंट कोरियोग्राफी– किंग सोलोमन, आरआरआर
- स्पेशल जूरी पुरस्कार– शेरशाह, विष्णुवर्धन
- स्पेशल मेंशन– 1. स्वर्गीय श्री नल्लंदी, कदैसी विवासयी 2. अरन्या गुप्ता और बिथन बिस्वास, झिल्ली 3. इंद्रांस, होम 4. जहांआरा बेगम, अनुर
- बेस्ट नॉनफीचर फिल्म– एक था गांव
- बेस्ट डायरेक्शन (नॉन-फीचर फिल्म)–बकुल मटियानी, स्माइल प्लीज़
- बेस्ट डेब्यू नॉन फीचर फिल्म ऑफ ए डायरेक्टर– पांचिका, अंकित कोठारी
- बेस्ट एंथ्रोपोलॉजिकल फिल्म– फायर ऑन एज
- बेस्ट बायोग्राफिकल फिल्म– 1. रुखु मतिर दुखु माझी, 2. बियॉन्ड ब्लास्ट
- बेस्ट आर्ट्स फिल्में– टी.एन. कृष्णन बो स्ट्रिंग्स टू डिवाइन
- सबेस्ट साइंड एंड टेक्नोलॉजी फिल्में– एथोस ऑफ़ डार्कनेस
- बेस्ट प्रमोशनल फिल्म– लुप्तप्राय विरासत 'वर्ली आर्ट'
- बेस्ट पर्यावरण फिल्म (नॉन-फीचर फिल्म)– मुन्नम वलावु
- सामाजिक मुद्दों पर बेस्ट फिल्म (नॉन-फीचर फिल्म)– 1. मिट्ठू दी, 2. थ्री टू वन
- बेस्ट इंवेस्टिगेटिव फिल्म– लुकिंग फॉर चालान
- बेस्ट एक्सप्लोरेशन फिल्म– आयुष्मान
- बेस्ट एजुकेशनल फिल्म– सिरपिगलिन सिरपंगल
- बेस्ट शॉर्ट फिक्शन फिल्म– दाल भात
- बेस्ट एनिमेशन फिल्म– कंदित्तुंडु
- बेस्ट फिल्म ऑफ फैमिली वैल्यूज– चांद सांसे
- बेस्ट सिनेमैटोग्राफी (नॉन-फीचर फिल्म)– बिट्टू रावत, पाताल
- बेस्ट ऑडियोग्राफी (री-रिकॉर्डिस्ट ऑफ द फाइनल मिक्स्ड ट्रैक) (नॉन-फीचर फिल्म)– उन्नी कृष्णन, एक था गांव
- बेस्ट प्रोडक्शन साउंड रिकॉर्डिस्ट (लोकेशन/सिंक साउंड) (नॉन-फीचर फिल्म)– सुरुचि शर्मा, मीन राग
- बेस्ट एडीटिंग (नॉन-फीचर फिल्म)– अभ्रो बनर्जी, इफ मेमोरी सर्व्स मी राइट
- बेस्ट म्यूजिक डायरेक्शन (नॉन-फीचर फिल्म)– ईशान दिवेचा, सक्सेलट
- बेस्ट नैरेशन/वॉयस ओवर नॉन-फीचर फिल्म)– कुलदा कुमार भट्टाचार्जी, हाथीबंधु
- स्पेशल मेंशन (नॉन-फीचर फिल्म)–1. अनिरुद्ध जटकर, बाले बंगारा, 2. श्रीकांत देवा, करुवराई, 3. स्वेता कुमार दास, द हीलिंग टच, 4. राम कमल मुखर्जी, एक दुआ
- स्पेशल जूरी पुरस्कार (नॉन-फीचर फिल्म)– शेखर बापू रणखंबे, रेखा
- सिनेमा पर बेस्ट पुस्तक– म्यूजिक बाय लक्ष्मीकांत प्यारेलाल– द इनक्रेडिबली मेलोडियस जर्नी बाय राजीव विजयकर
- बेस्ट फ़िल्म क्रिटिक– पुरूषोत्तम चार्युलु
- बेस्ट फ़िल्म क्रिटिक (स्पेशल मेंशन)– सुब्रमण्य बंडूर

प्रस्तुति : द साइलेंट स्ट्रोक

■■

शिक्षक वो नहीं, जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन डाले, बल्कि वास्तविक शिक्षक वो है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।

–डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

वास्तविकता

खाली हो रहा पंजाब

कुलविंदर कुमार, बहादुरगढ़

पिछले कई सालों से पंजाब के युवक-युवतियाँ तेजी से विदेश जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि अगर इसी तरह चलता रहा तो आने वाले समय में पंजाब में नौजवान नजर नहीं आएंगे और धीरे-धीरे पंजाब खाली हो जाएगा। एक बच्चा जो अपनी 12 वीं कक्षा की शिक्षा पूरी करता है। वह आईईएलटीएस करके विदेश जाने की तैयारी भी करता है। पंजाब में कई कॉलेज बच्चों के विदेश जाने के चलन से बंद हो गए हैं और अगर ऐसा ही चलता रहा तो बाकी कॉलेज भी जल्द ही बंद हो जाएंगे। यह एक बहुत ही गंभीर समस्या बनती जा रही है। आखिर इसके कई कारण हैं। बच्चे बाहर क्यों जा रहे हैं? हम सबको मिलकर इसका समाधान करना है।

इसका सबसे बड़ा कारण बेरोजगारी है। पढ़ने-लिखने के बाद जब बच्चों को कोई नौकरी नहीं मिलती तो वे बेबस हो जाते हैं। कुछ बच्चे विदेश जाने को मजबूर हो जाते हैं, तो कुछ बच्चे मानसिक रूप से परेशान होकर नशे का सहारा लेने लगते हैं। जो आज के दौर में काफी ज्यादा घातक है। कम उम्र में ही बच्चे नशे के आदी हो रहे हैं। बच्चे जवानी में मर रहे हैं। नशे के बढ़ते प्रसार के कारण माता-पिता भी अपने बच्चों को यहाँ नहीं रखना चाहते हैं। न चाहते हुए भी अपने बच्चों को बाहर भेज रहे हैं। बच्चे को विदेश भेजने में 20-25 लाख का खर्च आता है और पैसे नहीं होने पर माता-पिता बैंकों से कर्ज ले लेते हैं। कई माता-पिता अपना घर और जमीन तक बेच देते हैं।

कुछ बच्चे बाहर जाने को विवश हैं। लेकिन अब यह भेड़ चाल हो गई है। देखो, बच्चे विदेश जा रहे हैं। शहरों के साथ-साथ अब गांवों के बच्चे भी ज्यादा विदेश जा रहे हैं। ग्रामीण लोगों की सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वे दूसरों की प्रगति नहीं देख पाते और गलत निर्णय ले लेते हैं। यदि पड़ोसी का बच्चा विदेश गया हो तो उन्हें भी अपने बच्चे को विदेश भेजना चाहिए ताकि वे पीछे न रह जाएँ।

जिन लोगों का पंजाब में बहुत अच्छा व्यवसाय या अच्छी कृषि है। उनके बच्चे भी यहाँ काम नहीं करते और विदेश जाने की तैयारी करते हैं। देखा जाए तो पंजाब में पंजाबी लोग बहुत कम रह गए हैं। मजदूर ही काम कर रहे हैं। पंजाब में सभी श्रम कार्य प्रवासी श्रमिकों द्वारा किया जाता है। पंजाब के लोग पूरी तरह से प्रवासी श्रमिकों पर निर्भर हो गए हैं। विदेश जाने की बीमारी पंजाब को कीड़े की तरह खोखला कर रही है। अगर इसे नहीं रोका गया तो इसके परिणाम बहुत भयानक हो सकते हैं और आने वाले समय में पंजाब में प्रवासी मजदूरों का राज होगा।

लड़कियाँ लड़कों से ज्यादा विदेश जा रही हैं। पंजाब में एक जमाना हुआ करता था। जब गांव की लड़कियों को पढ़ने के लिए शहर भी नहीं भेजा जाता था। लेकिन अब मां-बाप अपनी बेटियों को सात समुंदर पार विदेश भेज रहे हैं। वहाँ अक्सर लड़कियों का शोषण होता है। लेकिन हम लोग इससे बेपरवाह हैं और अपनी मर्यादा की परवाह नहीं कर रहे हैं।

अगर हम सब अभी भी अपने रंगीन पंजाब को नहीं सहेजेंगे तो आने वाले समय में इसके सारे रंग फीके पड़ जाएंगे। ■■

कविता

मन की बातें...

नीलमणि शर्मा

कल सपने में मन आया था,
मुझको बहुत सुनाया था।
"जी लिया बहुत सभी की खातिर",
कह, अपना आक्रोश जताया था।।

उसकी बातों ने मानो,
जीवन पुस्तक को खोल दिया।
कहने को कुछ न रहा बाकी,
अब सुनना ही शेष रहा।।

ली सांस जरा उसने पल भर,
तो मैंने दिया उलाहना।
आज खड़ा जो कहने को,
था अब तक कहाँ ठिकाना।।

कोई मिला नहीं कहने वाला,
न कोई समझाने वाला।
अपना 'निज' मत तू भूल कभी,
खुद को तू खुद में रख जिंदा।।

पर आज मैं तुझसे कहती हूं,
हर पल को तू जी ले रे मन।
बचपन को ले तू खेल जरा,
अठखेली खूब लगा ले मन।।

जो कर सकता वो कर ले रे,
अपनी मर्जी तू चल ले रे।
तू लम्बी पींगें भर ले रे,
"आकाश कुसुम" तू छू ले रे।।

उम्र का तो काम ही है बढ़ना,
तन पर छाप भी आएगी।
पल-पल, दिन-दिन घट जाएंगे,
तू कुंठित न होना कभी।।

तू इठला ले,
तू मस्ता ले।
मन की तू मन में रखना अब,
तू अपना 'जी भर' अब जी ले।।

आंख मेरी खुल गई तभी,
गूंज रहीं मन की बातें।
ऐ दोस्त मेरे, मैंने सुन लीं,
तू भी सुन ले मन की बातें।। ■■

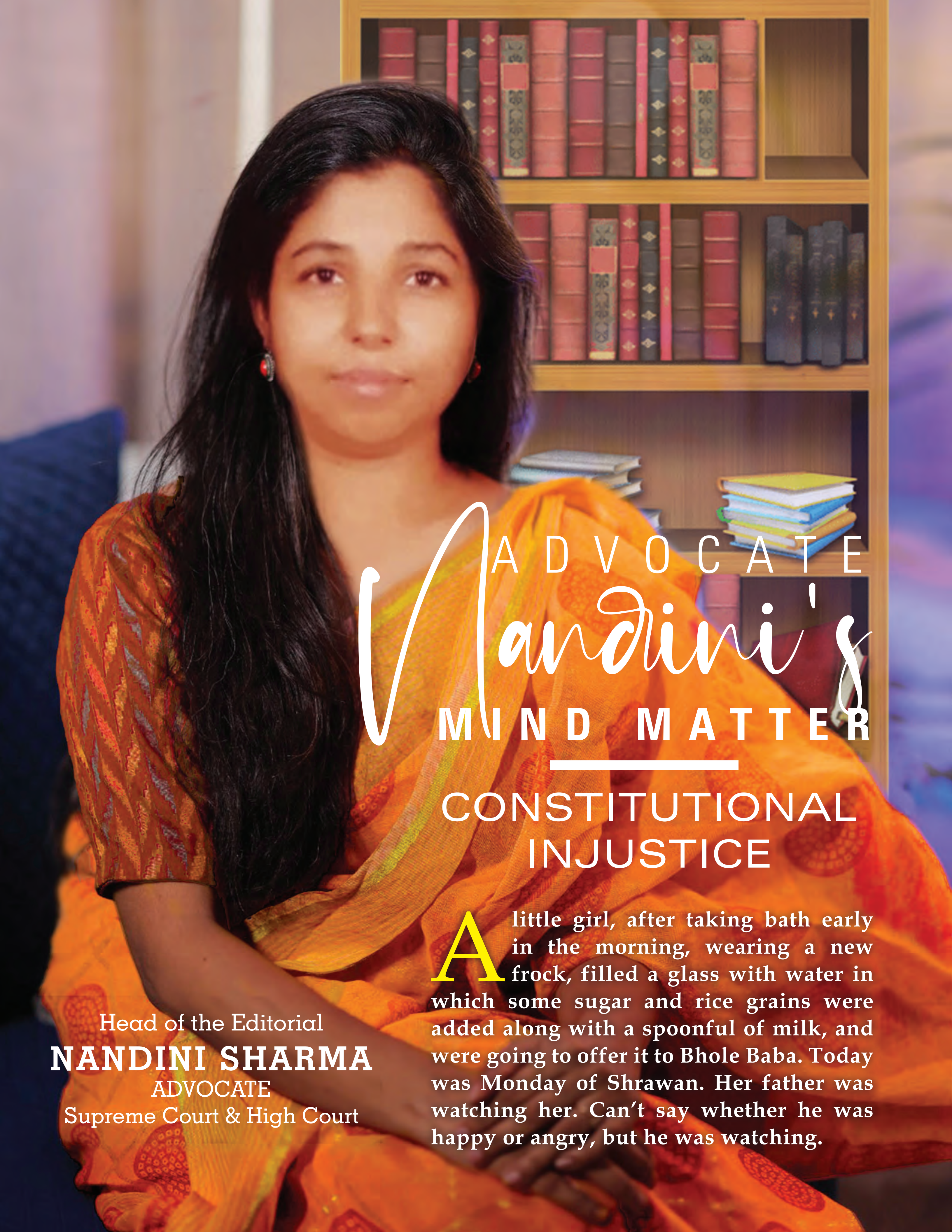

ADVOCATE Nandini's MIND MATTER

CONSTITUTIONAL INJUSTICE

Head of the Editorial
NANDINI SHARMA
ADVOCATE
Supreme Court & High Court

A little girl, after taking bath early in the morning, wearing a new frock, filled a glass with water in which some sugar and rice grains were added along with a spoonful of milk, and were going to offer it to Bhole Baba. Today was Monday of Shrawan. Her father was watching her. Can't say whether he was happy or angry, but he was watching.

One such evening, the little girl was sitting near her father. The father told her that daughter ! when you go to offer water to Bhole Baba in the morning, you should also go to school with the same promptness. The girl replied. “What good will happen after going to school? The God can provide food, clothing, home, groom and salvation in life. What is the need for education?

The father was astonished to hear this, but said calmly, daughter ! path of education will lead you towards economic & ideological progress. Worship and fasting are just religious practices, but not the religion, and for humans, substance is also religion. The girl heard, did you also hear, and what did you understand when you heard? The middle path propounded by Mahatma Buddha is the best among all the religious practices. If substance also means religion, which it is, then its observance is the right of all citizens or rather, it is the duty of the State to provide economic & religious freedom to its citizens.

Path of education will lead you towards economic & ideological progress. Worship and fasting are just religious practices, but not the religion, and for humans, substance is also religion.

I believe that all citizens should be provided employment by the State, because non-availability of employment is like strangulation of the Fundamental Rights in the real life. The irrational arguments, up-and-down situation of employment, and non-availability of economic resources makes life ridiculous, degrades the quality of life, and violates the Fundamental Rights.

You will not find this amazing, because "Peer Parai Jaane Na" you keep ignoring this situation considering it normal. Like at the G-20 summit, on one side, puddings was shying in the tinkling gold-silver bowls, which were being stirred by gold-silver spoons. What an amazing situation that must have been? There was pudding in a golden bowl, or a golden bowls were for such expensive puddings. Perhaps there was no sense of superiority among the two. One is not considering else as inferior, one is not jealous of other, nor anyone is feeling proud. Both the bowl and the pudding were working with each other in a spirit of natural cooperation. After all, both were equal.

But no, very dangerous rivalry was also seen during G-20 summit. The Delhi got a new bridal make-up, thick concealer and foundation were applied, and her face was adorned with Bindi & rouge. All the pimples, freckles, blemishes and signs of ageing were missing from the face of Delhi. They were covered with green sheets or shifted out of sight. There was a strict system in place by the State so that even our own local products and local dogs were missing from the streets.

Hmm, why don't you ask? The answer is, there was no match. Inequality, rich and poor, beautiful and absurd, if astrology were there then benefit planet - malefic planet. Although the time is not right, & it will take more time for truth to come out, and you will disagree today. But it would have been better, if Delhi had flaunted its beauty by

using Khadi or similar local products, instead of trying to hide under make-up. Anyway, Indians are supporters of natural beauty, and express grudge against the western make-up.

My views are that, digging of pits is necessary to ensure the guarantee of employment because Hands need work. However, more efforts are needed for ensuring the Right of Equality. Inequality, caste, colour, gender etc. should be eliminated. My demand is work, and in real terms, a Uniform Income Code is needed for the citizens in place of Universal Civil Code. If the State is working upon a Uniform Civil Code to the citizens, then the State should also take some responsibility upon itself, and should try to do work at least on the Principle of Equal Income so that this economic inequalities among citizens can be minimized. Only then we will be able to talk about equality in true sense. Otherwise we are just pretending.

My views are that, digging of pits is necessary to ensure the guarantee of employment because Hands need work. However, more efforts are needed for ensuring the Right of Equality. Inequality, caste, colour, gender etc. should be eliminated. My demand is work, and in real terms, a Uniform Income Code is needed for the citizens in place of Universal Civil Code. If the State is working upon a Uniform Civil Code to the citizens, then the State should also take some responsibility upon itself, and should try to do work at least on the Principle of Equal Income so that this economic inequalities among citizens can be minimized. Only then we will be able to talk about equality in true sense. Otherwise we are just pretending.

It is a very common thing that when a poor person did not get an ambulance, he carried the dead body of his relative on a bicycle. But when a dog of one of the richest people of the world died, he cried.

Worship & Chanting hymns are not religion. Religion is law-rules-practices. Better economic condition will definitely help in attaining better religion.

The middle path of Mahatma Buddha should be adopted, because religion and substance cannot be separated. Worship & Chanting hymns are not religion. Religion is law-rules-practices. Better economic condition will definitely help in attaining better religion.

We, the people of India will be able to adopt better- Religion, Way of Life and Rule of law in our life. The best religion is Constitution. With the economic inequalities, we cannot truly enjoy the Fundamental Rights of the Life, and disrespecting life is the biggest crime. A Constitutional injustice! ■■

अंत से प्रारंभ

–डॉ. सीमा भट्टाचार्य

लघुकथा

जरासंध के आक्रमण की भनक पड़ते ही राधा रानी जो गांव की मुखिया रही, उन्होंने स्वयं कृष्ण का निष्कासन बरसाना गांव से कर दिया। बिना किसी उत्पीड़न के उन्होंने यह निर्णय भी लिया कि दिवस की पूर्वसंध्या तक गांव से कृष्ण को निष्कासित कर दिया जाए। भारी मन से अनेक नियमों और भविष्य की चुनौतियों को निभाने के उद्देश्य से कृष्ण का अपने दिशा की ओर प्रदर्पण कर चुके। आवश्यक भी यही रहा।

मथुरा नरेश उग्रसेन को सारे राजभर का दायित्व सौंप वह स्वयं पूर्व ही दायित्व से मुक्त हो चुके थे। परंतु अब भी बहुत सारी चुनौतियाँ थी जो मार्ग पर खड़ी थी। मुखमंडल पर न कष्ट, न मन में विडंबना का आभास दिखता था। उन्होंने अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए राधा रानी के द्वारा लिए गए निर्णय को सम्मान देते हुए बरसाना छोड़ देने को कहा।

बरसाना की भूमि, माँ यशोदा, बाबा नंद, गोपियाँ तथा समस्त ग्रामवासियों सहित राधा को सदा के लिए त्याग कर जाना उनके लिए कम कष्टप्रद न रहा होगा। श्रीकृष्ण ने मन को एकाग्र कर विषम परिस्थितियों और चुनौतियों में एकजुट होने की तैयारी में सबसे विदा लेना उचित और विषम दोनों ही विरोधाभास की परिस्थिति में खड़े थे। बारी-बारी उन्होंने सबसे भावभीनी अंतिम विदाई स्वीकार की। यशोदा, नंद बाबा, गोपिकाएं, बालसखा को छोड़कर जाना हृदय विदारक था, चुनौतीपूर्ण समय था। बरसाना की रक्षा, नए राज्य के नेतृत्व और विशेष कारणों का पूर्ण निर्धारण भी आवश्यक था। रात्रि का अंतिम पहर बीत चला था। पर दिवस आगमन पर जरासंध के सैनिकों के द्वारा आक्रमण करने की प्राक सूचना पहले ही मिल चुकी थी। राधा रानी से मिलना ही पूर्णतः शेष था। अपने प्रेम को विदा कहना राधा के लिए भी सहज न था सदा के लिए अलगाव का भाव पहले ही वेदना से भरे हुए हृदय को तार-तार कर रहे थे। अपने-अपने कर्तव्य का पालन करते हुए दोनों ने ही इस कष्ट को सहना व अपने जीवनपथ पर आगे बढ़ना ही स्वीकार लिया था।

निश्चित जगह पर रात्रि के अंतिम प्रहर पर कृष्ण राधा से अंतिम बिदाई लेने पहुंचे। अश्रु से भरे हुए नेत्र और कंपित हृदय से दोनों ही प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत हुए। अंतिम दर्शन ही देगी पुनः मिलन यह असंभवना भाग्य का निर्णय था। असंख्य कष्ट को स्वीकार करते हुए दोनों का यह मिलन पूरी सृष्टि का मिलन था कृष्ण राधा को निहारते, राधा स्वयं वशीभूत-सी कृष्ण को अश्रु पूर्ण नेत्रों से अस्पष्ट निहारती। मुंह से शब्द भी न फूंटते। प्रत्येक श्वास मन की वेदना को व्यक्त करता जा रहा था। श्वास अपार गति चल रही थी पर शब्द रहित जीह्वा आज मौन ही थे। आज जैसे क्षण भी युग बन चले थे। मनवंतर-सा दिवस समाप्त होने

के उद्देश्य से तीव्र गति से आगे बढ़े जा रहे थे। कृष्ण ने आज बांसुरी का त्याग कर सदा के लिए उसे शांत होने का आदेश दिया। संपूर्ण बरसाना और कुंज गलियों में न भूलने वाले प्रेम की आज अंतिम बेला हो चली थी। पुनः बंसी वंश के कानन में लौटा दी गई थी। पूर्णमासी की रात गगन के असंख्य तारागण सुगंधित प्यार की मधुर बेला में भविष्य के किसी सुनिश्चित किए हुए अवधि में राधा की प्रतीक्षा करेंगे। कृष्ण ने इस प्रीत वाणी को राधा तक अश्रुपूरित नैनों की भाषा माध्यम से पहुंचाया। प्रेम और राधा दोनों ही कृष्ण के लिए एक-दूसरे के पर्याय ही थे राधा का त्याग और बांसुरी का वियोग संपूर्ण जीवन की दिशा का बदलना निश्चित हो चुका था। प्रेम की भांति ही आज अंतिम श्वास मुरली ने भी ली थी। टूट गई मुरली और खो गई वह प्रेम की ध्वनि जो बरसाने के मधुर कुंज वनों में गूंजा करती थी। अंतिम प्रहर भी बीत चला था। जरासंध की सेना बरसाने पर आक्रमण करने के लिए तत्पर खड़ी थी कृष्ण का बरसाना से लौटना समय को चुनौती देने से बड़ा था। राधा लौट चली थी कृष्ण भी अपने नए उद्देश्य और नए मार्ग पर अपनी नई भूमिकाओं को निभाने हेतु स्वयं के कदम आगे बढ़ा चुके थे। एक नई सुबह के साथ एक नया इतिहास अलग-अलग दिशाओं में स्थापित होने चला था। अलग-अलग उद्देश्य निर्धारण पर अग्रसर हो चले थे।

■■

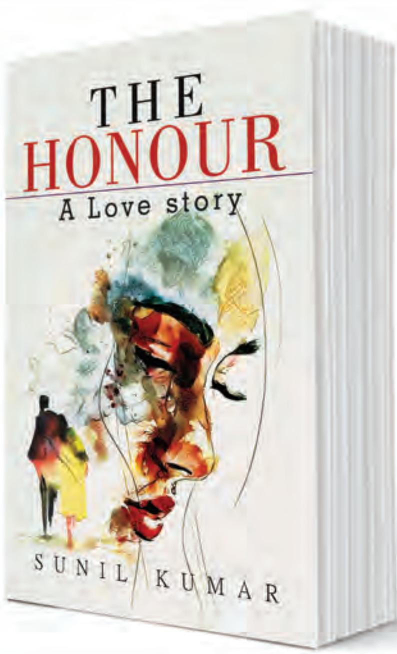

The CREATIVEART
Big ideas, Great results

Hello Friends,
You will be glad to know that
My New Book
THE HONOUR
A LOVE STORY

SUNIL KUMAR
Ex-soldier from Indian Air Force

Published by
THE CREATIVEART
THIS BOOK IS AVAILABLE ON FLIPKART
SHABDAHUTI

ABOUT THE BOOK

'The Honour' is inspired by a true incident. Written 12 years ago, this is a chronicle of love, liberty, honour & 'honour killing'. It is the fragrance of the 'New' crashing against the stagnant, stubborn 'Old'. The novel goes beyond the structure of a conventional love story to encompass an array of many social narratives moving parallelly.

ABOUT THE AUTHOR

Sunil Kumar, an ex-soldier from Indian Air Force, is on a journey exploring his inner and outer worlds. His love for adventure takes him to hills, mountains, forests and deep oceans, but the enigma of human civilization and paradoxes of society draw him back to their fold. Like any sensitive human being, he feels for those who never get their fair share in this world and aspires to change this. He is a certified mountaineer, SCUBA Diver, and fourth Dan black belt and currently teaches martial arts to young students in foothills of Himalayas.

सलिल सरोज
नई दिल्ली

यौन हिंसा

यौन हिंसा एक वैश्विक मुद्दा है और कई रूप में जन्म लेता है। 2013 में बस की सवारी करते समय एक भारतीय युवती के साथ क्रूर सामूहिक बलात्कार और 2015 में खोई हुई नाइजीरियाई लड़कियों को आतंकवादी समूह बोको हरम द्वारा अपहरण कर दुनिया के सामने यौन उत्पीड़न की भयावह तस्वीर प्रस्तुत की है। कैंपस यौन हमला इस मुद्दे का एक और पहलू है, जिसने सहमति, बलात्कार और महिलाओं के लिए शैक्षिक इक्विटी की खोज पर एक राष्ट्रीय चर्चा को बढ़ावा दिया है। हम एक कैंपस कल्चर कैसे बनाते हैं, जो वर्तमान आंकड़ों को बदल देता है- 5 में से 1 महिला अपने कॉलेज के करियर के दौरान यौन उत्पीड़न का सामना करती है?

यौन हिंसा का खुलकर समर्थन करने वाली राष्ट्रीय संस्कृति महिलाओं, ट्रांस-महिलाओं और लड़कियों के आत्म-सम्मान और उनकी दृष्टि को प्रभावित करती है जो वे दुनिया में हो सकती हैं? महिलाएं अभी भी दुनिया की सबसे गरीब नागरिक बनी हुई हैं और अक्सर श्रम और यौन तस्करी के विभिन्न रूपों का शिकार होती हैं। वैश्वीकरण, सैन्य संघर्ष, प्रवासन और गरीबी के नारीकरण के प्रभावों ने इन स्थितियों में कैसे योगदान दिया है? मानव कामुकता का अध्ययन अपने कानूनी, सामाजिक और राजनीतिक विन्यास में शक्ति के बारे में गंभीर रूप से सोच के साथ प्रतिच्छेद करता है।

कामुकता का अध्ययन सामाजिक भिन्नता की परीक्षा और जाति, लिंग, वर्ग, विकलांगता, धर्म, राष्ट्रीयता और जातीयता के साथ इसके परस्पर संबंध के लिए एक महत्वपूर्ण लेंस प्रदान करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), संयुक्त राष्ट्र का एक प्रभाग, स्वास्थ्य को मोटे तौर पर 'पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति और केवल बीमारी या दुर्बलता की अनुपस्थिति की स्थिति' के रूप में परिभाषित करता है। चिकित्सा प्रदाताओं द्वारा गरिमा के साथ व्यवहार करने और अपने शरीर पर नियंत्रण रखने के लिए महिलाओं के संघर्ष ने पिछले 50 वर्षों में समकालीन सक्रियता को परिभाषित किया है।

विश्व स्तर पर, महिलाओं ने उन तरीकों को प्रलेखित किया है जिसमें नियोक्ता, चिकित्सा संस्थान और सरकार अपनी स्वास्थ्य आवश्यकताओं की अनदेखी करते हैं और गर्भनिरोध, सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों, व्यापक प्रजनन स्वास्थ्य तक पहुँचाने के लिए अपनी ओर से संगठित होते हैं, जिनमें सुरक्षित गर्भपात तक

शामिल है और चिकित्सा अनुसंधान में शामिल करना। उन्होंने सांस्कृतिक मान्यताओं की भी पहचान की और उन्हें चुनौती दी, जो महिलाओं के शरीर को पुरुषों के शरीर से हीन मानती हैं। ऐतिहासिक रूप से और यहाँ तक कि आज भी, दुनिया के कई हिस्सों में महिलाओं को कानून और नीतियों के निर्माण में एक सार्थक भूमिका निभाने से बाहर रखा गया है।

महिलाओं को अक्सर कानूनों और नीतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके जीवन के अनुभवों को अनदेखा करते हैं या सक्रिय रूप से उनके हितों के खिलाफ काम करते हैं। सभी पृष्ठभूमि की महिलाएं (जैसे, विषमलैंगिक, समलैंगिक, किन्नर, ट्रांसजेंडर) अपने पूरे जीवन में लिंग आधारित हिंसा का सिलसिला अनुभव करती हैं। लिंग आधारित हिंसा कई रूप ले सकती है, जिनमें शामिल हैं- यौन उत्पीड़न, बलात्कार, कार्यस्थल में यौन उत्पीड़न, पीछा करना, घरेलू या पारस्परिक हिंसा और उत्पीड़न यही तक सीमित नहीं है। लिंग आधारित हिंसा महिलाओं के नागरिक और निजी जीवन दोनों के अनुभव को गंभीर रूप से कम कर सकती है, यहाँ तक कि महिलाओं को सीमाओं के पार और उनके घरों, समुदायों और देशों से दूर ले जाती है।

उपनिवेशवाद, गरीबी, वर्गवाद, नस्लवाद और पितृसत्ता की विरासत सभी लिंग आधारित हिंसा को खत्म करने में एक भूमिका निभाते हैं। लिंग आधारित हिंसा, राजनीतिक निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में महिलाओं की कमी, प्रतिबंधित प्रजनन अधिकार और असमानता के लगातार प्रमुख तंत्र हैं जो स्थानीय और विश्व स्तर पर महिलाओं की सुरक्षा के अनुभवों को आकार देते हैं। महिलाएं और बच्चे सांप्रदायिक संघर्ष और युद्ध से नाटकीय रूप से प्रभावित होते हैं। यह महिलाओं और लड़कियों के शैक्षिक और श्रम के अवसरों, स्वास्थ्य की स्थिति को प्रभावित कर सकता है और यौन हिंसा के जोखिम को बढ़ा सकता है।

विश्व स्तर पर, महिलाओं का काम अक्सर असुरक्षित, अस्वास्थ्यकर, क्षणभंगुर और अंडरपेड होता है। श्रमिकों के रूप में महिलाओं को अक्सर यौन उत्पीड़न, उचित और समान वेतन की कमी और विषाक्त स्वास्थ्य वातावरण के साथ संघर्ष करना पड़ता है। देश की यौन उत्पीड़न की संस्कृति पर से पर्दा उठाते हुए ऊंचाइयों तक ले जाया जा रहा है। मीटू आंदोलन द्वारा सशक्त महिलाएं और उनके सहयोगी टीम बना रहे हैं और पहले की तरह बोल रहे हैं। गायकी की इस लहर के साथ लोक चेतना में परिवर्तन आता है। समाज के हर क्षेत्र की विविध महिलाओं की आवाज़ और अनुभव सही सुनाई देने लगी हैं और यौन दुराचार के अपराधियों को आखिरकार जवाबदेह ठहराया जाता है। पितृसत्ता और श्वेत वर्चस्व के लिए सबसे शक्तिशाली मारक एक मजबूत नारीवादी शिक्षा और सामाजिक न्याय आंदोलनों में व्यापक भागीदारी है, जो हमारे कानूनों, संस्थानों और रीति-रिवाजों में बदलाव की मांग करती है।

■■

अधिकार

वंदना पुणतांबेकर

सोनम को फोन उठाने में देर होता देख, केतन अचानक चीख पड़ा—'यार इतनी देर लगाती है फोन उठाने में कब से बेल जा रही है..?' —उसकी आवाज में रोष था।

'हां बाबा.. चार्जिंग पर रखा था, कपड़े उठाने गई थी,' —कहते हुए सोनम ने एक प्यारी-सी खिलखिलाहट बिखेर दी।

'यार... अब हम ऑफिशियल रूप से एक-दूसरे के हो गए हैं। अब तो बेझिझक कहीं भी मिल सकते हैं और कभी भी फोन कर सकते हैं।' —कहते हुए केतन भी मुस्कुरा दिया।

'चलो...आज कहाँ मिलना है, मैं आज तुम्हारी पसंद की जगह पर चलना चाहूंगा इसीलिए फोन किया था।'

सोनम चहकते हुए अपनी पसंद की जगह बताकर तैयार होने लगी।

केतन और उसकी मंगनी हुए महज अभी बीस दिन ही हुए थे। सुखद अनुभूतियों को समेटे हुए वह गाड़ी निकालकर तयशुदा जगह पर पहुंच गई।

केतन अभी तक आया नहीं था। केतन का इंतजार करना उसे बहुत ही बेचैन कर रहा था। कुछ समय बाद वह कार से उतरा। ड्राइविंग सीट पर एक महिला को देख वह चौक पड़ी। आते ही पूछ बैठी, 'देर क्यों हो गई और वह कौन थी...?'

ऑफिस से निकलने में लेट हो गया था, तो दिव्या से लिफ्ट लेनी पड़ी, अब छोड़ो तुम इस बात को, कहते हुए वहाँ टेबल पर पैर फैलाकर बैठ गया। कुछ बातों के बाद अगली बार फिर मिलना तय हुआ।

उस दिन भी केतन आने में लेट हुआ। आज फिर एक नया बहाना शायद बहाने बनाना उसकी फितरत थी। सोनम को उसकी इस तरह की हरकत जरा भी पसंद नहीं आती थी। अब वह जब भी उससे मिलती तो उसे एक अजीब-सी बेचैनी महसूस होने लगी थी। आज तो हद कुछ ज्यादा ही हो गई। जब वह उसे अपने समीप आने का आग्रह करने लगा। सोनम ने उसे साफ मना करते हुए कहा—"केतन यह सब शादी के बाद, लेकिन वह सोनम की बातों से सहमत नहीं हो रहा था। और पूरे अधिकार से उसे पाने की जिद कर रहा था। तभी सोनम का फोन बज उठा, पापा का फोन था। कह रहे थे, बेटा रात होने से पहले घर आ जाना।

पापा का बहाना मिलते ही सोनम वहाँ से निकलना चाह रही थी। किंतु केतन कहने लगा—"यार... पापा को मालूम है कि तुम मेरे साथ हो तो क्यों टेंशन ले रही हो?

सोनम मुस्कुराते हुए बोली—"केतन इस सप्ताह तुम्हारा बर्थडे है तभी कुछ प्लान करते हैं।"

कहते हुए वह घर आ गई। सारे समय केतन के विचार उसे बेचैन कर रहे थे। मंगनी हो चुकी थी तो अब कुछ भी सोचना मूर्खता ही होगी यही सोचकर वह सो गई। आज केतन का बर्थडे था। आज सोनम के लिए भी कुछ स्पेशल डे था। तो वह बहुत सारे तोहफे लेकर केतन से मिलने पहुंची।

वहाँ उसके दो-तीन फ्रेंड भी मौजूद थे। केतन अपना फोन वही छोड़कर काउंटर पर ऑर्डर देने गया।

तभी उसके फोन पर मैसेज आया। मैसेज देख सोनम का दिल जोर-जोर से धड़क उठा। किसी नेहा का मैसेज था। उसके हाथ में मोबाइल देखकर केतन जोर से चीख पड़ा और सभी के सामने सोनम को एक चाटा रसीद कर दिया। सबके सामने अपमानित करने का और चांटा खाने का दर्द सोनम के लिए बहुत ही असहनीय हो गया।

वह अपना बैग उठाकर जाने लगी तो केतन उसका हाथ पकड़कर सॉरी कहते हुए उसे रोकने की भरपूर कोशिश कर रहा था।

"यार... आखिर हम ऑफिशियल एक हो चुके हैं, इसको इशू बनाने की क्या बात है।" सोनम अपना हाथ छुड़ाकर वहाँ से निकल आई।

घर आकर माँ को सारी बात बता दी। माँ बोली—'बेटा समाज क्या कहेगा...? तू भी फालतू की बात करती है।'

पापा ने सारी बात सुनी और बोले—"समाज की चिंता छोड़ो बेटी को लड़का समझ नहीं आया, तो क्या जबरदस्ती थोड़े ही उसकी जिंदगी बर्बाद करनी है।"

तभी फोन बज उठा। केतन का फोन था। सोनम ने फोन उठाया।

"यार... जरा-जरा सी बातों को दिल से मत लगाया करो, चलो मैं ही सॉरी बोलता हूं... कल तुमसे मिलना है, कुछ जरूरी बात करनी है, तुम्हारे पापा मुझे क्या-क्या देने वाले हैं?" सोनम बोली—'देना तो बहुत कुछ चाहते थे, लेकिन अब कुछ नहीं, मैं तुमसे यह रिश्ता तोड़ रही हूं।' कहते हुए वह खामोश हो गई।

केतन मोबाइल फोन कान से लगाकर यूं ही खड़ा रहा। एक लंबी खामोशी दोनों के बीच छा गई। एक नारी पर बेवजह जमाया गया अधिकार आज उसे समझ आ रहा था।

■■

"स्वास्थ्य ही सही धन है। सोने और चांदी का मूल्य इसके सामने कुछ भी नहीं।

*****

"ऐसे जियो की तुम क़ल मरने वाले हो और ऐसे सीखों की हमेशा के लिए जीने वाले हो।"

—महात्मा गांधी

MANAGING STRESS

AAKANKSHA SHARMA
Co-founder and Counseling Psychologist
Beyond Words

It could appear like there is nothing you can do to relieve stress. There will never be more hours in the day, the bills won't stop flowing in, and your work and family obligations will always be demanding. However, you are much more in control than you might realise.

Stress is a natural part of life, and it can spur you on to action. Even high levels of stress can be an inevitable aspect of life in the wake of a traumatic incident or a serious illness. Short-term, controllable stress levels

could motivate us to get things done and increase our resilience to upcoming obstacles. This kind of stress, which is 'good' for us, motivates us, is called "eustress". For instance, if you have a big test coming up, your body may work harder and stay awake longer as a result of a stress response. But when stresses persist without relief or rest periods, stress becomes an issue. So, on the other hand, persistent, chronic stress can impair our physical and emotional health as well as our relationships with others and ourselves. This stress, which is negative for us, drains us, and negatively affects our lives, is called "distress". Everyone goes through periods of stress. How we handle stress has a significant impact on how we feel overall.

Long-term (chronic) stress causes the body to deteriorate because the stress response is always being activated. Symptoms manifest as physical, emotional, and behavioural issues.

Among the physical signs of stress are:

- Aches and pains
- Chest pain or a feeling like your heart is racing
- Exhaustion or trouble sleeping or excessive sleeping
- Headaches, dizziness or shaking
- High blood pressure
- Muscle tension or jaw clenching
- Stomach or digestive problems
- Weak immune system

Stress can lead to mental symptoms like:

- Increased irritability or frustration
- Increased anger
- Anxiety or excessive worry
- Sadness
- Difficultly in concentrating
- Decreased attention
- Poor memory

It can also lead to behavioral symptoms like:

- Withdrawing from social setting
- Not feeling like meeting anyone
- Substance abuse – excessive smoking or alcohol use
- Increased time on social media
- Fatigue
- Increased absenteeism at work

Finding the cause of your stress is the first step in managing it. However, it is more complicated than it seems. Finding the causes of persistent stress can be more challenging than identifying big stressors like job changes, relocation, or divorce. It's all too simple to ignore the ways in which your own attitudes, feelings, and behaviours affect your stress levels on a daily basis.

> If you experience excessive stress, anxiety or feelings of sadness for more than a few weeks or if it starts to affect your daily life at home or at work, speak with your healthcare provider or a mental health professional (psychiatrist, counselling clinical psychologist). Medication, psychotherapy, and other approaches may be beneficial.

You may take steps to reduce your stress before it becomes overwhelming in the meantime by learning certain techniques. You may find these suggestions useful for reducing stress:

1. Everyday lifestyle changes:

a. Exercise (running, gymming, dancing, swimming, aerobics, etc)

b. Gor for a walk

c. Spend time with nature

d. Reduce caffeine (tea, coffee, green tea- yes it does have caffeine!) intake

e. Have nutritional and a balanced diet

f. Adequate sleep

g. Relaxation exercises like yoga and medication

h. Connect with people

2. Set reasonable boundaries and refuse requests that would put too much stress on your life

3. Make time for your interests and hobbies

4. Avoid using drugs, alcohol, or addictive behaviours as a way to cope with stress. Alcohol and smoke use might cause your body even more stress.

5. Look for social assistance

6. Consult a psychologist or other mental health expert who specialises in stress management

7. Establish goals for each day, week, and month. You'll feel more in charge of the present and long-term responsibilities by narrowing your perspective.

8. Following the news on social media and television for an excessive amount of time might make you more stressed. If watching the news makes you more anxious, try to limit your time spent doing so.

■■

व्यक्तित्व

मदर टेरेसा

विजयलक्ष्मी शुक्ला

जिंदगी उसी की जिसकी मौत पर जमाना अफसोस करें।
यूं तो हर शख्स आता है दुनिया में मरने के लिए।।

हाँ वैसे तो बहुत सारे लोग आते हैं और चले जाते हैं पर याद वहीं रहते हैं जिन्होंने इस देश को अपनी एक अलग छवि दी है, अपना एक अलग रूप दिया है, अपनी एक अलग पहचान बनाई है। अगर मैं बोलूं ऐसे दो शब्द–'दया और निस्वार्थ भाव' तो आपको सबसे पहले किसका नाम याद आता है...?

अपने लिए तो यहाँ सभी जीते हैं पर जो दूसरों के लिए जीये वही सही शब्दों में असली हीरो होता है। ऐसा माना जाता है कि दुनिया में लगभग सारे लोग सिर्फ अपने लिए जीते हैं पर मानव इतिहास में ऐसे कई मनुष्यों के उदाहरण हैं जिन्होंने अपना समस्त जीवन परोपकार और दूसरों की सेवा में अर्पित कर दिया है। जी हाँ... हम बात कर रहे हैं मदर टेरेसा की। मदर टेरेसा भी ऐसे ही महान लोगों में से एक हैं जो सिर्फ

दूसरों के लिए जीती हैं। मदर टेरेसा ऐसा नाम है जिसका स्मरण होते ही हमारा हृदय श्रुब्ध से भर उठता है और चेहरे पर एक खास आभा उमड़ आती है। मदर टेरेसा एक ऐसी महान आत्मा थीं जिनका हृदय संसार के तमाम दीन-दरिद्र, बीमार, असहाय और गरीबों के लिए धड़कता था और इसी कारण उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन उनकी सेवा और भलाई में लगा दिया, जो भारत की न होने के बावजूद भी भारत में आई और भारत के लोगों से असीम प्रेम किया और यहाँ के लोगों के दिलों में अपनी एक अलग ही पहचान बनाई। भारत में ही इन्होंने अपने सारे महान कार्य किए और यहीं की भूमि पर इन्होंने अपनी अंतिम सांस भी ली।

उनका असली नाम 'अगनेस गोंझा बोयाजिजू' था। अलबेनियन भाषा में गोंझा का अर्थ फूलों की कली होता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि मदर टेरेसा एक ऐसी कली थीं जिन्होंने छोटी-सी उम्र में ही गरीबों, दरिद्रों और असहायों की जिन्दगी में प्यार की खुशबू भर दी थी।

मदर टेरेसा का जन्म 26 अगस्त, 1910 को स्कॉप्जे (अब मसेदोनिया में) में हुआ। उनके पिता निकोला बोयाजू एक साधारण व्यवसायी थे। जब वह मात्र आठ साल की थीं तभी उनके पिता परलोक सिधार गए, जिसके बाद उनके लालन-पालन की सारी जिम्मेदारी उनकी माता द्राना बोयाजू के ऊपर आ गयी। वह पांच भाई-बहनों में सबसे छोटी थीं। उनके जन्म के समय उनकी बड़ी बहन की उम्र 7 साल और भाई की उम्र 2 साल थी, बाकी दो बच्चे बचपन में ही गुजर गए थे। वह एक सुन्दर, अध्ययनशील एवं परिश्रमी लड़की थीं। पढ़ाई के साथ-साथ, गाना, गाना उन्हें बेहद पसंद था। वह और उनकी बहन पास के गिरजाघर में मुख्य गायिका थीं। जब वह 12 साल की थी तभी उनको यह एहसास हो गया कि उनका जीवन कोई साधारण जीवन नहीं है उनका जीवन दूसरों की भलाई करने के लिए ही बना है, इसलिए उन्होंने तभी फैसला लिया था कि मुझे नन बनना है लेकिन फिर भी उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद ही नन बनना चाहा।

खूबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते।
अच्छे लोग हमेशा खूबसूरत होते हैं।।

ऐसा मानना था मदर टेरेसा का उनका कहना था कि वह हमेशा खुश रहे और दूसरों को खुश रखें। जब मदर टेरेसा ने यह फैसला लिया कि उनको नन बनना है तो उन्होंने अपनी माँ को यह फैसला सुनाया उनकी बातें सुनते ही उनकी माँ के पैरों तले से मानों जमीन ही खिसक गई। वह बहुत दुखी हुई। उन्होंने अपनी बेटी को समझाया क्यों बेटी अगर तुम्हें गरीबों की निस्वार्थ भाव से सेवा करनी है तो तुमको नन ही क्यों बनना है... तुम इसको ऐसे भी कर सकती हो क्योंकि वह जानती थी कि एक बार नन बन जाने के बाद वह अपनी बेटी से कभी नहीं मिल पाएंगी। वह कभी अपने घर भी नहीं आ पाएगी। इसलिए उनकी माँ ने उनको बहुत समझाया लेकिन मदर टेरेसा ने उनकी एक बात नहीं सुनी। उन्होंने कहा नहीं माँ मुझे जाने दो, मेरा जीवन कोई साधारण जीवन नहीं है मेरा जीवन दूसरों के परोपकार के लिए ही बना है। तब मदर टेरेसा की माँ बहुत दुखी हुई और रोते-रोते भगवान के पास गयी। उन्होंने भगवान को सब बताया। हे भगवान! मैं क्या करूं मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा हैं मैं क्या करूं? तभी एक आकाशवाणी हुई और आवाज़ आयी की उसे जाने दो उसका जीवन ही दूसरों की सेवा के लिए बना हुआ है। तब उनकी माँ ने उनको हंसते-हंसते विदा किया। 18 साल की उम्र में उन्होंने 'सिस्टर्स ऑफ़ लोरेटो' में शामिल होने का फैसला ले लिया। तत्पश्चात वह आयरलैंड गयी जहाँ उन्होंने अंग्रेजी भाषा सीखी। अंग्रेजी सीखना इसलिए जरुरी था क्योंकि 'लोरेंटो' की सिस्टर्स इसी माध्यम से बच्चों को भारत में पढ़ाती थीं।

सिस्टर टेरेसा आयरलैंड से 6 जनवरी, 1929 को कोलकाता में 'लोरेंटो कॉन्वेंट' पंहुचीं। वह एक अनुशासित शिक्षिका थीं और विद्यार्थी उनसे बहुत स्नेह करते थे। वर्ष 1944 में वह हेडमिस्ट्रेस बन गईं। उनका मन शिक्षण में पूरी तरह रम गया था पर उनके आस-पास फैली गरीबी, दरिद्रता और लाचारी उनके मन को बहुत अशांत करती थी। 1943 के अकाल से शहर में बड़ी संख्या में मौते हुईं और लोग गरीबी से बेहाल हो गए। 1946 के हिन्दू-मुस्लिम दंगों ने तो कोलकाता शहर की स्थिति और भयावह बना दी।

क्या आप जानते हैं मदर टेरेसा को मदर टेरेसा के नाम से क्यों जाना जाता है? जब मदर टेरेसा को नन बनने की ट्रेनिंग के लिए भेजा गया, तो वहाँ उनकी ट्रेनिंग पूरी होने के

बाद उनसे पूछा गया कि आप अपने फेवरेट नन (संत) को चुनिए, तब उन्होंने टेरेसा चुना। तभी से हर जरूरतमंद की सेवा करने लगी और किसी की माँ बनी जिसका इस दुनिया में कोई नहीं था और जो बेसराहा थे। तभी से उनको मदर टेरेसा के नाम से जाना जाने लगा।

वर्ष 1946 में उन्होंने गरीबों, असहायों, बीमारों और लाचारों की जीवनपर्यांत मदद करने का मन बना लिया। इसके बाद मदर टेरेसा ने पटना के होली फैमिली हॉस्पिटल से आवश्यक नर्सिंग ट्रेनिंग पूरी की और 1948 में वापस कोलकाता आ गईं और वहाँ से पहली बार तालतला गई, जहाँ वह गरीब बुजुर्गों की देखभाल करने वाली संस्था के साथ रहीं। उन्होंने मरीजों के घावों को धोया, उनकी मरहमपट्टी की और उनको दवाइयाँ दीं।

7 अक्टूबर 1950 को उन्हें वैटिकन से 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की स्थापना की अनुमति मिल गयी। इस संस्था का उद्देश्य भूखों, निर्वस्त्र, बेघर, लंगड़े-लूले, अंधों, चर्म रोग से ग्रसित और ऐसे लोगों की सहायता करना था जिनके लिए समाज में कोई जगह नहीं थी। 'मिशनरीज ऑफ़ चैरिटी' का आरम्भ मात्र 13 लोगों के साथ हुआ था पर मदर टेरेसा की मृत्यु के समय (1997) 4 हजार से भी ज्यादा 'सिस्टर्स' दुनियाभर में असहाय, बेसहारा, शरणार्थी, अंधे, बूढ़े, गरीब, बेघर, शराबी, एड्स के मरीज और प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों की सेवा कर रही हैं।

मदर टेरेसा ने 'निर्मल हृदय' और 'निर्मला शिशु भवन' के नाम से आश्रम खोलें। 'निर्मल हृदय' का ध्येय असाध्य बीमारी से पीड़ित रोगियों व गरीबों का सेवा करना था, जिन्हें समाज ने बाहर निकाल दिया हो। निर्मला शिशु भवन की स्थापना अनाथ और बेघर बच्चों की सहायता के लिए हुई। सच्ची लगन और मेहनत से किया गया काम कभी असफल नहीं होता, यह कहावत मदर टेरेसा के साथ सच साबित हुई। जब वह भारत आईं तो उन्होंने यहाँ बेसहारा और विकलांग बच्चों और सड़क के किनारे पड़े असहाय रोगियों की दयनीय स्थिति को अपनी आँखों से देखा। इन सब बातों ने उनके हृदय को इतना द्रवित किया कि वे उनसे मुँह मोड़ने का साहस नहीं कर सकीं। इसके पश्चात उन्होंने जन-सेवा का जो व्रत लिया, जिसका पालन वो अनवरत करती रहीं। उनका ध्येय वाक्य था– If I really want to love we must learn how to forgive.

मदर टेरेसा को मानवता की सेवा के लिए अनेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए। भारत सरकार ने उन्हें पहले पद्मश्री (1962) और बाद में देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' (1980) से अलंकृत किया। संयुक्त राज्य अमेरिका ने उन्हें वर्ष 1985 में मेडल आफ़ फ्रीडम 1985 से नवाजा। मानव कल्याण के लिए किये गए कार्यों की वजह से मदर टेरेसा को 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार मिला। उन्हें यह पुरस्कार ग़रीबों और असहायों की सहायता करने के लिए दिया गया था। मदर टेरेसा ने नॉबेल पुरस्कार की 192,000 डॉलर की धन-राशि को गरीबों के लिए एक फंड के तौर पर इस्तेमाल करने का निर्णय लिया।

बढ़ती उम्र के साथ-साथ उनका स्वास्थ्य भी बिगड़ता गया। वर्ष 1983 में 73 वर्ष की आयु में उन्हें पहली बार दिल का दौरा पड़ा। उस समय मदर टेरेसा रोम में पॉप जॉन पॉल द्वितीय से मिलने के लिए गई थीं। इसके पश्चात वर्ष 1989 में उन्हें दूसरा हृदयाघात आया और उन्हें कृत्रिम पेसमेकर लगाया गया। साल 1991 में मैक्सिको में न्यूमोनिया के बाद उनके हृदय की परेशानी और बढ़ गयी। इसके बाद उनकी सेहत लगातार गिरती रही। 13 मार्च 1997 को उन्होंने 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' के मुखिया का पद छोड़ दिया और 5 सितम्बर, 1997 को उनकी मौत हो गई। उनकी मौत के समय तक 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' में 4000 सिस्टर और 300 अन्य सहयोगी संस्थाएं काम कर रही थीं जो विश्व के 123 देशों में समाज सेवा में कार्यरत थीं। मानव सेवा और गरीबों की देखभाल करने वाली मदर टेरेसा को पोप जॉन पॉल द्वितीय ने 19 अक्टूबर, 2003 को रोम में "धन्य" घोषित किया। ■■

"Even after death, the troubles of the country will not come out of my heart, the smell of the country will come from my soil."

–Bhagat Singh

कर्तव्य

—करुणा प्रजापति

'ले बेटा यह पत्थर उठा और शैतान को मार, तुझे जन्नत नसीब होगी।' ऐसा कहकर रुखसार और महमूद ने सामने खड़े भारतीय सैनिकों की ओर इशारा किया।

देखते-ही-देखते भारतीय सैनिकों पर पत्थरों की बारिश होने लगी, अधिकतर सैनिक घायल होने लगे, लेकिन सेना ने कश्मीरी जनता पर जवाबी कार्यवाही नहीं की। क्योंकि उन्हें ऊपर से इसकी अनुमति नहीं थी, उन्हें केवल जनता की सेवा कर अपनी ड्यूटी निभाना था।

कुछ ही समय में आसमान में काले बादल छा गए, और मूसलाधार वर्षा होने लगी, सभी अपने-अपने घरों की ओर भागने लगे।

लेकिन आज तो राहत की बारिश ने आफत की बारिश का रूप धर लिया। आधे घंटे में ही बाढ़ आ गई।

जिन घरों में जान की सलामती लिए लोग बैठे थे वो घर तिनकों की तरह टूटकर पानी में बहने लगे।

महमूद और रुखसार का घर भी पानी में डूबने लगा। वे अपने घर की छतों की ओर भागे लेकिन उनके छोटे-छोटे बच्चों का हाथ उनके हाथों से छूट गया और बच्चे पानी में बहने लगे। आगे गहरी खाई थी 'या अल्लाह! मेरे बच्चों पर रहम कर।' ऐसा कहकर रुखसार ने ऊपर देखकर आँख बंद कर ली।

अचानक दो सैनिक तेज बहाव वाले पानी में अपनी जान की परवाह किये बगैर कूद गए और बच्चों को सही-सलामत किनारे पर लेकर आ गए।

एक बच्चे ने कहा—'अम्मी देखो ये शैतान नहीं अल्लाह के फ़रिश्ते हैं।'

'हाँ बेटा!' रुखसार की आँखों में आँसू थे।

'आप सभी गाँव वाले हमारे साथ सुरक्षित स्थान पर चलिए।' एक सैनिक ने कहा।

सभी सेना के जवानों के साथ चल दिए।

कुछ दूरी पर चलकर देखा तो नदी को जोड़ने वाला पुल क्षतिग्रस्त हो चुका था। लकड़ी के बने पुल के पटरिये बुरी तरह से उखड़कर पानी में बह गए थे, उस पार जाना जान का जोखिम था। किन्तु समय रहते सबको उस पार पहुँचाना अत्यंत आवश्यक था।

सैनिकों ने आपस में मशवरा किया और एक-एक करके सभी सैनिक जहाँ-जहाँ पटरिये उखड़ रहे थे वहाँ स्वयं लेट गए।

और एक-एक करके सभी गाँव वालों ने आसानी से पुल पार कर लिया।

'जुग-जुग जियो बेटों।'

एक अम्मा ने आशीर्वाद देते हुए सभी सैनिकों को धन्यवाद दिया।

सभी कश्मीरियों ने एक स्वर में कहा—"भारत माता की जय।" ■■

"You must not lose faith in humanity. Humanity is like an ocean; if a few drops of the ocean are dirty, the ocean does not become dirty."

***

"You may never know what results come of your actions, but if you do nothing, there will be no results."

—Mahatma Gandhi

शान्तिनिकेतन एवं होयसला के मंदिर

यूनेस्को विश्व विरासत स्थल या विश्व धरोहर स्थल एक ऐसा स्थल है, जिसे यूनेस्को द्वारा विशेष सांस्कृतिक या भौतिक महत्व के स्थल के रूप में सूचीबद्ध किया जाता है।

प्रबंधनः

विश्व धरोहर स्थलों की सूची का प्रबंधन 'अंतरराष्ट्रीय विश्व धरोहर कार्यक्रम' के तहत किया जाता है, जिसे यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति (UNESCO World Heritage Committee) द्वारा प्रशासित किया जाता है। इस समिति में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा निर्वाचित यूनेस्को के 21 सदस्य देश शामिल होते हैं। वैश्विक अभिसमय वर्ष 1972 में यूनेस्को द्वारा अपनाई गई एक अंतरराष्ट्रीय संधि में सन्निहित है, जिसे विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत के संरक्षण से संबंधित संधि/अभिसमय के नाम से जाना जाता है।

विश्व धरोहर स्थल सांस्कृतिक, प्राकृतिक या मिश्रित हो सकते हैं। सांस्कृतिक स्थलों में प्राचीन खंडहर, ऐतिहासिक स्मारक और धार्मिक इमारत जैसी चीज शामिल हैं। प्राकृतिक स्थलों में राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव शरण और भू-वैज्ञानिक संरचनाएं जैसी चीजें शामिल हैं। मिश्रित स्थलों में ऐसे स्थान शामिल हैं जिनका सांस्कृतिक और प्राकृतिक दोनों महत्व है, जैसे कि– सांस्कृतिक परिदृश्य या महत्वपूर्ण सांस्कृतिक स्थलों के साथ एक राष्ट्रीय उद्यान। विश्व धरोहर स्थल शिक्षा और पर्यटन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे लोगों को विभिन्न संस्कृतियों और प्राकृतिक वातावरण के बारे में जानने और दुनिया की सुंदरता और आश्चर्य का अनुभव कराने के अवसर प्रदान करते हैं।

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची (भारतीय)

20 अगस्त, 2023 तक, दुनिया भर में 1,154 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं, जिनमें 897 सांस्कृतिक, 218 प्राकृतिक और 39 मिश्रित स्थल हैं। इनमें से 40 भारत में हैं, अब इनकी संख्या बढ़कर 42 हो गई है।

क्र.	विश्व धरोहर स्थल	संबंधित राज्य/क्षेत्र	घोषित वर्ष
1.	आगरा का किला	उत्तर प्रदेश	1983
2.	ताजमहल	उत्तर प्रदेश	1983
3.	अजंता की गुफाएं	महाराष्ट्र	1983
4.	एलोरा की गुफाएं	महाराष्ट्र	1983
5.	कोणार्क सूर्य मंदिर	उड़ीसा	1984
6.	महाबलीपुरम के स्मारक	तमिलनाडु	1984
7.	काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान	असम	1985
8.	मानस राष्ट्रीय उद्यान	असम	1985
9.	केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान	राजस्थान	1985
10.	हम्पी के स्मारक समूह	कर्नाटक	1986
11.	खजुराहो के स्मारक समूह	मध्यप्रदेश	1986
12.	फतेहपुर सीकरी	उत्तर प्रदेश	1986
13.	गोवा के गिरिजाघर एवं कॉन्वेंट	गोवा	1986
14.	एलीफेंटा की गुफाएं	महाराष्ट्र	1987
15.	सुंदरवन राष्ट्रीय उद्यान	पश्चिम बंगाल	1987
16.	पट्टादकल के स्मारक समूह	कर्नाटक	1987
17.	चोल मंदिर	तमिलनाडु	1987, 2004
18.	नंदा देवी और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान	उत्तराखंड	1988, 2005
19.	साँची के बौद्ध स्तूप	मध्यप्रदेश	1989
20.	हुमायूं का मकबरा	दिल्ली	1993
21.	कुतुबमीनार एवं उसके स्मारक	दिल्ली	1993
22.	भारतीय पर्वतीय रेलवे, दार्जिलिंग	विभिन्न के भारतीय राज्य	1999, 2005, 2008
23.	बोधगया का महाबोधि मंदिर	बिहार	2002

24. भीमबेटका की गुफाएं	मध्यप्रदेश	2003
25. छत्रपति शिवाजी टर्मिनस	महाराष्ट्र	2004
26. चंपानेर पावागढ़ पुरातत्व उद्यान	गुजरात	2004
27. लाल किला	दिल्ली	2007
28. जंतर-मंतर, जयपुर	राजस्थान	2010
29. पश्चिमी घाट महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल	गोवा, तमिलनाडु,	2012
30. राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग	राजस्थान	2013
31. ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान	हिमालय प्रदेश	2014
32. रानी की वाव	गुजरात	2014
33. नालंदा विश्वविद्यालय	बिहार	2016
34. कंचनजंगा राष्ट्रीय उद्यान	सिक्किम	2016
35. लि. कार्बुजिए के वास्तुशिल्प	चंडीगढ़	2016
36. अहमदाबाद के एतिहासिक शहर	गुजरात	2017
37. मुंबई के विक्टोरियन ओर आर्ट डेको एनसबल	महाराष्ट्र	2018
38. गुलाबी शहर जयपुर	राजस्थान	2019
39. रामप्पा मंदिर	तेलंगाना	2021
40. धोलावीरा	गुजरात	2021
41. शान्तिनिकेतन	बंगाल	2023
42. हलेबिड और सोमनाथपुरा के होयसला मंदिर	कर्नाटक	2023

शान्तिनिकेतन, पश्चमी बंगाल

महर्षि के नाम से प्रसिद्ध देवेन्द्रनाथ टैगोर भारतीय पुनर्जागरण के अग्रणी व्यक्ति थे। महर्षि द्वारा निर्मित संरचनाओं में शान्तिनिकेतन गृह और एक मंदिर था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में निर्मित दोनों संरचनाएं शान्तिनिकेतन की स्थापना और बंगाल तथा भारत में धार्मिक आदर्शों के पुनरुद्धार और पुनर्व्याख्या से जुड़ी सार्वभौमिक भावना के साथ अपने संबंध में महत्वपूर्ण हैं। पश्चिम बंगाल में 'लाल माटी के देश' के नाम से मशहूर बीरभूम ज़िले में बसे शान्तिनिकेतन का नाम देश और दुनिया में अनजाना नहीं है। इसे मशहूर बनाया कवि गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर की ओर से स्थापित विश्वभारती विश्वविद्यालय ने। शान्तिनिकेतन का शाब्दिक अर्थ है शांति का निवास यानि वह जगह जहाँ शांति हो। शान्तिनिकेतन का नाम बंगाल के इतिहास और संस्कृति से काफी गहराई से जुड़ा हुआ है। बंगाल के इतिहास और संस्कृति पर कोई भी बहस शांति निकेतन के ज़िक्र के बिना अधूरी ही रहेगी।

वर्ष 1901 में शान्तिनिकेतन में पहली बार एक स्कूल की स्थापना की गई थी। दुनिया भर में मशहूर शान्तिनिकेतन विश्वविद्यालय की स्थापना 1921 में हुई थी। विश्वविद्यालय के संचालन के लिए 1922 में विश्व भारती सोसाइटी का गठन किया गया। कवि गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर ने इसी सोसाइटी को अपनी पूरी संपत्ति दान दे दी थी। वर्ष 1951 में इसे केंद्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिला था। इस शहर की स्थापना कवि गुरु रविन्द्रनाथ के पिता महर्षि देवद्र नाथ टैगोर ने 1863 में की थी। तब उस जगह को भुवनडांगा के नाम से जाना जाता था। उन्होंने उस साल करीब 20 एकड़ जमीन सालाना पांच रुपए की लीज पर ली।

भारत के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक शान्तिनिकेतन में स्थित विश्व भारती में मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, ललित कला, संगीत, मंच कला, शिक्षा, कृषि विज्ञान आदि की पढ़ाई होती है। 1951 में संसद के एक अधिनियम द्वारा इसे केंद्रीय विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया था। विश्व भारती पश्चिम बंगाल का एकमात्र केंद्रीय विश्वविद्यालय है और प्रधानमंत्री इसके कुलाधिपति हैं। शान्तिनिकेतन की स्थापना एक आश्रम के तौर पर गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर (ठाकुर)

शान्तिनिकेतन गृह

के पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर ने 1863 में 7 एकड़ जमीन पर की थी। जहाँ बाद में रविन्द्रनाथ टैगोर ने इस विश्वविद्यालय को स्थापित किया और इसे विज्ञान के साथ कला और संस्कृति की पढ़ाई का उत्कृष्ट केंद्र बनाया। 1901 में केवल 5 छात्रों के साथ गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने इसकी शुरुआत की थी। 1921 में इसे राष्ट्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा मिला और आज यहाँ छह हजार से भी ज्यादा विद्यार्थी अध्ययन करते हैं।

अंतरराष्ट्रीय परामर्श संस्था 'इंटरनेशनल काउंसिल ऑन मॉन्यूमेंट्स एंड साइट्स' (इकोमोस) द्वारा इस ऐतिहासिक स्थल को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल करने की सिफारिश की गई थी। फ्रांस आधारित 'इकोमोस' अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन है, जिसमें पेशेवर, विशेषज्ञ, स्थानीय अधिकारी, कंपनियों और धरोहर संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हैं तथा यह दुनिया के वास्तु शिल्प एवं धरोहर स्थल के संरक्षण और संवर्धन के लिए समर्पित है।

कोलकाता से 160 किमी दूर शान्तिनिकेतन मूल रूप से रविन्द्रनाथ टैगोर के पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर द्वारा बनाया गया एक आश्रम था। जहाँ जाति और पंथ से परे कोई भी, आ सकता था और शिक्षा ले सकता था। भारत के सबसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में से एक शान्तिनिकेतन में स्थित विश्व भारती में मानविकी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, ललित कला, संगीत, प्रदर्शन कला, शिक्षा, कृषि विज्ञान और ग्रामीण पुनर्निर्माण में डिग्री पाठ्यक्रम की पेशकश की जाती है।

यह भारत का ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ आज भी गुरुकुल परंपरा का निर्वाहन किया जाता है। छात्र न सिर्फ पेड़ के नीचे बैठकर शिक्षा प्राप्त करते हैं, बल्कि यहाँ दिन की शुरुआत ही प्रार्थना सभा के साथ होती है। विश्व भारती यूनिवर्सिटी के अलावा और भी कई बातें हैं, जो शान्तिनिकेतन को खास बनाती हैं। छातीमतला शान्तिनिकेतन की सबसे प्रसिद्ध जगहों में से एक है। इसकी स्थापना भी रविन्द्रनाथ टैगोर ने की थी। छातीमतला पेड़ों से घिरी हुई हरी-भरी जगह है जिसकी स्थापना कला, ध्यान और योग जैसी एक्टिविटीज को करने के लिए की गई थी। इस जगह पर बैठकर पेड़ों की ठंडी छांव और सिर्फ-और-सिर्फ पक्षियों के कलरव सुनते हुए आप पूरा दिन बीता सकते हैं।

अगर बोलपुर की पारंपरिक हस्तशिल्प कला को देखना और खरीदारी करनी है तो अमर कुटीर जरूर जाना चाहिए। यह ऐसी जगह है जो आपको शान्तिनिकेतन में होने का वास्तविक अहसास करवाती है। बंगाल की पारंपरिक हैंडीक्राफ्टस, स्थानीय स्तर पर बनायी जाने वाली खाने-पीने की चीज, कपड़े, परिधान, ज्वेलरी और भी काफी कुछ आपको यहाँ मिल जाएगा। शान्तिनिकेतन जाने पर यह जगह मस्ट वीजिट की लिस्ट में आती है। रविन्द्रनाथ टैगोर जिस जगह पर सबसे ज्यादा वक्त बिताते थे, वह है टैगोर हाउस। रविन्द्रनाथ टैगोर के पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने इस भवन को बनवाया था। बंगाल के आर्किटेक्चर में बनी ये बिल्डिंग वाकई खूबसूरत है। ये इमारत काफी बड़ी और इसमें कई कमरे भी हैं। इसी बड़े भवन में कई चित्र और पेटिंग्स हैं।

शान्तिनिकेतन का मुख्य आकर्षण सोनाझुरी या खोवाई हाट है। अगर बंगाल की पारंपरिक संस्कृति को समझना है, लेकिन आपके पास ज्यादा घुमने के लिए समय नहीं है, तो आपको सोनाझुरी हाट देखना चाहिए। सप्ताह में सिर्फ एक दिन ही सोनाझुरी हाट लगती है। इस हाट में ग्रामीण इलाकों से हैंडिक्राफ्ट आर्टिस्ट अपने हाथों से बनाए सामान को बेचते हैं। यहाँ की पेटिंग्स, कपड़ों पर की गयी कलाकारी, बैग्स, ज्वैलरी आपको बहुत पसंद आएंगी। इस हाट में संथाल जन-जाति के लोग डांस और गाते हुए भी दिख जाएंगे। यहाँ खाने-पीने की भी कई अच्छी दुकानें हैं, जहाँ आपको पारंपरिक बंगाली वेज और नॉन-वेज क्वीजीन मिल जाएगा।

होयसला के पवित्र मंदिर समूह - 42

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) ने यूनेस्को द्वारा होयलस राजवंश को धरोहर सूची में शामिल किए जाने की घोषणा के बाद कहा कि कर्नाटक में होयसला राजवंश के 13वीं सदी के खूबसूरत मंदिरों को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है, जिससे भारत में सूची में शामिल ऐसे स्थलों की कुल संख्या 42 हो गई है। इससे एक दिन पहले संगठन ने पश्चिम बंगाल के शान्तिनिकेतन को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल करने की घोषणा की थी।

होयसल एक शक्तिशाली राजवंश था, जिसने 11वीं से 14वीं शताब्दी तक दक्षिणी भारत के अधिकांश हिस्सों पर शासन किया था। होयसला राजाओं को कला के संरक्षण के लिए जाना जाता था और उन्होंने अपने शासन काल के दौरान कई मंदिरों और अन्य धार्मिक संरचनाओं का निर्माण किया। कर्नाटक में 'होयसला के पवित्र मंदिर समूह' बेलूर, हलेबिड और सोमनाथपुरा के होयसला मंदिरों को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है।

12वीं और 13वीं शताब्दी के दौरान निर्मित होयसल के पवित्र पहनावों को यहाँ बेलूर, हैलेबिड और सोमनाथपुरा के तीन घटकों द्वारा दर्शाया गया है। जबकि होयसल मंदिर एक मौलिक द्रविड़ आकृति विज्ञान बनाए रखते हैं, वे मध्य भारत में प्रचलित भूमिजा शैली, उत्तरी और पश्चिमी भारत की नागर परंपराओं और कल्याणी चालुक्यों द्वारा पसंद किए गए कर्नाटक द्रविड़ मोड से पर्याप्त प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

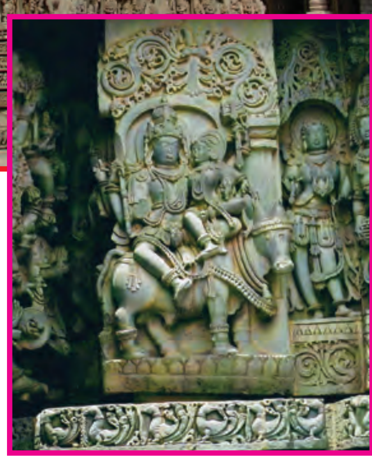

बेलूर में चेन्नाकेशव मंदिर होयसला मंदिरों में सबसे बड़ा और सबसे विस्तृत है। यह हिंदू भगवान विष्णु को समर्पित है, और यह हिंदू पौराणिक कथाओं के देवी-देवताओं और दृश्यों को दर्शाते हुए जटिल नक्काशी में कवर किया गया है। हैलेबिडु में होयसलेश्वर मंदिर एक और प्रभावशाली होयसला मंदिर है। यह हिंदू भगवान शिव को समर्पित है और यह अपनी उत्तम सोपस्टोन नक्काशी के लिए जाना जाता है। सोमनाथपुरा में केशव

मंदिर एक छोटा होयसल मंदिर है, लेकिन यह बेलूर और हैलेबिडु के मंदिरों से कम प्रभावशाली नहीं है। यह अपने सामंजस्यपूर्ण अनुपात और इसकी सुंदर नक्काशी के लिए जाना जाता है।

ये पवित्र स्मारक पश्चिमी घाट की तलहटी में स्थित हैं। इन पवित्र स्मारकों में हिंदू मंदिर, जैन मंदिर, गौण संरचनाएं, जटिल मूर्तिकला और प्रतिमाएं एवं मंदिर, नृत्य तथा संगीत से जुड़ी कलाकृतियाँ शामिल हैं। ये स्मारक वैष्णव, शैव और जैन धर्म के आध्यात्मिक विश्वासों के विकास में महत्वपूर्ण अभिकारक हैं। चेन्नाकेशव मंदिर (बेलूर) और होयसलेश्वर मंदिर (हलेबिड) को होयसला कला की उत्कृष्ट कृतियाँ माना जाता है।

होयसला स्थापत्य कला में नागर और द्रविड़, दोनों शैलियों की विशेषताएं पायी जाती हैं। होयसला स्थापत्य के सबसे उल्लेखनीय उदाहरण तारे के आकार में निर्मित भव्य नक्काशीदार पाषाण मंदिर हैं। मंदिर आमतौर पर एक ऊँचे चबूतरे पर बनाए गए हैं, जिसे "जगती' कहा जाता है। यह भक्तों को मंदिर की परिक्रमा करने के लिए एक मार्ग प्रदान करता है। होयसला मंदिरों में खुले और बंद, दोनों प्रकार के मंडप पाए जाते हैं। इन संरचनाओं में आमतौर पर कल्याणी या सीढ़ीदार कुएँ पाए जाते हैं।

–प्रस्तुति : द साइलेंट स्ट्रोक

■■

VOICES TOWARDS the Threats to DEMOCRACY

Dr. Jyotsna Sharma
Vaishali, Ghaziabad

No one is born a good citizen, no nation is born a democracy. Rather, both are processes that continue to evolve over a lifetime. Young people must be included from birth.1

-Kofi Annan-

The word democracy comes from the Greek words "demos", meaning people, and "kratos" meaning power; so democracy can be thought of as "power of the people": a way of governing which depends on the will of the people.

There are so many different models of democratic government around the

world that it is to their "will". In simple words, "Democracy can be understood that it is a system in which power lies in the hands of people." It may be direct or through elective representatives. It withholds the principles of equality, protection of individual rights, and most important fair election. Democracy has many strengths but it also faces various threats that weaken the system of democracy. In democracy, the people are the true authority and enjoy the right of choosing their leaders through voting and participate in decision-making processes. The rules of law made equally for citizens and those who are in power. The beauty of democracy is lies in regular election which gives opportunity to people to exercise their right by choosing their representatives for a fixed term which brings transparency in the system. Different representatives from political parties represent the voice of people and they can present the perspective of diverse citizens.

The idea of democracy derives its moral strength – and popular appeal – from two key principles:

1. Individual autonomy: The idea that no-one should be subject to rules which have been imposed by others. People should be able to control their own lives (within reason).

2. Equality: The idea that everyone should have the same opportunity to influence the decisions that affect people in society.2

Threats to Democracy

Moving forward, if there is characteristics of democracy then it is also true that treats to democracy also exist like manipulation of election through misleading information, luring voter or interference from foreign countries.

Voice of Scholar across the Globe

Dan Gillmor says Governments (and their corporate partners) are broadly using technology to create a surveillance state, and what amounts to law by unaccountable black-box algorithm, far beyond anything Orwell imagined. But this can only happen in a society that can't be bothered to protect liberty – or is easily led/stampeded into relinquishing it – and that is happening in more and more of the Western democracies.3

Leah Lievrouw, professor of information studies at the University of California-Los Angeles, wrote, "To date, virtually no democratic state or system has sorted out how to deal with this challenge to the fundamental legitimacy of democratic processes, and my guess is that only a deep and destabilizing crisis (perhaps growing out of the rise of authoritarian, ethnic or cultural nationalism) will prompt a serious response.4

Miguel Moreno, professor of philosophy at the University of Granada, Spain, an expert in ethics, epistemology and technology, commented, "There is a clear risk of bias, manipulation, abusive surveillance and authoritarian control over social networks, the internet and any uncensored citizen expression platform, by private or state actors. There are initiatives promoted by state actors to isolate themselves from a common internet and reduce the vulnerability of critical infrastructures to cyber attacks. This has serious democratic and civic implications. In countries with technological capacity and a highly centralized political structure, favorable conditions exist to obtain partisan advantages by limiting social contestation, freedom of expression and eroding civil rights."5

Robert Epstein, senior research psychologist at the American Institute for Behavioral Research and Technology, said, "As of 2015, the outcomes of upward of 25 of the national elections in the world were being determined by Google's search engine. Democracy as originally conceived cannot survive Big Tech as currently empowered. If authorities do not act to curtail the power of Big Tech companies – Google, Facebook and similar companies that might emerge in coming years – in 2030, democracy might look very much as it does now to the average citizen, but citizens will no longer have much say in who wins elections and how democracies are run. My research – dozens of randomized, controlled experiments involving tens of thousands of participants and five national elections – shows that Google search results alone can easily shift more than 20% of undecided voters – up to 80% in some demographic groups – without people knowing and without leaving a paper trail (see my paper on the search engine manipulation effect). I've also shown that search suggestions can turn a 50/50 split among undecided voters into a 90/10 split – again, without people knowing they have been influenced. The content of answer boxes can increase the impact of the search engine manipulation effect by an additional 10% to 30%. I've identified about a dozen largely subliminal effects like these and am currently studying and quantifying seven of them. I've also shown that the 'Go Vote' prompt that Google posted on its home page on Election Day in 2018 gave one political party at least 800,000 more votes than went to the opposing party – possibly far more if the prompt had been targeted to the favored party."6

Lokman Tsui, professor at the School of Journalism and Communication of The Chinese University of Hong Kong, formerly Google's Head of Free Expression in Asia and the Pacific, said, "The political economy of new technologies that are on the horizon leaves me with many concerns for how they will impact democracy and its institutions. First, many of the new technologies, including artificial intelligence, machine learning and big data, are closed and centralized in nature. Unlike the open web before it, these technologies are closed and centralized, both in terms of technical design and also in terms of business model. The technology can indeed be used to improve democratic institutions and processes, but it will be hard and there will be many obstacles to overcome. Second, the new technologies are not only not helping democracies, but they, by their design, are also helping and strengthening non-democracies to further censorship and surveillance. While there are also technologies to counteract these tendencies, the balance tends to tip (heavily) in favor of the other side. Third, I'm concerned there is a global rat race toward the bottom when it comes to the collection of (personal) data, which has the potential to enable the suppression of many other rights."7

According to Michael J. Abramowitz the following Key findings throw light on diminishing democracy:-

- Democracy faced its most serious crisis in decades in 2017 as its basic tenets—including guarantees of free and fair elections, the rights of minorities, freedom of the press, and the rule of law—came under attack around the world.
- Seventy-one countries suffered net declines in political rights and civil liberties,

with only 35 registering gains. This marked the 12th consecutive year of decline in global freedom.

• The United States retreated from its traditional role as both a champion and an exemplar of democracy amid an accelerating decline in American political rights and civil liberties.

Over the period since the 12-year global slide began in 2006, 113 countries have seen a net decline, and only 62 have experienced a net improvement.

Democracy is in crisis. The values it embodies—particularly the right to choose leaders in free and fair elections, freedom of the press, and the rule of law—are under assault and in retreat globally.

A quarter-century ago, at the end of the Cold War, it appeared that totalitarianism had at last been vanquished and liberal democracy had won the great ideological battle of the 20th century.

Today, it is democracy that finds itself battered and weakened. For the 12th consecutive year, according to Freedom in the World, countries that suffered democratic setbacks outnumbered those that registered gains. States that a decade ago seemed like promising success stories—Turkey and Hungary, for example—are sliding into authoritarian rule. The military in Myanmar, which began a limited democratic opening in 2010, executed a shocking campaign of ethnic cleansing in 2017 and rebuffed international criticism of its actions. Meanwhile, the world's most powerful democracies are mired in seemingly intractable problems at home, including social and economic disparities, partisan fragmentation, terrorist attacks, and an influx of refugees that has strained alliances and increased fears of the "other."8

Covid-19 Affect Democracy

It is true that even before the COVID-19 pandemic, democracies, and indeed, other forms of governance faced significant challenges in adapting to the dramatic changes of the past two decades. If many democratic systems were performing better in the eyes of their citizens, particularly on the central issues of opportunity, equality, and identity, their legitimacy would be greater and their institutions better placed to tackle the crisis. In the aftermath of the current crisis, the performance of different forms of governance will be assessed and compared. As of this writing, it is too early to tell how democracy will fare. Nevertheless, we hold the position, based both on principle and on the evidence of long historical experience, that liberal democracy as a system of governance is fundamentally superior to non-democratic systems in at least three important ways:

VALUES – The rule of law, freedom of speech, expression, and association, respect for diversity, and other democratic values are essential features of healthy societies.

PROCESS – Democratic processes and institutions, including universal access to the ballot, representative legislative bodies, independent judiciaries, the free press, and an open public square, all enable a more transparent and inclusive political system that is both necessarily deliberative and, ultimately, more effective than authoritarian regimes.

OUTCOMES – Democratic systems produce prosperity that is, on aggregate, greater and more widely shared across society. They are also more peaceful, both internally and externally, amongst each other.

All three axes are increasingly, and often falsely, being called into question. Whether drawing strength from internal weakness or rising inequality, stoked by white nationalists or internet trolls, or emboldened by Russian meddling in political affairs or by the Chinese model of governance, the adversaries of democracy appear to be on the march.

Rural and industrial areas, once the heartland of thriving manufacturing and agricultural economies, have been hit particularly hard by a combination of globalization and technological as well as demographic change. This period experienced rising unauthorized immigration across the West, with estimates in Europe reaching as high as 4.8 million and 10.7 million in the United States.14 Seemingly uncontrolled migration, from the perspective of critics, during a period when the fortunes of the middle and working classes are stagnating, has helped give rise to anxiety and resentment toward both the migrants and the governments who have failed to control their borders. These economic, social, and civic tensions and dislocations have proven fertile grounds on which populists on the left and right have sown the politics of hate, identity, and division that has led to an ever-increasing polarization of the democratic debate in many of the mature democracies. Since the Global Financial Crisis over a decade ago, these tensions have become more acute and politics ever more polarized. The embrace of austerity politics by the Right and an anti-austerity agenda by the Left has compounded the polarization of political debate. Policymakers have exacerbated the divide by failing to come up with new ideas for addressing the challenges of 21st-century digital capitalism. A search for these new ideas is needed now more than ever.

We need to renew the legitimacy of democracy and rebuild our civic architecture, and, in so doing, become a more resilient society both nationally and globally. Indeed, the challenges of the times demand it, and citizens are already pioneering new solutions in line with those aims, solutions that can be learned from, complemented, and scaled.9

Building a new form of citizen-engaged democracy will require a series of adaptations

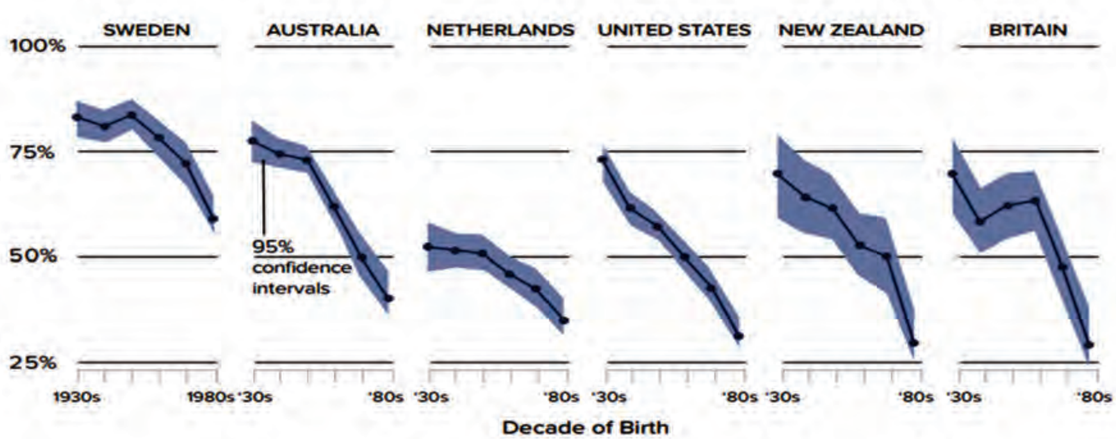

Source: Yascha Mounk and Roberto Stefan Foa, "The Signs of Democratic Deconsolidation," Journal of Democracy | By *The New York Times*

to the current order to create new opportunities for participation and deliberation, to upskill citizens, to restore social cohesion, and to renovate the public square for the Digital Age. The recommendations outlined above are illustrative initiatives, highlighting how those who wish to see liberal democratic values prevail and democratic institutions adapt might advocate for reform.

CONCLUSION

Democracies across the world are operating in a very different environment from the world in which they first emerged. Powerful non-state actors and hyper-connected networks are operating with deterministic effect beyond the reach of governments. The emergence of a large, unregulated digital commons is providing new tools for manipulation and propaganda by nefarious forces hostile to democratic values. The customized media marketplace, combined with the hostile dialogue on which social media thrives, is robbing societies of a shared narrative and is deepening political divisions.

The apparatus of democracy needs to be updated for the 21st century in order to preserve democratic values and the rule of law. Technology and globalization have driven significant changes in society and the economy, which are not reflected in our institutions. Our challenges are global, but government is national or local. Power is increasingly in networks, but our institutions are still islands of hierarchy. As technology has created opportunities for connection and participation, social and cultural expectations have shifted in this direction, but our institutions have been slow to adopt new models for engagement. Institutions must operate with the transparency and responsiveness that citizens have come to expect while also proving competent to govern. In addition, the public square must be renewed to support the informed, civil deliberation a democracy requires. The Future of Democracy program will bring together thoughtful leaders and leading thinkers to re-imagine democracy for the new era.

Reference:

1. https://www.coe.int/en/web/compass/democracy

2. Ibid.

3. Dan Gillmor(2020). Concerns about democracy in the digital age. Report published on 21 Feburary, 2020 by Pew Research Center.

4. Leah Lievrouw(2020).ibid.

5. Miguel Moreno(2020) .ibid.

6. Robert Epstein(2020) .ibid.

7. Lokman Tsui(2020) .ibid.

8. Abramowitz, Michael J.(2028). Freedom in the world. Democracy in Crises. Report, 2018.

9. https://www.berggruen.org/work/the-future-of-democracy.

"Every new experience brings its own maturity and a greater clarity of vision.

***

"Forgiveness is a virtue of the brave."

—Indira Gandhi

खुदकुशी का कारण क्षणिक आवेश

—प्रस्तुति : द साइलेंट स्ट्रोक

विश्व में बढ़ती आत्महत्या से बचाव के लिए हर साल 10 सितंबर को दुनिया भर में विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस (World Suicide Prevention Day) मनाया जाता है, इसकी शुरूआत वर्ष 2003 में इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर सुसाइड प्रीवेशन (IASP) ने वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइजेशन (WHO) और वर्ल्ड फेडरेशन फॉर मेंटल हेल्थ (WFMH) के साथ मिलकर की थी। वर्ष 2003 में इंग्लैंड के एक छोटे-से गांव के एक पादरी ने सुसाइड को रोकने के लिए जिस आंदोलन की शुरुआत की थी वह आज एक विश्व अभियान का रूप ले चुका है। वर्ल्ड सुसाइड प्रीवेशन डे मनाने का मुख्य उद्देश्य आत्महत्या के बारे में जागरूकता बढ़ाना और वैश्विक स्तर पर सुसाइड और इसके प्रयासों की संख्या को कम करना है। इसके साथ ही इसे रोकने के लिए निवारक उपायों को बढ़ावा देना भी इसका मकसद है। हर साल वर्ल्ड सुसाइड प्रीवेशन डे एक खास विषय पर आधारित होता है, संगठन ने 2021-2023 के कार्यक्रम की थीम "क्रिएटिंग होप एक्शन" घोषित की है। इसलिए इस साल विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस 2022 की थीम 'कार्रवाई के माध्यम से आशा पैदा करना' (Creating Hope Through ction) है। इससे पहले 2018, 2019 और 2020 की थीम आत्महत्या को रोकने के लिए एक साथ काम करना (Working Together to Prevent Suicide) थी।

विश्व में सामूहिक आत्महत्या

विश्व में सबसे दर्दनाक सामूहिक आत्महत्या की घटना 40 वर्ष पूर्व जोन्सटाउन में हुई थी। दक्षिण अमेरिका के गुयाना के जोन्सटाउन में एक पीपल्स टेम्पल (लोगों का मंदिर) बनाया गया। वर्ष 1978 में एक ही साथ 913 लोग जहरीले जूस पीने से मारे गए थे। इनमें 276 बच्चे थे। वर्ष 1994 में सोलर टेम्पल नाम के समूह से जुड़े 48 लोगों ने स्विटजरलैंड में आत्महत्या कर ली थी। यह समूह दावा करता था कि वे धरती की त्रासदियों से तंग आकर नए ग्रह पर जा रहे हैं। मार्च 1997 में कैलिफोर्निया में 39 लोगों ने एक ही तरह के कपड़े और जूते पहनकर आत्महत्या कर ली थी। ये लोग हैवेन्स गेट नाम के समूह से जुड़े थे, जो यूएफओ में विश्वास करता था।

दूसरे विश्वयुद्ध खत्म होने के समय जर्मनी के डेमिन में कई सौ लोगों ने आत्महत्या कर ली थी। उन्हें डर था कि पकड़े जाने पर सोवियत रेड आर्मी उन्हें प्रताड़ित करेगी और मार देगी। आत्महत्या करने वालों की संख्या 700 से 1000 के बीच थी। वर्ष 2000 में यूगांडा के मूवमेंट फॉर द रिस्टोरेशन ऑफ द टेन कमांडट्स नाम की धार्मिक संस्था से जुड़े 778 लोगों ने आत्महत्या कर ली थी। दिल्ली के एक घर में एक साथ 11 लाशें मिली थीं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन

विश्व में आत्महत्या के प्रमुख कारणों में से एक है- हर साल एचआईवी, मलेरिया या युद्ध और हत्या से अधिक लोग आत्महत्या के परिणामस्वरूप मरते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के अनुसार, वर्ष 2022 में दुनिया का हर आठवां व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में मानसिक विकार से ग्रसित है। कोरोना महामारी के बाद मानसिक रूप से अस्वस्थ लोगों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व में आत्महत्याओं को लेकर एक रिपोर्ट प्रकाशित की थी। इसके अनुसार दुनिया में लगभग 10 लाख लोग हर साल आत्महत्या करते है अर्थात प्रत्येक 40 सैकेंड में एक व्यक्ति आत्महत्या करता है। इनमें सबसे चिंताजनक बात यह है कि एक तिहाई आत्महत्याएं भारत में होती हैं। इस प्रकार भारत में आत्महत्या एक महामारी बन गया है।

आत्महत्या की प्रवृति महिलाओं की तुलना में पुरुषों में अधिक है। खासतौर पर विकसित देशों में पुरुषों की आत्महत्या दर महिलाओं से तीन गुना अधिक है। पर विकासशील देशों में

महिलाओं में आत्महत्या की प्रवृत्ति अधिक है। गरीब देशों में महिलाओं पर उनकी इच्छा के विरुद्ध शादी का दबाव होता है, जिसके कारण वे ऐसे कदम उठाती हैं। जापान में वैश्विक स्तर पर आए वित्तीय संकट के कारण वहाँ के पुरुषों में आत्महत्या की प्रवृत्ति अधिक है।

भारत में आत्महत्या के कारण

एनसीबीआर की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2021 में भारत के 1.64 लाख से ज्यादा लोग आत्महत्या करने को मज़बूर हुए। आत्महत्या करने वालों में लगभग 1.19 लाख पुरुष, 45026 महिलाएं और 28 ट्रांसजेंडर थे। इनमें सबसे ज्यादा युवा शामिल थे। वर्ष 2021 में आत्महत्या करने वालों की संख्या, वर्ष 2020 के मुकाबले 7.2 फिसदी अधिक है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार पिछले 10 वर्षों में आत्महत्या के मामलों में 17.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार देश में प्रति एक लाख जनसंख्या पर केवल 0.301 प्रतिशत साइकेट्रिस्ट व 0.047 साइकोलॉजिस्ट उपलब्ध हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार यदि सही काउंसलिंग की जाए तो इसमें 60 प्रतिशत कमी लाई जा सकती है। विश्व प्रतिष्ठित मेडिकल पत्रिका के अनुसार भारत में आत्महत्या की दर विश्व में सबसे अधिक है, सबसे ज्यादा आत्महत्या के मामले 15-29 वर्ष की आयु वर्ग के होते हैं।

आत्महत्यात्मक व्यवहार में अवसाद, खंडित मानसिकता और अन्य मनोरोगों सहित अनेक भावनात्मक उद्वेलन शामिल होते हैं। सभी आत्महत्याओं में 90 प्रतिशत से अधिक मामले भावनात्मक या मनोवैज्ञानिक बीमारियों से जुड़े होते हैं। व्यक्ति में सामाजिक विलगाव, किसी प्रिय की मृत्यु, भावनात्मक द्वंद्व, गंभीर शारीरिक व्याधियों, बढ़ती आयु, बेरोजगारी या वित्तीय समस्याओं और अपराध बोध, नशे या शराब जैसी लतों की गिरफ्त में होने से उपजी हताशा से अकेलेपन का अहसास होने पर आत्महत्या का कारण बनता है।

आजादी के बाद लोगों की उम्मीद और अपेक्षाएं तेजी से बढ़ी है लेकिन अवसर उतने नहीं बढ़े हैं। जीवन से जो उम्मीद होती हैं और उसमें तथा यथार्थ के बीच का बड़ा फर्क आदमी को अकसर घोर अवसाद और निराशा की ओर ले जाता है। मीडिया से लोगों को आत्महत्या का आइडिया मिलता है। एक अध्ययन के अनुसार 89 प्रतिशत लोगों का मानना है कि मीडिया से आत्महत्या का विचार आया। 71 प्रतिशत लोगों का मानना है कि परिवार में आत्महत्या की हिस्ट्री देखकर ही लोग आत्महत्या की कोशिश करते हैं।

विभिन्न संस्थाओं के अनुसार आत्महत्या की अनेक वजह होती हैं। आमतौर पर इन्हें तीन तरीके से देखा जा सकता है– सामाजिक, आार्थिक व चिकित्सीय। सामाजिक कारणों में रिलेशनशिप, जिसमें अफेयर, एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर व शादीशुदा जिंदगी से संबंधित कारण होता है। इसके अलावा परिवार, मित्रों और जान-पहचान वालों के साथ आने वाली परेशानियों के चलते भी लोग यह कदम उठाते हैं। आर्थिक कारणों में व्यवसाय का डूबना, नौकरी छूटना, आय का साधन न होना, कर्जे जैसी चीज आती हैं। चिकित्सीय कारणों में लाइलाज शारीरिक व मानसिक बीमारी, गहरा डिप्रेशन व बुढ़ापा जैसी अन्य परेशानियाँ आती हैं। रिश्तों में बिखराव और बेरोजगारी आत्महत्या के मुख्य कारण हैं।

स्मार्टफोन ने हमारी जिंदगी को आसान बना दिया है लेकिन जो किशोर स्मार्टफोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक स्क्रीन्स पर अधिक समय बिताते हैं, उनके अवसादग्रस्त होने और उनमें आत्महत्या की प्रवृत्तियाँ दिखाई देने लगी है। डॉक्टरों का कहना है कि सोशल मीडिया खुदकुशी को दोहरे स्तर पर बढ़ा रहा है। एक तो इसके कारण से लोगों का तनाव काफी बढ़ जाता है। दूसरे, लोग यहीं से आत्महत्या के नए-नए तरीके ढूंढते हैं और फिर उन तरीकों का इस्तेमाल करके अपनी जान दे देते हैं। शोधकर्ता यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि परिवार में अगर किसी ने सुसाइड किया है तो उसके आगे की पीढ़ी में सुसाइड करने की प्रवृत्ति कितनी है। यह लगभग 40 प्रतिशत तक का खतरा है कि उनकी आगे की पीढ़ी में भी आत्महत्या की प्रवृत्ति हो।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार आत्महत्या करने वालों में कम आय वाले लोगों की संख्या अधिक है। कुल आत्महत्या के मामलों में दो तिहाई लोग प्रतिवर्ष एक लाख रुपये से कम कमाने वाले वर्ग के थे। इसके अलावा छोटे व्यापारी तथा प्रतिदिन कमाने खाने वाले लोगों में भी आत्महत्या के मामले वर्ष 2021 में बढ़े है। इसके बाद नौकरी करने वाले और छात्रों की संख्या है। देश के उच्च शिक्षा संस्थानों वर्ष 2014 से 2021 तक के दौरान 122 छात्र-छात्राओं ने आत्महत्या की। जिन शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों ने ऐसे कदम उठाए हैं, उनमें आईआईटी, आईआईएम और मेडिकल कॉलेजों जैसे प्रतिष्ठित संस्थान भी शामिल है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार 24,000 से अधिक विद्यार्थियों ने वर्ष 2017-19 के बीच आत्महत्याएं कीं। ये सभी छात्र-छात्राएं 12 से 18 वर्ष तक की आयु के थे। ऐसे कदम उठाने की वजह परीक्षा में फेल होना, तनाव और परिवार की अपेक्षाएं हैं।

समस्या का समाधान कैसे हो?

आत्महत्या करना कानूनन जुर्म है इसलिए आत्महत्या के प्रयास को छिपाने की कोशिश की जाती है, जबकि एक बार आत्महत्या की कोशिश करने वाले व्यक्ति के लिए फिर से कोशिश

करने की आशंका बुहत अधिक होती है। जरूरी है कि कानून और सामाजिक सोच को बदला जाए ताकि जिसमें भी आत्महत्या की प्रवृत्ति या इच्छा उत्पन्न हो वह सहायता के लिए हाथ बढ़ा सके। आत्महत्या करने वाले 90 प्रतिशत लोग मानसिक रूप से बीमार होते हैं और इसका इलाज हो सकता है। यूरोपीय देशों की तरह भारत में भी आत्महत्या रोकथाम नीति बनाई जाए। शिक्षा, रोजगार, समाज कल्याण की योजनाएं चलाकर लोगों की वित्तीय समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट ने सरकारों की सलाह दी है कि आत्महत्या की मीडिया रिपोर्टिंग जिम्मेदाराना तरीके से की जानी चाहिए। खतरनाक अल्कोहल के इस्तेमाल को लेकर नीति बनाई जाए। जिन लोगों ने आत्महत्या का प्रयास किया है, उनकी उचित देखभाल की जाएं। अगर किसी ऐसे व्यक्ति को जिसमें आत्महत्या से पूर्व के लक्षण नजर आए तो उसके आसपास रह रहे लोग व रिश्तेदार इन संकेतों को समझकर अनहोनी को टालने में सहयोग कर सकते हैं। मजाक में भी यदि कोई यह कह कि मरने का मन करता है, जीवन में कुछ नहीं रखा, तो समझ लें उस व्यक्ति को मदद की जरूरत है। उसे कमजोर होने का ताना बिल्कुल न दे। उम्मीद खत्म होने की स्थिति में ही कोई व्यक्ति आत्महत्या जैसा कदम उठाता है। इसलिए जितना संभव हो, पीड़ित की बातों को सुन और समझने का प्रयास करें।

आत्महत्या के विचार आने पर बातचीत किसी मित्र और परिवार के सदस्य से की जा सकती है। कुछ लोगों के लिए अजनबियों से बात करना आसान होता है। डॉक्टर से बात की जा सकती है। कई बार रासायनिक या हार्मोनल असंतुलन के कारण दवा और इलाज की आवश्यकता होती है। आत्महत्या के बचाव के कुछ तरीके इस प्रकार हैं– हमेशा सकारात्मक रहे, अवसाद तथा आत्महत्या के बचाव के लिए तत्पर रहे, तनावपूर्ण स्थितियों में शांत रहे, सकारात्मक वातावरण को प्रोत्साहित करे, सकारात्मक पारिवारिक मानसिक स्वास्थ्य में अभिभावकों तथा परिवार को शामिल करें, पूरी नींद ले, आत्म प्रकटी करण, जैसे डायरी आदि लिखे, ध्यान या योग करें, अपने में विश्वास बनाए रखें।

ऑस्ट्रेलिया पहला देश है, जिसने वर्ष 1995 में आत्महत्या पर अंकुश लगाने के लिए कार्यक्रम शुरू किया। अमेरिका, कनाडा, नार्वे, इंग्लैंड में भी आत्महत्या रोकने के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। भारतीय दंड संहिता की धारा 309 के तहत आत्महत्या की कोशिश करने वाला व्यक्ति अपराधी माना जाता था लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। इसके लिए तनाव की अधिकता सहित पर्याप्त कारण बताने होंगे। अगर उसने किसी को फंसाने के लिए आत्महत्या की कोशिश की है तो उस पर संशोधित अधिनियम में अलग प्रावधान है। नए प्रावधान के अनुसार सरकार पीड़ित व्यक्ति की देखभाल करेगी और उसका इलाज कराएगी तथा उसके पुनर्वास का बंदोबस्त करेगी। गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों के लिए यह व्यवस्था मुफ्त होगी। अब आत्महत्या की कोशिश को अपराध से हटाकर मानसिक बीमारी के तौर पर स्वीकार किया गया है। इस नई व्यवस्था में किसी भी आधार पर भेद नहीं किया जा सकता। सभी जाति, धर्म, लिंग के लोगों पर ये नियम लागू होंगे।

आत्महत्या से पूर्व संकेत

आत्महत्या करने वाला व्यक्ति अक्सर आत्महत्या से पूर्व अपने आसपास के लोगों को कई तरह के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संकेत देते हैं। वह क्राइ फॉर लास्ट हेल्प की तलाश में रहता है। वह चाहता है कि कोई उसकी आखिरी पुकार को सुने और समय रहते यदि उसकी मदद की जाए तो जिंदगी बचाई जा सकती है। आत्महत्या से पूर्व के संकेत हैं– जिंदगी के प्रति अनिच्छा जताना, मरने की बात करना, अचानक बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण कामों को निपटाने का प्रयास करना। लोगों के बीच अचानक गुड़बाय या अलविदा आदि शब्दों का इस्तेमाल करना। अपनी चीजों के प्रति विरक्ति का भाव दिखाना। अपने मनपसंद कामों, रुचियों और मनपसन्द चीजों के प्रति अनिच्छा का भाव दिखाना या उनकी अनदेखी करना। वह अंत तक इंतजार करता है कि कोई अपना उसके दर्द को समझे और उसे संभाल ले। और अंत में व्यक्ति जीवन से हताश होने पर नहीं, बल्कि सही समय पर किसी अपने का सहारा न मिल पाने के कारण आत्मघाती कदम उठा लेता है। यह बात आत्महत्या का प्रयास कर चुके अनेक लोगों ने स्वीकार की है। यदि ऐसे व्यक्ति को समय रहते भावनात्मक संबल मिल जाए तो आत्महत्या से बचाव हो सकता है।

अंत में

खुदकुशी को रोकने की मुहिम में सामाजिक भागीदारी काफी अहम है क्योंकि इसको लेकर हमारे समाज में कलंक, अपमान का बोध बहुत गहरा है। इसी कारण से लोग मदद मांगने आगे नहीं आते। आत्महत्या की रोकथाम के विमर्श में ज्यादा-से-ज्यादा जनभागीदारी से सुखद परिणाम प्राप्त करने की कोशिश होनी चाहिए। आत्महत्या रोकथाम दिवस को बनाने का उद्देश्य तभी सफल हो पाएगा, जब आम व्यक्ति इस विषय में पूरी तरह से जागरूक होगा तथा विभिन्न स्तरों पर किए जा रहे प्रयासों से सार्थक सफलताएँ प्राप्त होंगी।

■■

Release Function

माननीय विधायक, साहिबाबाद श्री सुनील शर्मा, श्री ओ. पी. गौड एवं डॉ. अरुण सिंह

माननीय विधायक, श्री सुनील शर्मा जी को सम्मानित करते हुए युवा नेता श्री इन्दुभूषण त्यागी

मानीय विधायक, श्री सुनील शर्मा जी को सम्मानित करते हुए श्री राकेश शर्मा "निशीथ"

विमोचन समारोह में फोरम के सदस्य

एक्सप्रेस ग्रीन्स सीनियर सिटीजन्स वेलफेयर फोरम की स्मारिका-2023 का विमोचन

एक्सप्रेस ग्रीन्स सीनियर सिटीजन्स वेलफेयर फोरम द्वारा अपनी पहली वर्षगांठ के अवसर पर फोरम की ओर से एक **स्मारिका-2023** का विमोचन **माननीय विधायक, साहिबाबाद श्री सुनील शर्मा** के करकमलों द्वारा दिनांक **10 दिसम्बर, 2023** को एक्सप्रेस ग्रीन्स के कम्युनिटी हॉल में आयोजित एक भव्य समारोह में किया गया। उन्होंने इस स्मारिका के आगे भी अनवरत प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि वरिष्ठ नागरिक ज्ञान का खजाना हैं, उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ है।

इस समारोह में एक्सप्रेस ग्रीन्स की नवनिर्वाचित एओए के सदस्यों का भी सम्मान किया गया। समारोह में माननीय विधायक महोदय के साथ मंच पर फोरम के संरक्षक श्री ओ पी गौड तथा एओए के अध्यक्ष डॉ. अरुण सिंह एवं स्मारिका के प्रकाशक श्री नरेन्द्र त्यागी भी उपस्थित रहे। मंच संचालन श्री राकेश शर्मा "निशीथ" ने किया।

New Arrivals

NARENDRA TYAGI
Publisher
Shabdahuti Prakashan

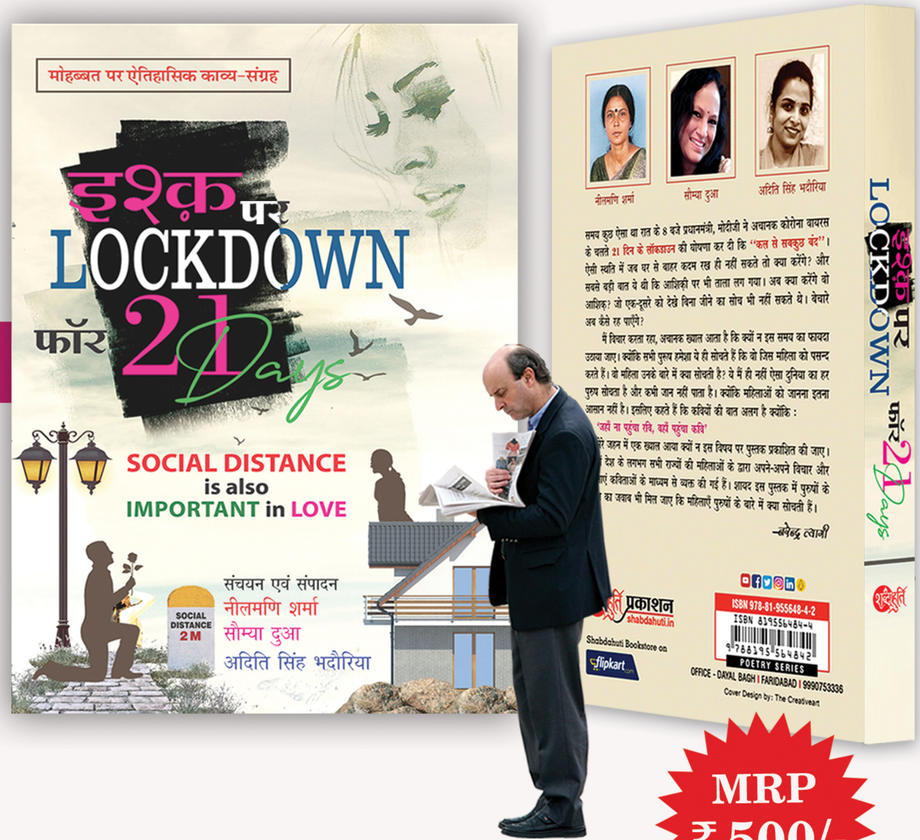

MRP ₹ 500/-

COLLECTION AND EDITING

NEELMANI SHARMA

SAUMYA DUA

ADITI SINGH BHADAURIYA

THE BOOK HAS COME NEWS ABOUT BOOKS

370 धारा
संसद में हंगामा

Under **POLITICAL ANALYSIS SERIES**

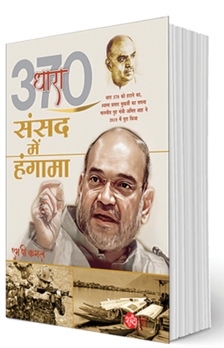

Published by
शब्दाहुति | PRAKASHAN
DAYAL BAGH | FARIDABAD

E-mail : shabdahutiprakashan@gmail.com
Contact us : 9990753336

-30%

MRP ₹ 950

ALL BOOK IS AVAILABLE ON FLIPKART

SHABDAHUTI

Author
M P Kamal

The CREATIVEART
Big ideas, Great results
CONTACT US
NEW DELHI | CONTACT : 9990753336
www.thecreativeart.in